मिट्ठू की कहानियाँ

संकलन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Book Title: Miththu Ki Kahanaiyan (Stories of Parrot)
Cover Page picture : Parrot
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा
2022

Contents

सीरीज़ की भूमिका 5

मिट्ठू की कहानियाँ 7

1 हीरामन की कहानी 9

2 लाल का जन्म 26

3 होशियार तोता 36

4 गुल्लाला शाह 52

5 तोता 113

6 तोता–पहला रूप 126

7 तोता–दूसरा रूप 129

8 तोता जो तीन कहानियाँ सुनाता है 137

9 एक सलाह के लिये एक लाख रुपये 161

10 नीच रानियाँ 165

11 एक राजकुमार जिसको भेड़ बना दिया 198

12 राजा और तोता 217

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

मिट्ठू की कहानियाँ

दुनियाँ में बहुत सारी तरह के पशु पक्षी रहते हैं पर उनमें से कुछ ऐसे हैं जिनको हम घरों में पालते भी हैं जैसे पशुओं में गाय बैल कुत्ता बिल्ली बकरी आदि और पक्षियों में तोता मैना कबूतर आदि। इनमें से तोता और मैना बहुत लोकप्रिय पक्षी हैं। क्योंकि ये बहुत सारे घरों में पाले जाते हैं इसलिये इनका वर्णन लोक कथाओं में भी आता है और उनकी लोक कथाऐं भी बहुत हैं। भारत के अलावा कई और देशों में भी तोता एक पालतू पक्षी है। इस पक्षी की एक खासियत यह भी है कि सिखाने पर यह बात भी करता है और इतना साफ बोलता है कि कभी कभी लोग धोखा खा जाते हैं कि यह आवाज तोते की है या किसी आदमी की। मैना बहुत प्यारा गाती है।

तोते को भारत में मिट्ठू शुक और हीरामन भी कहते हैं। ये कहानियाँ केवल लोक कथाओं में ही नहीं बल्कि पुस्तकों में भी मौजूद हैं। "सात अक्लमन्द मास्टर्स" जो पूर्व और पश्चिम दोनों में बहुत मशहूर है में भी एक ऐसी कथा पायी जाती है।

तोते के ऊपर तो केवल कहानियाँ ही नहीं बल्कि पूरी की पूरी पुस्तक भी पायी जाती है। गोपाल शर्मा का लिखा हुआ "किस्सए तोता मैना" एक बहुत पुराना भारतीय ग्रन्थ है। इसमें एक तोता और एक मैना एक दूसरे को पुरुषों और स्त्रियों की बेवफाइयों की कहानियाँ सुनाते रहते हैं। तोते की कहानियों का एक दूसरा पूरा ग्रन्थ है "शुक सप्तति" जो तोते की कहानियों से भरा हुआ है। शुक माने तोता और सप्तति माने सत्तर याने उसमें तोतों की सत्तर कहानियाँ हैं। यह पुस्तक अपने अरबी और तुर्की नामों से ज़्यादा लोकप्रिय है — "तूती नामे" यानी "तोते की कहानियाँ"। तुर्की वाले रूप में तोता पति और पत्नी की सुलह करवा देता है जबकि उसके फारसी रूपों में तोता वह बताता है जो उसके पीछे घटा होता है और उसके बाद बेवफा पत्नी मारी जाती है।[1]

इटली में कहे सुने जाने रूप "सात अक्लमन्द मास्टर्स"[2] से ली हुई कहानियों के आधार पर नहीं हैं बल्कि "शुक सप्तति" की कहानियों पर आधारित हैं। और इसमें सबसे मजेदार बात यह है कि कहानियों की इस शैली में वे कहानियाँ भी भर दी गयी हैं जो मूल पुस्तक में नहीं हैं।

पर आश्चर्य की बात यह है कि सब ओरिऐन्टल कहानियों का आधार एक ही है कि "पति को अपने काम के सिलसिले में बाहर जाना होता है और जब वह घर में नहीं होता तो उसकी पत्नी किसी अजनबी के साथ होती है। एक तोता जो पति ने घर में छोड़ा हुआ है उसको बार बार कहानियाँ सुना कर उसको अपने प्रेमी से मिलने से रोकता है। वे कहानियाँ इतनी मजेदार होती हैं कि वह अपने प्रेमी से नहीं मिल पाती और फिर उसका पति आ जाता है।

यहाँ हम तोतों की कुछ लोक कथाऐं ऐसी ही दे रहे हैं जिनमें तोते का वर्णन आया है। आशा है कि ये लोक कथाऐं तुम लोगों को सीख देने के अलावा तुम लोगों का भरपूर मनोरंजन भी करेंगी।

---

[1] "Shuk Saptati." Translated in English by B Hale Wortham. Its Hindi translation by Sushma Gupta is available from hindifolktales@gmail.com

[2] "The History of the Seven Wise Masters of Rome". Edited by G. L. Gomme and H. B. Wheatley. London : Printed for the Villon Society. 1885. {PRINTED FROM THE EDITION OF WYNKYN DE WORDE. 1520. Available at https://www.gutenberg.org/files/61182/61182-0.txt]

1 हीरामन की कहानी[3]

एक बार की बात है कि एक बहेलिया[4] था जो जंगली चिड़ियों का शिकार कर के अपना और अपनी पत्नी का पेट भरता था। उसके पास कभी खाने को पूरा नहीं पड़ता था।

एक दिन उसकी पत्नी ने उससे कहा — "प्रिय मैं बताती हूँ कि हम लोगों के पास हमेशा ही खाने की कमी क्यों रहती है। क्योंकि तुम हमेशा ही अपने जाल में पकड़ी सारी चिड़ियें बेच देते हो। जबकि अगर हम जो चिड़ियें तुम पकड़ते हो उनमें से कभी कभी कुछ खा लें तो शायद हमारी किस्मत ज़्यादा अच्छी हो जाये।

मेरी सलाह यह है कि आज तुम जो चिड़ियें पकड़ कर ले कर आओ हम उन सबको बेचेंगे नहीं बल्कि उन्हें खा लेंगे।"

बहेलिया अपनी पत्नी की सलाह से राजी हो गया और चिड़ियें पकड़ने चला गया। वह अपनी पत्नी के साथ अपना चिड़ियाँ पकड़ने वाला जाल ले कर जंगल जंगल घूमा पर सब बेकार। उस दिन इत्तफाक से उससे सूरज डूबने तक एक भी चिड़िया नहीं पकड़ी गयी।

---

[3] The Story of a Hiraman. A folktale from India, Asia. Adapted from the book: "Folk-tales of Bengal", by Lal Behari Dey. London, Macmillan & Co Limited. 1912. 1st ed 1883. 22 Tales. My translation of this book in Hindi has been published by National Book Trust, Delhi, India. 2020.

[4] Translated for the word "Fowler"

बस जब वे नाउम्मीद हो कर घर की तरफ लौट रहे थे तो उन्होंने सुन्दर सा एक हीरामन[5] पकड़ लिया। बहेलिये की पत्नी ने उसको अपने हाथ में ले लिया और उसको चारों तरफ से सहलाते हुए बोली — "ओह यह कितनी छोटी सी चिड़िया है। इस बेचारी में से कितना मॉस निकलेगा। इसको मारने से हमें क्या फायदा।"

हीरामन बोला — "मॉ मुझे मारना नहीं। मुझे तुम राजा के पास ले चलो वहॉ तुमको मुझे उसे बेचने पर बहुत सारे पैसे मिल जायेंगे।"

बहेलिया और उसकी पत्नी तो उस चिड़िया को बोलते सुन कर ही दंग रह गये। उन्होंने चिड़िया से ही पूछा कि वे राजा से उसकी क्या कीमत मॉगें।

हीरामन बोला — "वह तुम मुझ पर छोड़ दो। बस तुम मुझे राजा के पास ले चलो और कहो कि तुम इस चिड़िया को उसे बेचने के लिये ले कर आये हो।

और जब राजा तुमसे मेरी कीमत पूछे तो उससे कहना कि "चिड़िया अपनी कीमत अपने आप ही बतायेगी।" और फिर मैं उसको अपनी बहुत बड़ी कीमत बताऊॅगा।"

[5] A parrot is often called Hiraman (pronounced as Heeraaman) in India. See its picture above.

अगले दिन बहेलिया उस चिड़िया को ले कर राजा के पास गया और वहाँ जा कर बोला कि वह वह चिड़िया बेचने के लिये लाया है। चिड़िया बहुत सुन्दर थी। राजा उसकी सुन्दरता देख कर बहुत खुश हुआ और उसने बहेलिये से पूछा कि वह उसकी क्या कीमत चाहता है।

बहेलिया बोला कि यह चिड़िया अपनी कीमत अपने आप ही बतायेगी। राजा ने कहा एक चिड़िया भला क्या बोल सकती है।

बहेलिया बोला — "आप इस चिड़िया से ही इसकी कीमत पूछ कर तो देखिये न।"

राजा ने कुछ मजाक में और कुछ गम्भीरता से उस चिड़िया से कहा — "तो हीरामन बोलो तुम्हारी कीमत क्या है।"

हीरामन बोला — "योर मैजेस्टी, मेरी कीमत केवल दस हजार रुपये है। आप यह न सोचें कि यह कीमत बहुत ज़्यादा है आप बस यह पैसे गिन कर इस बहेलिये को दे दें क्योंकि मैं आपके बहुत काम आने वाला हूँ।"

राजा ने फिर हँस कर पूछा — "तुम मेरे किस काम आने वाले हो हीरामन?"

हीरामन बोला — "यह तो हुजूर समय आने पर ही देख पायेंगे।"

राजा तो पहले ही हीरामन को बोलते सुन कर बहुत प्रभावित हो चुका था और केवल बोलते हुए ही नहीं बल्कि ढंग से और

होशियारी से बोलते हुए सुन कर तो वह उससे और भी ज़्यादा प्रभावित हो गया।

सो उसने अपने शाही खजांची से दस हजार रुपये निकलवा कर उस बहेलिये को दिलवा कर उससे हीरामन खरीद लिया। बहेलिया उतने पैसे ले कर खुशी खुशी घर चला गया।

राजा की छह रानियाँ थीं पर राजा को वह चिड़िया इतनी अच्छी लगी कि वह यह भूल ही गया कि उसकी रानियाँ भी महल में रहती थीं। उसके दिन और रात तो बस अब हीरामन के साथ ही बीतने लगे न कि अपनी रानियों के साथ।

राजा जो भी सवाल हीरामन से पूछता हीरामन उसकी बातों का न केवल इतनी अक्लमन्दी से जवाब देता था कि राजा उससे बहुत खुश होता बल्कि वह तैंतीस करोड़ देवताओं[6] के नाम भी उसको गा कर सुनाता। और इनके नाम सुनना तो बहुत ही पुन्य का काम था।

रानियों को लगा कि राजा तो उनसे अब बात ही नहीं करता वह केवल हीरामन से ही बात करता है सो वे उस चिड़िया से जलने लगीं। उन्होंने तय किया कि वे उसको मार देंगीं।

काफी समय बाद उनको उसको मारने का मौका मिला क्योंकि राजा हमेशा ही उसको अपने साथ रखता था।

---

[6] Names of 33 Crores (33,00,00,000), or 330 million Hindu gods. Hindus believe in 330 million gods. Heeraaman could recite the names of all the gods.

एक दिन राजा शिकार के लिये गया और उसको वहाँ महल से दो दिन के लिये बाहर रहना था सो छहों रानियों ने इस मौके का फायदा उठाने का और उसको मारने का निश्चय किया।

उन्होंने आपस में बात की — "चलो चल कर उस चिड़िया से यह पूछते हैं कि हममें से सबसे बदसूरत कौन है। और जिस रानी को भी वह चिड़िया बदसूरत बतायेगी वही उसको गला घोट कर मार देगी।"

ऐसा सोच कर वे उस कमरे में गयीं जिसमें हीरामन था पर इससे पहले कि वे उससे कोई सवाल पूछतीं उसने बहुत ही मीठी और भक्ति भरी आवाज में तैंतीस करोड़ देवताओं के नाम बोलने शुरू कर दिये।

वे नाम सुन कर उनका दिल उसके लिये बहुत नम्र हो गया और वे बिना अपना काम पूरा किये वहाँ से चली आयीं।

पर अगले दिन उनकी बुरी अक्ल ने फिर से काम किया और उन्होंने अपने आपको हजार गालियाँ दीं कि उसके देवताओं के नाम बोलने ने उनका ध्यान उनके काम से क्यों बँटा दिया।

सो उस दिन उन्होंने सोचा कि आज वे अपना दिल लोहे की तरह से मजबूत रखेंगी और उस चिड़िया पर बिल्कुल भी दया नहीं दिखायेंगी। उस दिन वह उसको जल्दी से जल्दी भी मार देंगी।

ऐसा सोच कर वे फिर उसके कमरे में जा पहुँचीं और उससे बोलीं — "हीरामन, तुम एक बहुत ही अक्लमन्द चिड़िया हो और

तुम्हारा फैसला भी ठीक होता है। तुम हमें यह बताओ कि हममें से कौन सी रानी सबसे सुन्दर है और कौन सी रानी सबसे बदसूरत।"

हीरामन जान गया कि वे रानियाँ उसके पास बुरे इरादे से आयी हैं। वह बोला — "मैं आपके इस सवाल का जवाब इस पिंजरे में बन्द रह कर कैसे दे सकता हूँ।

अगर आपको मेरा सही फैसला जानना है तो मुझे आप सबके शरीर के हर हिस्से को बारीकी से देखना पड़ेगा – सामने से भी और पीछे से भी। और अगर आपको वाकई मेरी राय जाननी है तो पहले मुझे इस पिंजरे से मुझे आजाद भी करना पड़ेगा।"

रानियाँ पहले तो चिड़िया को पिंजरे में से निकालने में डरती रहीं कि कहीं ऐसा न हो कि चिड़िया उड़ जाये पर बाद में कुछ सोच कर उन्होंने उस कमरे के दरवाजे खिड़कियाँ सब बन्द किये और उसे पिंजरे में से बाहर निकाल दिया।

हीरामन ने कमरे में चारों तरफ निगाह दौड़ायी और देखा कि उस कमरे में पानी जाने का एक रास्ता था जिससे जरूरत पड़ने पर वह वहाँ से भाग सकता था।

जब रानियों ने अपना सवाल कई बार पूछा तो हीरामन बोला — "तुममें से किसी की भी सुन्दरता की उस लड़की की छोटी उंगली से भी तुलना नहीं की जा सकती जो सात समुद्र और तेरह नदियों के उस पार रहती है।"

रानियाँ अपनी सुन्दरता के बारे में इस तरह का जवाब सुन कर बहुत गुस्सा हुई और चिड़िया के टुकड़े टुकड़े करने के लिये दौड़ीं पर चिड़िया ने तो अपने भागने का रास्ता पहले से ही ढूँढ रखा था सो वह उस पानी के रास्ते से निकल कर उनसे बच कर भाग गयी और पास में बनी एक लकड़हारे की कुटिया में जा कर शरण ले ली।

अगले दिन राजा शिकार से घर वापस आ गया। आ कर उसने हीरामन को उसके पिंजरे में ढूँढा पर वह उसे जब वहाँ नहीं मिला तो वह दुख से पागल सा हो गया।

उसने अपनी रानियों से पूछा पर उन्होंने कहा कि उन्हें उसके बारे में कुछ नहीं पता। राजा बेचारा अपनी चिड़िया के लिये दिन रात रोता रहा क्योंकि वह उसको बहुत प्यार करता था।

उसके मन्त्री लोग बहुत परेशान थे। उनको डर था कि इस दुख की वजह से कहीं राजा का दिमाग ही खराब न हो जाये क्योंकि वह सारा दिन रोता रहता था — "ओ हीरामन ओ हीरामन। तुम कहाँ गये।"

उसने फिर ढोल बजवा कर सारे शहर में मुनादी पिटवा दी कि जो कोई भी आदमी उसकी पालतू चिड़िया हीरामन को ला कर उसे देगा उसको वह दस हजार रुपये देगा।

लकड़हारा यह मुनादी सुन कर बहुत खुश हुआ और उसने सोचा कि अगर वह उस चिड़िया को राजा को दे देगा तो उसको

इनाम मिल जायेगा और वह ज़िन्दगी भर के लिये आजादी से रह पायेगा। बस वह हीरामन को राजा को दे आया और अपने इनाम के दस हजार रुपये उससे ले आया।

जब हीरामन ने राजा को बताया कि उसकी रानियों ने उसको मारने की कोशिश की थी तब तो वह तो गुस्से से पागल सा ही हो गया।

उसने उन सबको महल से बाहर निकालने का हुक्म दे दिया और उनको एक अकेली जगह में जहाँ खाना भी नहीं मिलता था रहने के लिये भेज दिया। राजा के हुक्म का पालन किया गया। कुछ ही दिनों में उसकी सब रानियों को जंगली जानवरों ने खा लिया।

कुछ दिनों बाद राजा ने हीरामन से कहा — "हीरामन तुमने रानियों से कहा कि उनमें से किसी की भी सुन्दरता की उस लड़की की छोटी उँगली से भी तुलना नहीं की जा सकती थी जो सात समुद्र और तेरह नदियों के उस पार रहती है। क्या तुम्हें पता है कि मैं उस लड़की तक कैसे पहुँच सकता हूँ।"

हीरामन बोला — "हाँ हाँ बिल्कुल। मैं योर मैजेस्टी को उसके महल के दरवाजे तक ले जा सकता हूँ जिसमें वह रहती है। और अगर योर मैजेस्टी मेरी सलाह मानें तो मैं यह जिम्मेदारी भी लेता हूँ कि वह लड़की आपकी बाँहों में होगी।"

राजा बोला — “तुम जो कहोगे मैं वह करूँगा। बताओ तुम क्या चाहते हो कि मैं क्या करूँ ताकि मुझे वह लड़की मिल जाये।”

हीरामन बोला — “इस काम के लिये पक्षीराज नस्ल[7] के घोड़े की जरूरत है। अगर आप कोई पक्षीराज नस्ल का घोड़ा ला सकते हैं तो आप उस पर सवार हो कर बहुत ही थोड़े समय में सात समुद्र और तेरह नदियाँ पार पहुँच जायेंगे और उस लड़की के महल के दरवाजे पर भी पहुँच जायेंगे।”

राजा बोला — “तुम्हें तो मालूम है कि मेरे पास बहुत सारे घोड़े हैं। हम चल कर देखते हैं कि उनमें कोई पक्षीराज नस्ल का घोड़ा है या नहीं।”

सो राजा और हीरामन दोनों घुड़साल में घोड़े देखने गये। हीरामन उन सब घोड़ों के सामने से गुजरा जो बहुत अच्छे घोड़े थे और जो ऊँची नस्ल के थे पर फिर वह एक छोटे से और नीची सी नस्ल वाले पतले से घोड़े के सामने जा कर रुक गया।

वहाँ रुक कर वह राजा से बोला — “यह है वह घोड़ा जो मुझे चाहिये। यह घोड़ा असली पक्षीराज नस्ल का घोड़ा है। पर इसको पूरे छह महीने तक खूब अच्छा खाना खिलाना होगा ताकि यह हमारा काम कर सके। अभी यह कमजोर है।”

राजा ने उस घोड़े को घुड़साल में एक तरफ को रख दिया और वह खुद अपनी निगरानी में उसको छह महीने तक उसके राज्य में

---

[7] Winged horse. It literally means the king of birds.

मिलने वाला सबसे अच्छा दाना खिलाता रहा। इस तरह का खाना खाने से वह घोड़ा जल्दी ही शक्ल सूरत में अच्छा होने लगा।

छह महीने बाद हीरामन ने कहा कि अब वह घोड़ा उनका काम करने के लिये तैयार है। फिर उसने शाही चाँदी का काम करने वाले से कहा कि वह चाँदी की कुछ खाई[8] बनाये। बहुत थोड़े समय में ही बहुत सारी खाई बन गयीं।

जब वे अपनी यात्रा शुरू करने वाले थे तो हीरामन ने राजा से कहा — "मुझे आपसे एक प्रार्थना करनी है। जब हम लोग इस पर सवार हो कर जायेंगे तब आप इस घोड़े को शुरू में ही केवल एक बार ही चाबुक मारेंगे।

क्योंकि अगर आप इसको एक बार से ज़्यादा बार चाबुक मारेंगे तो हम लोग उस लड़की के महल के रास्ते के बीच तक ही पहुँच पायेंगे और फिर वहीं रुक जायेंगे।

और जब हम उस लड़की को ले कर घर लौटेंगे तभी भी आपको उसको शुरू में ही केवल एक ही बार चाबुक मारना है। अगर आप इसको एक बार से ज़्यादा बार चाबुक मारेंगे तो हम लोग फिर रास्ते के बीच तक ही पहुँच पायेंगे और फिर वहीं रुक जायेंगे।"

[8] Khai is fried paddy.

"ठीक है।" कह कर राजा हीरामन और चाँदी की खाइयों के साथ पक्षीराज पर बैठ गया और उसने घोड़े को धीरे से एक बार चाबुक मारा। घोड़ा बिजली की गति से हवा में उड़ चला।

उसने कई देश पार किये, कई राज्य पार किये, कई समुद्र पार किये और फिर तेरह नदियाँ पार कीं। शाम को वह एक सुन्दर महल के दरवाजे पर आ खड़ा हुआ।

महल के दरवाजे के पास एक बहुत ही बड़ा पेड़ खड़ा हुआ था। हीरामन ने राजा से कहा कि वह अपना घोड़ा पास में बनी घुड़साल में बाँध दे। फिर वह उस पेड़ पर चढ़ जाये और वहाँ छिप कर बैठ जाये।

हीरामन ने चाँदी की खाइयाँ लीं और पेड़ की जड़ के पास से उनको अपनी चोंच से एक एक कर के महल के सारे बरामदों और रास्तों पर जो उस लड़की के सोने के कमरे तक जाते थे गिराना शुरू कर दिया।

इसके बाद हीरामन जहाँ राजा छिपा बैठा था वहीं पेड़ पर जा कर बैठ गया।

आधी रात के कुछ घंटे बाद लड़की की दासी ने जो उसी के कमरे में सोती थी बाहर निकलने के लिये दरवाजा खोला तो देखा कि रास्तों पर चाँदी की खाइयाँ पड़ी हुई हैं। उसने उनमें से कुछ उठा लीं और यह न जानते हुए कि वे क्या थीं उसने उनको उस लड़की को दिखाया।

उस लड़की को लगा कि वे छोटी छोटी चाँदी की बन्दूक की गोलियाँ थीं पर उसको यह आश्चर्य हुआ कि वे वहाँ आयीं कहाँ से और कैसे।

वह भी अपने कमरे से बाहर निकल आयी और चारों तरफ देखा तो देखा कि वे उसके सोने के कमरे के दरवाजे के पास से ही लगातार आ रही थीं और पता नहीं कितनी दूर जा रही थीं।

उसको वे गोलियाँ बहुत अच्छी लगीं सो उसने वे चमकीली खाइयाँ सब रास्तों और बरामदों से उठा कर एक टोकरी में रख लीं।

खाइयाँ उठाते उठाते वह उस पेड़ की जड़ तक आ पहुँची जिसके ऊपर राजा छिपा बैठा था। हीरामन ने राजा को पहले ही बता रखा था सो जैसे ही वह लड़की पेड़ के नीचे तक आयी वह पेड़ के ऊपर अपने छिपने की जगह से नीचे कूद गया और उसने उस लड़की को पकड़ लिया।

उसको उसने घोड़े पर बिठा लिया और फिर खुद भी बैठ गया। उस समय हीरामन राजा के कन्धे पर बैठा हुआ था। तुरन्त ही उसने घोड़े को बहुत ही धीरे से एक चाबुक मारा और उसका घोड़ा हवा से बातें करने लगा।

अपने इस कीमती इनाम के साथ राजा अपने घर बहुत जल्दी पहुँचना चाहता था सो वह हीरामन की बात बिल्कुल ही भूल गया कि उसको घोड़े को केवल एक ही बार चाबुक मारना है।

घर पहुँचने की जल्दी में उसने घोड़े को दोबारा चाबुक मार दिया। दूसरा चाबुक खाते ही वह घोड़ा तुरन्त ही शहर के बाहर एक जंगल में उतर गया।

हीरामन चिल्लाया — "योर मैजेस्टी यह आपने क्या किया? क्या मैंने आपसे नहीं कहा था कि इस घोड़े को केवल एक बार ही चाबुक मारना है और आपने इसको दो बार चाबुक मार दिया। बस अब यह और आगे नहीं जायेगा। अब हम लोग शायद यहीं मर जायेंगे।"

पर जो कुछ होना था वह तो हो चुका था। अब इसको बदला नहीं जा सकता था। पक्षीराज की ताकत दूसरी बार चाबुक मारने से अब खत्म हो चुकी थी और अब वे लोग घर नहीं लौट सकते थे।

वे सब उस घोड़े से उतर गये पर उनको कहीं किसी आदमी के रहने की जगह नहीं दिखायी नहीं दी। वहाँ उन्होंने कुछ फल और जड़ें खायीं और रात जमीन पर सो कर गुजारी।

अगली सुबह कुछ ऐसा हुआ कि उस देश का राजा उधर शिकार खेलने के लिये आया। वह एक बारहसिंगे का पीछा कर रहा था।

उसने उसको एक तीर मारा और उसके पीछे भागा तभी उसने उस राजा और उसके साथ एक बहुत सुन्दर लड़की को देखा। वह उस लड़की को देखता का देखता रह गया और सोचा कि वह

उसको पकड़ ले। उसने सीटी बजायी तो उसके सारे नौकर चाकर उसके चारों तरफ आ गये।

उन्होंने उस लड़की को पकड़ लिया और उसका प्रेमी जो उसको सात समुद्र और तेरह नदियों के पार से उसके महल से यहाँ तक लाया था उसने उसको मारा तो नहीं पर उसकी आँखें निकाल कर उसको अन्धा कर के वहीं जंगल में अकेला छोड़ दिया।

अकेला? नहीं नहीं बिल्कुल अकेला नहीं। क्योंकि अपना भला हीरामन उसके साथ था।

उस देश का राजा उस सुन्दर लड़की को और उसके प्रेमी के घोड़े को अपने महल ले गया।

वहाँ जा कर लड़की ने राजा से कहा कि उसने एक कसम खा रखी है जो छह महीने में पूरी हो जायेगी इसलिये उसको उसके पास छह महीने तक नहीं आना चाहिये।

उसने यह छह महीने का समय उसको इसलिये दिया था कि पक्षीराज घोड़े को अपनी ताकत वापस लाने में छह महीने लगते। वह लड़की अब रोज ही किसी न किसी पूजा में लगी रहती।

उसकी इस कसम की वजह से उसको एक दूसरा घर दे दिया गया। वह वहाँ पक्षीराज घोड़े को भी ले गयी। वह वहाँ उसको सबसे अच्छा दाना खिलाती रही।

पर उसकी यह सब मेहनत बेकार जाती अगर वह हीरामन से न मिलती। पर वह उससे कैसे मिले? उसको एक तरकीब सूझी।

उसने अपने नौकरों को चिड़ियों के खाने के लिये अपने घर की छत पर बहुत सारा धान दाना दाल आदि बिखरा देने का हुक्म दिया। सो बहुत सारी चिड़ियें वहॉ खाना खाने आने लगीं। अब वह लड़की रोज उन चिड़ियों में रोज हीरामन को ढूँढती।

उधर हीरामन जंगल में रह कर बहुत परेशान था। उसको न केवल अपनी देखभाल करनी होती थी बल्कि नये अन्धे हुए राजा की भी देखभाल करने होती थी।

वह उसके लिये जंगल से कुछ पके फल तोड़ता। उनमें से कुछ वह राजा को खाने के लिये देता और कुछ वह खुद खाता।

इस तरह से हीरामन अपनी ज़िन्दगी गुजार रहा था कि एक दिन उस जंगल की दूसरी चिड़ियों ने उससे कहा — "ओ हीरामन तुम यहॉ जंगल में बड़ी खराब ज़िन्दगी गुजार रहे हो। तुम हमारे साथ बहुत बड़ी दावत खाने क्यों नहीं चलते।

वहॉ एक धार्मिक स्त्री हम लोगों के लिये अपने घर की छत पर बहुत सारा धान दाना दाल डालती है। हम लोग तो वहॉ सुबह सुबह ही चले जाते हैं और फिर हजारों चिड़ियों के साथ पेट भर कर वह दाना खा कर शाम को ही घर लौटते हैं।"

यह सुन कर हीरामन ने भी निश्चय किया कि वह भी अगले दिन उनके साथ जायेगा। उसको लगा कि वह स्त्री चिड़ियों के लिये दान ज़्यादा दे रही थी बजाय इसके कि वे चिड़ियॉ उस दाने में अपने लिये जो कुछ सोच रहीं थीं।

हीरामन ने उस लड़की को देखा तो वह उसको पहचान गया और उसने उससे राजा के बारे में बहुत सारी बातें कीं – उसकी तन्दुरुस्ती के बारे में, उसके अन्धेपन को दूर करने के बारे में, उस लड़की के अपने वहाँ से बच कर निकल भागने के बारे में।

सब सोच विचार के बाद यह प्लान बनाया गया।

घोड़ा कुछ ही दिनों में राजा के महल जाने के लायक हो जायेगा क्योंकि छह महीने में से काफी दिन तो गुजर ही चुके थे।

उधर राजा का अन्धापन भी दूर हो जायेगा अगर हीरामन बिहंगम और बिहंगामी चिड़ियों के बच्चों की बीट ले आये जिनका घोंसला उस लड़की के सात समुद्र और तेरह नदियों के उस पार वाले घर के दरवाजे के पास वाले पेड़ पर था।

उनकी गर्म ताजा बीट राजा की आँखों की पुतलियों के ऊपर लगाने से उसकी देखने की ताकत वापस आ जायेगी।

सो अगली सुबह हीरामन अपने काम पर चल दिया। रात को वह उस लड़की के महल के पास वाले पेड़ पर रहा। अगले दिन सुबह को उसने अपनी चोंच में एक पत्ता ले कर बिहंगम और बिहंगामी के घोंसले के नीचे उनके बच्चों की बीट का इन्तजार किया।

जब उनके बच्चों ने उस पत्ते में बीट कर ली तो वह उसको ले कर वापस उसी जंगल की तरफ उड़ चला जहाँ राजा रहता था।

जैसे ही वह समुद्र और नदियाँ पार कर के जंगल में आया और उसने वह कीमती दवा राजा की आँखों में लगायी तो राजा की देखने की ताकत तुरन्त ही वापस आ गयी। राजा ने अपनी आँखें खोलीं और देखने लगा।

कुछ दिनों में पक्षीराज की ताकत भी वापस आ गयी। वह लड़की भी वहाँ के देश के राजा के महल से बच कर जंगल में आ गयी। पक्षीराज ने राजा और लड़की और हीरामन को अपने ऊपर बिठाया और वे सब राजा के देश आ गये।

राजा ने अपने देश आ कर उस लड़की से शादी कर ली। वे लोग बहुत साल तक खुशी खुशी रहे और उनके कई लड़के और लड़कियाँ हुए।

हीरामन हमेशा ही उन सबको तैंतीस करोड़ देवताओं के नाम सुनाता रहा।

2 लाल का जन्म[9]

एक बार की बात है कि एक राजा था जो अपनी रानी और चार बेटों को छोड़ कर मर गया था। रानी अपने चारों बेटों में से अपने सबसे छोटे बेटे को बहुत ज़्यादा प्यार करती थी।

वह हमेशा उसको सबसे अच्छे कपड़े पहनाती, सबसे अच्छे घोड़े देती, सबसे अच्छा खाना देती और सबसे अच्छा फर्नीचर देती। यह देख कर उसके तीनों बड़े भाई हमेशा उससे जलते रहते और अपने उस भाई और माँ के लिये कुछ न कुछ साजिश करते रहते।

इसी वजह से वे एक अलग घर में रहते थे और उन्होंने राज्य भी सँभाल रखा था।

इस तरह के बर्ताव ने सबसे छोटे बेटे को बहुत ही जिद्दी बना दिया था। वह कभी किसी की सुनता नहीं था। यहाँ तक कि वह अपनी माँ की भी नहीं सुनता था। वह सब जगह अपनी अपनी ही चलाता था।

एक दिन वह अपनी माँ के साथ नदी पर नहाने गया। तो वहाँ एक बहुत बड़ी नाव लंगर पर खड़ी हुई थी। उसमें कोई नाविक नहीं था। सो राजकुमार उस नाव में गया और अपनी माँ को भी

[9] The Origin of Rubies. A folktale from India, Asia. Adapted from the book: "Folk-tales of Bengal", by Lal Behari Dey. London, Macmillan & Co Limited. 1912. 1st ed 1883. 22 Tales. My translation of this book in Hindi has been published by National Book Trust, Delhi, India. 2020.

उसमें आने के लिये कहा। उसकी माँ ने उससे उस नाव में से नीचे उतर आने के लिये कहा क्योंकि वह नाव उसकी नहीं थी।

पर राजकुमार ने कहा — "नहीं माँ मैं इस नाव में से नीचे नहीं आ रहा। मुझे तो इसी में बैठ कर समुद्री यात्रा पर जाना है। और अगर तुम्हें भी मेरे साथ जाना है तो देर मत करो जल्दी ही इस नाव पर आ जाओ नहीं तो मैं बस जल्दी ही जा रहा हूँ।"

रानी ने उससे बहुत कहा कि उसको ऐसा नहीं करना चाहिये बल्कि उसे तुरन्त ही उस नाव से नीचे उतर आना चाहिये पर राजकुमार ने उसके कहे पर ध्यान ही नहीं दिया और उसका लंगर उठा दिया।

रानी बेचारी क्या करती। वह उसको अकेले जाने नहीं देना चाहती थी सो वह भी जल्दी से उस नाव में चढ़ गयी। जैसे ही वह नाव पर चढ़ी नाव चल पड़ी। पानी की धारा तेज़ थी सो वह उसके बहाव से तीर की तरह से चलने लगी।

जब नाव खुले समुद्र में कई फर्लांग[10] चल चुकी तो वह एक भँवर[11] के पास आ पहुँची जहाँ राजकुमार ने बहुत बड़े साइज़ के लाल[12] निकलते देखे।

[10] Furlong is 1/8th part of a Mile = 220 yards

[11] Translated for the word "Whirlpool". See its picture above.

[12] Translated for the "Rubies:" – one of the nine precious stones.

इतने बड़े साइज़ के लाल तो पहले कभी किसी ने नहीं देखे थे। वहाँ वह एक एक लाल इतना बड़ा था कि उससे सात सात राजाओं का राज्य खरीदा जा सकता था। राजकुमार ने वहाँ से छह लाल उठा लिये और अपनी नाव पर रख लिया।

उसकी माँ ने कहा – "बेटा ये लाल टुकड़े मत उठाओ। ये किसी और के होंगे जिसका जहाज़ टूट गया होगा। अगर उसने हमको ढूँढ लिया तो फिर वह हमको चोर बना देगा।"

जब राजकुमार की माँ ने उससे यह कई बार कहा तो उसने उनको वहीं पानी में फेंक दिया पर एक लाल उसने फिर भी अपने कपड़े में बँधा छोड़ दिया।

नाव अब वहाँ से किनारे की तरफ चली और राजकुमार और रानी एक बन्दरगाह पर आ गये जहाँ वे उतर गये। जिस बन्दरगाह पर वे उतरे थे वह बन्दरगाह कोई छोटी जगह नहीं थी। वह एक बहुत बड़े राजा की बहुत बड़ी राजधानी थी।

बन्दरगाह के पास ही रानी और उसके बेटे ने एक मकान किराये पर ले लिया और वे दोनों वहीं रहने लगे। राजकुमार क्योंकि अभी लड़का ही था तो उसको कंचे[13] खेलने का बहुत शौक था।

[13] Translated for the "Marbles". Marbles are the colored glass balls with which boys play. See their picture above.

जब भी राजा के बेटे महल से बाहर अपने लौन में खेलने के लिये आते तो यह राजा का बेटा भी उनके साथ खेलने के लिये बाहर आ जाता। पर उसके पास कंचे तो थे नहीं तो वह अपने लाल से ही खेलता था जो उसके पास था।

वह लाल इतना सख्त था कि वह जिससे भी टकराता था उसी को कई टुकड़ों में तोड़ देता था।

राजा की बेटी अपने महल के छज्जे से खड़ी खड़ी यह खेल देखती रहती थी तो वह एक अजनबी लड़के के हाथ में लाल गेंद देख कर बड़ी आश्चर्यचकित होती। वह उसको बहुत अच्छी लगी तो वह उसको लेना चाहती थी।

उसने अपने पिता से कहा कि सड़क के एक अजनबी लड़के के पास अजीब सा चमकीले लाल रंग का एक पत्थर है वह उसको चाहिये वरना वह भूखी रह कर अपनी जान दे देगी।

राजा ने तुरन्त ही अपने नौकरों को हुक्म दिया कि वे उस लड़के को उसके उस कीमती पत्थर के साथ उसके पास ले कर आयें।

जब लड़के को उसके सामने लाया गया तो उसने उसका वह लाल पत्थर देखा तो वह तो उस लाल का साइज़ और उसका चमकीलापन देख कर ही दंग रह गया। उसने इससे पहले ऐसी कोई चीज़ देखी नहीं थी। उसको तो बल्कि यह भी शक था कि दुनियाँ में किसी राजा के पास ऐसा खजाना होगा।

उसने लड़के से पूछा कि वह उसे कहाँ से मिला तो लड़के ने जवाब दिया "समुद्र से।"

राजा ने उसको उस लाल के बदले में एक हजार रुपये देने चाहे तो क्योंकि लड़के को तो उस पत्थर के टुकड़े की असली कीमत का अन्दाज नहीं था सो उसने उसको वह पत्थर का टुकड़ा एक हजार रुपये में दे दिया।

वह उस पैसे को ले कर अपनी माँ के पास गया तो वह यह सोच कर थोड़ा डर गयी कि शायद उसके बेटे ने वे पैसे किसी अमीर आदमी के घर से चुराये हैं।

पर जब उसके बेटे ने उसको यह बताया कि वे पैसे उसको राजा ने उस लाल गेंद के बदले में दिये हैं जो उसने समुद्र में से उठायी थी तो वह चुप हो गयी।

राजा ने वह लाल उस लड़के से खरीद कर अपनी बेटी को दे दिया और उसकी बेटी ने उसको अपने बालों में लगा लिया।

फिर वह अपने पालतू तोते के पास गयी और उससे बोली — "क्या मैं इस लाल को अपने बालों मे लगा कर बहुत सुन्दर दिखायी नहीं दे रही?"

तोता बोला — "सुन्दर सुन्दर। तुम तो बहुत सुन्दर दिखायी दे रही हो। पर क्या राजकुमारियाँ अपने बालों में केवल एक ही लाल पहनती हैं? यह जब और बहुत अच्छा लगता जब तुम कम से कम दो लाल पहनतीं।"

राजकुमारी को तोते से यह सुन कर अपनी कुछ बेइज़्ज़ती लगी सो उसको बहुत शर्म आयी। वह अपने महल के दुख वाले कमरे में चली गयी। अब वहाँ वह न तो कुछ खाये और न पिये।

राजा ने जब यह सुना कि उसकी बेटी दुख वाले कमरे में है तो उसको चिन्ता हुई तो वह उसके पास गया और उससे उसके दुख की वजह पूछी।

तो राजकुमारी ने उसको बताया कि उसके तोते ने उससे सुबह क्या कहा और साथ में यह भी कहा "पिता जी अगर आप मेरे लिये ऐसा ही एक दूसरा लाल ला कर नहीं देंगे तो मैं अपने हाथों से अपना गला घोट लूँगी।"

राजा यह सुन कर बहुत दुखी हो गया। वह ऐसा दूसरा लाल कहाँ से ले कर आये। पहली बात तो उसको यही शक था कि दुनियाँ में किसी के पास ऐसी कोई चीज़ थी भी पर दूसरा लाल? दूसरा लाल वह कहाँ से लाये।

यह तो उसको बिल्कुल नामुमकिन ही लग रहा था। उसको तो यही शक था कि ऐसा दूसरा लाल दुनियाँ में कहीं और होगा भी।

उसने उस लड़के को फिर से बुलाया और उससे पूछा — "ओ नौजवान क्या तुम्हारे पास वैसा ही एक और लाल है जैसा कि तुमने मुझे अभी बेचा था?"

लड़का बोला — "नहीं जनाब। मेरे पास तो नहीं है पर आपको दूसरा क्यों चाहिये। वैसे मैं आपको वैसे लाल बहुत सारे दे सकता हूँ

अगर आपको वे चाहिये हीं। ये समुद्र में बहुत बहुत दूर समुद्र के भॅवर में मौजूद हैं। मैं वहॉ जा कर उनको आपके लिये ला सकता हूॅ।"

लड़के के जवाब पर राजा तो कुछ बोल ही नहीं सका। लेकिन फिर उसने उसको भारी इनाम देने का वायदा किया अगर वह उसको वैसा ही लाल ला कर दे सका तो।

लड़का अपने घर गया और मॉ को सब बताया तो उसने कहा कि वह वहॉ न जाये पर लड़के ने तो सोच रखा था कि वह वहॉ जायेगा और उसे वहॉ जाने से कोई रोक नहीं सका।

वह अकेला ही अपनी उसी नाव पर चढ़ा जिससे वह वहॉ अपनी मॉ के साथ आया था और वह लाल समुद्र में से वहॉ लाया था। इस बार उसने ठीक उसी जगह पर जाने का विचार किया जहॉ से वे लाल निकल रहे थे।

वह भॅवर के बीच में गया तो उसे वहॉ समुद्र की तली तक एक नली सी जाती दिखायी दी। वह अपनी नाव भॅवर के चारों तरफ घूमती हुई छोड़ कर उसके अन्दर कूद गया।

जब वह समुद्र की तली में पहुॅचा तो वहॉ उसको एक बहुत बड़ा और सुन्दर महल दिखायी दिया। वह उस महल में घुस गया और उसके बीच वाले कमरे तक पहुॅच गया।

वहॉ जा कर उसने देखा कि वहॉ तो भगवान शिव बैठे हुए हैं। उनकी ऑखें बन्द हैं और वह ध्यान में पूरी तरह मग्न हैं।

उनसे कुछ फीट ऊपर एक चबूतरा ही जिस पर एक बहुत ही सुन्दर स्त्री लेटी हुई है।

लड़का उस चबूतरे तक गया तो उसने देखा कि उस स्त्री का सिर तो उसके शरीर से अलग है। यह देख कर वह लड़का डर गया और सोच ही नहीं पाया कि वह क्या करे।

उसने देखा कि उस सिर से खून टपक रहा है जो शिव के जटाओं वाले सिर पर गिर रहा है और लाल के रूप में समुद्र में बह रहा है।

कुछ देर बाद उसका ध्यान दो छोटी डंडियों की तरफ गया जो एक सोने की थी और एक चाँदी की। वे उस स्त्री के सिर के पास ही पड़ी थीं।

उत्सुकता से उसने वे दोनों डंडियाँ उठा लीं। जैसे ही उसने वे डंडियाँ उठायीं तो उसके हाथ से सोने की डंडी उस स्त्री के कटे हुए सिर पर गिर पड़ी।

इससे उस स्त्री का सिर उसके शरीर से अपने आप ही जुड़ गया और वह स्त्री उठ कर बैठी हो गयी। उसको वहाँ एक आदमी को देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने उस लड़के से पूछा "तुम कौन हो और तुम यहाँ आये कैसे?"

राजकुमार ने तब उसको अपनी कहानी बतायी तो वह बोली — "ओ नाखुश राजकुमार, तुम यहाँ से तुरन्त ही चले जाओ।

क्योंकि जब शिव का ध्यान खत्म हो जायेगा तो वह अपनी एक ही नजर से तुमको भस्म कर देंगे।"

पर वह राजकुमार तो वहाँ से जाने वाला नहीं था जब तक वह स्त्री उसके साथ नहीं जायेगी क्योंकि वह उसको प्यार करने लगा था। आखिर वह स्त्री उसके साथ उस महल से भागने के लिये तैयार हो गयी।

वे दोनों पानी की सतह पर आये और उस नाव में चढ़ गये जिसको राजकुमार भँवर के पास ही घूमती हुई छोड़ गया था। उस नाव में उन्होंने पहले से ही बहुत सारे लाल भर लिये थे।

वहाँ से वे जमीन तक आये और राजकुमार उस स्त्री को अपनी माँ के पास ले गया। उस सुन्दर लड़की को देख कर राजकुमार की माँ को जो आश्चर्य हुआ होगा उसको तो तुम लोग बहुत अच्छी तरह समझ सकते हो।

अगले दिन सुबह ही राजकुमार ने एक नौकर के हाथ एक बड़ा बर्तन भर कर लाल राजा के पास भिजवा दिये। राजा तो उनको देख कर बहुत ही आश्चर्य में पड़ गया।

जब उसकी बेटी ने इतने सारे लाल देखे तो वह उस लड़के से शादी करने के लिये तैयार हो गयी जिसने वे उसको भेंट किये थे।

हालाँकि अब राजकुमार के एक पत्नी थी जिसको वह समुद्र की गहराइयों से निकाल कर लाया था पर उस राजकुमारी की इच्छा के अनुसार उसने उसको अपनी दूसरी पत्नी बना लिया।

उन दोनों की शादी हो गयी और फिर वे तीनों बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे। उनके बहुत सारे बच्चे हुए।

3 होशियार तोता[14]

तोते की यह लोक कथा हमने भारत के काश्मीर प्रान्त की लोक कथाओं से ली है।

एक फकीर के पास एक बहुत ही बातूनी तोता था। वह उसके लिये बहुत कीमती था और वह उसे बहुत प्यार करता था।

एक दिन फकीर की तबियत कुछ ठीक नहीं थी तो उसने तोते से कहा — "तुम मुझे कोई खबर नहीं सुनाते तुम तो मुझे कुछ भी नहीं सुनाते।"

तोता बोला — "ठीक है मैं सुनाता हूँ। अब तक मैं ऐसा करने से डर रहा था कि कहीं ऐसा न हो कि तुम मेरे मुँह से कुछ ऐसी बात सुन लो जो तुम्हें सुनने में अच्छी न लगें।"

फकीर बोला — "उसकी तुम चिन्ता न करो तुम मुझे सब बता दो जो तुम्हें कहना हो।"

अगली सुबह फकीर को किसी दूसरे गाँव जाना था तो वहाँ जाने से पहले उसने अपनी पत्नी से कहा कि उस दिन उसके लिये वह एक मुर्गा पकाये जिसमें से आधा वह खा ले और बाकी आधा गर्म उसके लिये रखा रहने दे।

---

[14] The Clever Parrot. A folktale of Kashmir, India. Taken from the book "Folk-Tales of Kashmir", by James Hinton Knowles. 2nd edition. London, Kegan Paul. 1887.
Hindi translation of this book is available with me as e-Book in 4 parts.

पत्नी ने उसके कहे अनुसार मुर्गा पकाया तो पर उसने वह सारा मुर्गा खा लिया। उसको बहुत ज़ोर की भूख लगी थी और वह मुर्गा भी इतना स्वादिष्ट बना था कि वह अपने आपको उसे पूरा खाने से रोक ही नहीं सकी।

फकीर जब शाम को घर लौटा तो उसने उससे पूछा कि उसका मुर्गा कहॉ है तो उसने कह दिया कि वह तो बिल्ली खा गयी।

फकीर बोला — "अच्छा। तब तो कुछ नहीं किया जा सकता। तुम मुझे कुछ और खाने को दे दो क्योंकि मुझे भी बहुत भूख लगी है। मैं जबसे घर छोड़ कर गया हॅू तबसे मैंने कुछ नहीं खाया है।" पत्नी खाना बनाने चली गयी।

जब वह खाना बना रही थी तो वह तोते के पास गया और बोला — "ओ मेरे प्यारे तोते बता आज की क्या नयी खबर है।"

तोता बोला — "तुम्हारी पत्नी ने तुमसे झूठ बोला है। मुर्गे को बिल्ली ने नहीं खाया बल्कि वह खुद खा गयी है। मैंने खुद उसको सारा मुर्गा खाते देखा है।"

जाहिर है पत्नी ने तोते के इस कहने को सरासर झूठ बताया पर फकीर ने घर में शान्ति बनाये रखने के लिये पत्नी की बात पर विश्वास करने का बहाना बनाया। अब यह भी साफ है कि पत्नी ऐसी चिड़िया को अपने घर में रखने के बिल्कुल पक्ष में नहीं थी। वह उससे बिल्कुल भी खुश नहीं थी क्योंकि ऐसा करने से उसकी पोल खुलती थी।

ऐसा नहीं था कि वह किसी और आदमी को अपने घर बुलाती थी या चोर थी पर अगर वह कोई भी काम पति से छिपा कर करना चाहती तो वह उस चिड़िया के जाने बिना नहीं कर सकती थी और वह चिड़िया उसके पति को उसकी हर बात की खबर देती रहती थी।

सो एक दिन उसने अपने पति से कहा — "अच्छा हो अगर हम लोग अलग हो जायें तो। ऐसा लगता है कि यह तोता ही अब तुम्हारे लिये सब कुछ है। तुम्हें मुझसे ज़्यादा अब उसके ऊपर विश्वास है। तुम मुझसे ज़्यादा उससे बात करना पसन्द करते हो।

मुझसे अब यह और सहन नहीं होता। या तो तुम मुझे बाहर निकाल दो या फिर इस तोते को बाहर निकाल दो क्योंकि हम तीनों अब एक छत के नीचे शान्ति से नहीं रह सकते।"

फकीर अपनी पत्नी को बेहद प्यार करता था। जब उसने अपनी पत्नी के मुँह से यह सब सुना तो वह बहुत दुखी हुआ। उसने अपनी पत्नी से वायदा किया कि वह तोते को बेच देगा।

अगली सुबह वह अपने घोड़ी पर चढ़ा और तोते को बेचने के लिये चला तो रास्ते में तोते ने कहा — "ओ मेरे मालिक सुनो तुम मुझे किसी ऐसे आदमी को मत बेचना जो तुम्हें मेरा कहा हुआ पैसा न दे।

फकीर बोला — "ठीक है। मैं समझ गया।"

चलते चलते वे लोग समुद्र के किनारे तक चले गये जो उसके घर से बहुत दूर था वहाँ उन्होंने रात बिताने की सोची।

आधी रात हो गयी फकीर सो नहीं सका। उसको नींद ही नहीं आ रही थी। उसने तोते से कहा — "मैं बहुत थक गया हूँ मुझे नींद नहीं आ रही है। मुझे डर है कि तुम और मेरी घोड़ी दोनों मेरे सोने का फायदा उठा कर यहाँ से भाग जाओगे।"

तोता बोला — "कभी नहीं। तुम क्या हमें इतना बेवफा समझते हो कि हम तुम्हें इस तरह का धोखा देंगे। हम पर विश्वास रखो। घोड़ी को आजादी से घूमने दो। मुझे भी मेरे पिंजरे से निकाल दो। मैं तुम्हें छोड़ कर कहीं नहीं जाऊँगा। मैं पास के एक पेड़ पर जा कर बैठ जाऊँगा और तुम्हारी और तुम्हारी घोड़ी दोनों की रखवाली करूँगा।"

यह विश्वास करते हुए कि वह तोता उसका वफादार था फकीर ने उसकी बात मान ली। उसने घोड़ी को खोल दिया और तोते को पिंजरा खोल कर बाहर निकाल दिया। फिर वह सोने के लिये लेट गया। तोता उनकी रखवाली करता रहा।

रात को तोते ने पानी में से एक घोड़े जैसा जानवर[15] निकलते देखा और देखा कि वह घोड़ी पर कूदा और फिर वापस पानी में चला गया।

[15] Here it means River Horse.

फकीर की आँख सुबह जल्दी ही खुल गयी। उसने अपने तोते को बुलाया और उसको पिंजरे में बन्द किया। तोते ने उसको रात में हुई उस अजीब सी घटना के बारे में फकीर को कुछ नहीं बताया। फकीर ने अपनी घोड़ी ली और समुद्र के किनारे किनारे चल दिया।

चलते चलते वह एक बहुत ही खुशहाल शहर में आ गया जहाँ वह वहाँ के कोतवाल से मिला। कोतवाल ने उसको सलाम करने के बाद उससे पूछा कि क्या वह अपना तोता बेचना चाहता था। फकीर ने कहा कि हाँ वह उसे बेचना चाहता था।

तोता बोला — "पर तुम मुझे नहीं खरीद सकते।"

कोतवाल के मुँह से निकला — "अरे वाह यह तो बड़ा अच्छा तोता है। मैं तुम्हारे आने की खबर वजीर को देता हूँ क्योंकि वह ऐसा तोता खरीदने के लिये बहुत दिनों से तलाश में हैं। चलो तुम मेरे साथ जल्दी चलो कहीं ऐसा न हो कि वह दरबार चले जायें।"

सो वे तीनों वजीर के घर गये। वजीर ने कोतवाल को उसके इस तोते वाले को उसके घर लाने के लिये बहुत धन्यवाद दिया फिर बोला — "पर मैं ऐसी चिड़िया खुद नहीं खरीद सकता जब तक कि मैं यह न जान लूँ कि राजा को ऐसी चिड़िया की जरूरत है या नहीं। एक बार मैंने उनको ऐसी चिड़िया के बारे बात करते सुना था।"

सो वे सब राजा के महल गये। जब राजा ने उनके आने का उद्देश्य सुना तो उन्होंने पूछा कि इस चिड़िया का दाम क्या है।

जवाब तोते ने दिया — "दस हजार रुपये।"

राजा चिड़िया की साफ आवाज सुन कर इतना खुश हुआ कि उसने तुरन्त ही फकीर को दस हजार रुपये दे कर वह चिड़िया खरीद ली। इतना सारा पैसा पा कर फकीर बहुत खुश हुआ। तोते ने अच्छा मौका देख कर फकीर से राजा को यह वायदा करा दिया कि वह अपनी घोड़ी का अगला बच्चा राजा को दे देगा।

इसके बाद तो तोता बड़ी शान से महल में रहने लगा। वह एक बहुत ही सुन्दर चाँदी के पिंजरे में रहता था और चाँदी के बर्तनों में ही खाना खाता था और पानी पीता था। यह पिंजरा राजा के जनानखाने में लटका रहता था।

बहुत जल्दी ही तोता सबका प्यारा हो गया। और राजा की रानियाँ तो उससे हमेशा ही खेलती रहती उसे प्यार से थपथपाती रहतीं और बात करती रहती थीं।

इस तरह सबके दिन बड़े अच्छे और हँसी खुशी गुजर रहे थे कि एक दिन राजा की पत्नियाँ तोते के पास आयीं और उससे पूछा कि उनमें सबसे सुन्दर कौन है। तोते को कोई शक नहीं हुआ उसने उस बात को हँसी में लेते हुए कहा कि वे सब सुन्दर थीं सिवाय एक के। उसने उस एक का नाम भी बताया। इत्तफाक से वह राजा की सबसे प्यारी पत्नी थी। उसने कहा कि उसका चेहरा बहुत भद्दा था जिसको सुन कर वह बेहोश हो गयी।

जैसे ही वह होश में आयी उसने कहा कि राजा को बुलाओ सो राजा को बुलाया गया। रानी बोली — "मैं बहुत बीमार हूँ। तुम मुझे इस तोते का माँस खाने के लिये दो नहीं तो मैं मर जाऊँगी।"

राजा ने जब यह सुना तो वह बहुत दुखी हुआ पर क्योंकि वह अपनी पत्नी को भी बहुत प्यार करता था उसने तोते को मारने का हुक्म दे दिया।

बेचारी चिड़िया बोली — "राजा साहब मेहरबानी कर के मुझे छह दिन की मोहलत दीजिये कि मैं जहाँ चाहूँ वहाँ जा सकूँ। उसके बाद में वायदा करता हूँ मैं अपनी पूरी वफादारी के साथ आपके पास लौट आऊँगा फिर आप जो चाहें मेरे साथ कीजियेगा।"

राजा ने उसको इजाज़त दे दी और चेतावनी दी कि वह छह दिन के बाद जरूर वापस आ जाये। तोते को आजाद कर दिया गया और वह तुरन्त ही उड़ गया। वह अभी वहाँ से बहुत दूर नहीं गया था कि वह बारह हजार तोतों से मिला। वे सब एक ही दिशा में कहीं जा रहे थे।

राजा का तोता चिल्ला कर बोला — "रुक जाओ रुक जाओ। तुम सब लोग कहाँ जा रहे हो।"

वे बोले — "हम सब एक ऐसे देश जा रहे हैं जहाँ एक राजकुमारी हमें मोती और मिठाई खाने के लिये देती है। तुम अगर हमारे साथ चलना चाहो तो तुम भी हमारे साथ चलो। तुम भी वहाँ मोती और मिठाई खाना।"

राजा का तोता राजी हो गया और वह भी उनके साथ उस राजकुमारी के देश चल दिया। वे जल्दी ही उस टापू पर पहुँच गये और वहाँ उनका उसी तरह से स्वागत हुआ जैसा कि उन बारह हजार तोतों ने उससे कहा था।

जब सब खा पी चुके तो सारे तोते वहाँ से वापस आने के लिये उड़े पर राजा का तोता बीमार पड़ गया। वह जमीन पर लेट गया। उसको वहाँ लेटा देख कर राजकुमारी बाहर आयी और उससे पूछा — "ओ सुन्दर चिड़िया तुम्हें क्या हुआ। क्या तुम बीमार हो? मेरे साथ आओ। मैं तुम्हारी देखभाल करूँगी। तुम जल्दी ही ठीक हो जाओगे।"

सो राजकुमारी उसको अपने महल में ले गयी। वहाँ ले जा कर उसने उसके लिये एक छोटा सा घोंसला बनाया और खुद उसकी देखभाल की। उसने उसको और मोती और और मिठाई खाने के लिये दी। मगर तोते को जैसे इस किसी चीज़ की परवाह ही नहीं थी।

तोता बोला — "राजकुमारी जी आप तो बहुत दयालु और बहुत अच्छी हैं। आप हमें मोती और मिठाई खाने के लिये देती हैं। मगर मेरे मालिक राजा साहब जिनका राज्य उत्तर से दक्षिण तक और पूर्व से पश्चिम तक फैला हुआ है वह इस टापू पर भी है हालाँकि यह आपको मालूम नहीं है वह तो मोती और मिठाई अपने मुर्गों को खिलाते हैं।

काश आप उनको जान पातीं। आप उनसे शादी कर लीजिये क्योंकि वह आपके लायक हैं और आप उनके लायक हैं राजकुमारी जी।"

तोते की बातें सुन कर राजकुमारी बहुत खुश हुई। वह दौड़ी दौड़ी अपने पिता के पास गयी और उनसे प्रार्थना की वह ऐसे राजा से एक बार मिलना चाहती है और अगर मुमकिन हो तो शादी करना चाहती है।

राजा बोला — "मैं तुम्हें इस तरह वहाँ नहीं जाने दे सकता पर हाँ मैं उस राजा को एक चिट्ठी लिखूँगा और उसे इस तोते के हाथ भिजवा दूँगा। मैं उस राजा से कहूँगा कि वह एक निश्चित दिन शादी के लिये आ जाये।

अगर यह चिड़िया सच कहती है तो वह राजा उस दिन शादी के लिये जरूर यहाँ आयेगा। तुम चिन्ता मत करो मैं तुम्हारी शादी उस राजा से कर दूँगा।"

राजकुमारी राजी हो गयी और तोते को इस मजमून की एक चिट्ठी लिख कर राजा के पास भिजवा दी गयी। तोता पाँचवें दिन की शाम को राजा के पास पहुँचा और वह चिट्ठी उसको दी।

राजा बोला — "तुम ठीक समय से आ पहुँचे।"

तोता ज़ोर से बोला — "राजा साहब मुझे मारना नहीं। मैंने आपका या आपके परिवार के किसी का कोई बुरा नहीं किया। आपकी रानियों ने मुझसे पूछा कि मैं उनके बारे में क्या सोचता हूँ सो

मैंने उसका जवाब उन्हें दे दिया। मैंने कोई झूठ नहीं बोला राजा साहब।

मुझे यकीन हे कि आप अपनी पत्नी की किसी भी छोटी सी सनक के लिये मुझे नहीं मारेंगे। वह तो नहीं मरेगीं जबकि मैं ज़िन्दा रहूँगा। मेरे मरने से उनको ज़िन्दगी नहीं मिलेगी। और अगर ऐसा है भी तो मैं आपको उनसे भी सुन्दर पत्नी दिलवा दूँगा।

यह देखिये मैं दुनियाँ की सबसे सुन्दर राजकुमारियों में से एक राजकुमारी के पिता की यह चिट्ठी ले कर आया हूँ जिसमें उनके लिये आपकी बस हाँ की जरूरत है।"

राजा बोला — "तुम बहुत न्यायपूर्वक बोल रहे हो और तुमने हमारे साथ हमेशा ईमानदारी का व्यवहार किया है इसलिये मैं तुम्हें बिल्कुल नहीं मारूँगा। मैं तुम्हारी इस प्रार्थना को सुनूँगा और इस राजकुमारी से शादी करूँगा। पर मैं उस टापू पर पहुचूँगा कैसे जहाँ ये लोग रहते हैं।"

तोता बोला — "आप चिन्ता न करें। मैंने यह सलाह आपको बिना सोचे विचारे नहीं दी है। अगर आप उस फकीर को हुक्म करें जिसने मुझे आपको बेचा था तो वह अपनी घोड़ी का बच्चा आपको दे देगा। उस पर बैठ कर आप इस टापू पर आसानी से जा सकेंगे।"

राजा बोला "अच्छा ठीक है।" और फकीर से उसकी घोड़ी का बच्चा भेजने के लिये कहा।

अब फकीर को तो उस घोड़ी के बच्चे के लक्षणों का पता नहीं था सो उसने उसे बिना किसी ना नुकुर के वह बच्चा राजा साहब को भेज दिया। उस बच्चे से उसे और क्या चाहिये था वह तो अब बहुत अमीर हो गया था और वह भी एक छोटी सी चीज़ के बदले में। और वह भी उस आदमी को दे कर जिसने पहले ही उसे कितनी अच्छी तरह से अमीर बना दिया था।

बच्चे के आने पर राजा उस घोड़े पर चढ़े और तोते को साथ ले कर उस टापू की तरफ चल पड़े जिस पर वह राजकुमारी रहती थी। जब राजा समुद्र के किनारे पहुँचे तो इतना बड़ा समुद्र देख कर तो वह बहुत ही नाउम्मीद हो गये और वापस जाने लगे कि वह इतना बड़ा समुद्र कैसे पार करेंगे।

उन्होंने तोते से पूछा — "इतना बड़ा समुद्र हम कैसे पार करेंगे?"

तोता बोला — "इस समुद्र को पार करने में तो कोई परेशानी ही नहीं है। आपका यह घोड़े का बच्चा कोई साधारण घोड़ा नहीं है। इस पर सवार हो कर ही आप इस समुद्र को पार कर सकते हैं। आप डरिये नहीं बस इसको पानी में हाँक दीजिये। यह पानी में भी उतनी ही आसानी से चला जायेगा जितनी आसानी से यह जमीन पर चलता है।"

राजा ने तोते की बात का विश्वास कर के उस घोड़े को पानी में हाँक दिया और वह जल्दी ही उस टापू पर पहुँच गया।

टापू के राजा ने उसका दिल से स्वागत किया और राजकुमारी तो उसको देख कर बहुत खुश हुई। राजा भी राजकुमारी को देख कर बहुत खुश हुआ और देखते ही उसे प्यार करने लगा। राजा ने राजकुमारी के पिता से कहा कि क्या वह अपनी बेटी की शादी उससे जल्दी से जल्दी कर देगा।

अब क्योंकि सब मन में एक ही बात थी तो जल्दी ही शादी हो गयी। जैसे ही सारी रस्में खत्म हुईं तो राजा और राजकुमारी दोनों अपने घोड़े पर सवार अपने घर वापस चल दिये। तोता उनके आगे आगे उनको रास्ता दिखाता हुआ उड़ा।

वे उसी रास्ते से वापस नहीं गये जिस रास्ते से वे वहाँ आये थे। इस जाने वाले रास्ते में एक ऐसा टापू पड़ता था जिस पर कोई नहीं रहता था। उस टापू को देख कर राजा बोला कि वह बहुत थक गया था और थोड़ी देर वहाँ आराम करना चाहता था।

तोता बोला — "नहीं राजा साहब यहाँ नहीं। यहाँ बहुत खतरा है।"

राजा बोला — "कोई बात नहीं पर मैं अब आराम किये बिना आगे नहीं जा सकता। मैं यहाँ थोड़ा सो लूँ तब यहाँ से आगे चलेंगे।"

सो राजा और उसकी पत्नी दोनों उस टापू पर उतर गये और सो गये। तोता वहीं एक पेड़ पर बैठ गया और उनका पहरा देने लगा। एक घंटे के अन्दर ही एक पानी का जहाज़ उधर से गुजरा।

उस जहाज़ के कप्तान ने देखा कि उस टापू पर दो आदमी सो रहे थे तो वह उनको देखने के लिये उस टापू पर उतर गया।

रानी की सुन्दरता देख कर वह उस पर मोहित हो गया और उसको उठा कर वह अपने जहाज़ पर ले गया। वह घोड़े के बच्चे को भी ले गया बस राजा को वहीं अकेला सोता छोड़ गया।

तोता पेड़ पर बैठा बैठा यह सब देख रहा था पर वह राजा को को इस बात से सावधान करने से डर रहा था ताकि कहीं ऐसा न हो कि वह कप्तान उसे गोली मार दे। इस तरह वह जहाज़ रानी और घोड़े को ले कर चलता बना।

जब वे चले गये तो तोते ने राजा को उठाया। राजा उठते ही बोला — "ओह मेरे तोते काश मैंने तुम्हारी सुनी होती और मैं यहाँ आराम करने के लिये न रुका होता। अब मैं क्या करूँ।

यहाँ तो मेरे लिये खाना भी नहीं है। यहाँ तो कोई ऐसा जानवर भी नहीं है जो मुझे इस समुद्र के पार ले जाये। तुम्हीं बताओ मेरे तोते कि मैं अब क्या करूँ। तुम्हीं मेरी कुछ सहायता करो।"

तोता बोला — "राजा साहब अब आपके लिये बस एक ही रास्ता बचा है। इस पेड़ को काट कर इसका तना पानी में फेंक दो और फिर इस तने पर चढ़ कर भगवान जिधर चाहे उधर ही चले जाओ। इसके अलावा मैं और कोई रास्ता नहीं जानता।"

यह सुन कर राजा ने पेड़ काटा और उसको काट कर उसका तना पानी में डाल कर उस पर बैठ गया और अपने आपको भगवान के हवाले कर दिया।

भगवान की कृपा से उसी समय एक गरुड़[16] उड़ता हुआ उधर आया जो उस समय वहीं पास में उड़ रहा था। उसने उस पेड़ को समुद्र में तैरता हुआ देखा तो वह उसको अपनी चोंच में दबा कर ले उड़ा।

वह उसको ले कर एक जंगल में चला गया और वहाँ जा कर उसे नीचे गिरा दिया। इस तरह राजा बच गया।

तोता भी उसके पीछे पीछे उड़ता आ रहा था। वह राजा से बोला — "राजा साहब अब आप यहीं ठहरिये। यहाँ से कहीं जाना नहीं। मैं जाता हूँ और रानी जी और घोड़े की खोज करता हूँ और फिर वापस आता हूँ।"

राजा ने उससे वायदा किया कि वह वहीं रहेगा कहीं नहीं जायेगा और तोता रानी और घोड़े को ढूँढने निकल गया। काफी इधर उधर घूमने के बाद उसको रानी मिल गयी। कप्तान उसको अपने घर ले गया था और वहाँ वह उसके सईस[17] की हैसियत से रह रही थी।

---

[16] Translated for the word "Eagle". See its picture above.

[17] Whoever drives and takes care of the horse.

जैसे ही उसने तोते को देखा तो वह ख़ुशी से चिल्ला पड़ी — "ओ तोते तुम कहाँ थे और राजा साहब कहाँ हैं। वह ज़िन्दा तो हैं न।"

तोते ने उसे सारा हाल बताया तो राजकुमारी बोली — "तोते तुम यहाँ से तुरन्त ही चले जाओ और जा कर उन्हें मेरा सारा हाल बताओ। ये जवाहरात साथ में लेते जाओ शायद उन्हें खाना खरीदने के लिये जरूरत पड़े।

उनसे यहाँ जल्दी आने के लिये कहना और कहना कि वह यहाँ आ कर इस कप्तान के घर में सईस की नौकरी कर लें। तब हम यहाँ से घोड़े पर बच निकलने की कोशिश कर सकेंगे। एक बार हम उस घोड़े पर बैठ गये तो फिर चाहे हम जमीन पर हों या समुद्र में हमें कोई नहीं रोक सकेगा।"

यह सुन कर तोता वहाँ से जल्दी से जल्दी उड़ गया और राजा के पास पहुँच कर उसको रानी का सारा हाल बताया। उसने उसको सलाह दी कि वह जल्दी से जल्दी रानी के पास चले और उसको उस कप्तान के चंगुल से छुड़ाये।

राजा तैयार हो गया और कुछ ही दिनों में रानी के पास पहुँच गया। वे दोनों एक दूसरे को देख कर बहुत ख़ुश हुए। वे लोग तो एक दूसरे से मिलने की आशा ही छोड़ चुके थे पर भगवान उन पर बहुत दयालु था जो उसने उन्हें फिर से मिला दिया।

उसी दिन शाम को राजा और रानी दोनों अपने घोड़े के बच्चे पर चढ़े और शहर से बाहर चल दिये। उनका तोता उन्हें रास्ता दिखा रहा था। जल्दी ही वे राजा के देश पहुँच गये। वहाँ उनके लोगों ने उनका दिल से स्वागत किया।

उसके बाद राजा और रानी अपने आखिरी दिनों तक खुशी खुशी रहे। तोते को उन्होंने अपना खास वजीर बना लिया। उसने उनके राज्य की खुशहाली को बढ़ाने में उनका बहुत साथ दिया।

4 गुल्लाला शाह[18]

एक बार की बात है कि एक देश में एक बहेलिया[19] रहता था। वह अपने निशाने के लिये दूर दूर तक मशहूर था। वह रोज रोज बहुत सारी चिड़ियें मार देता था। कुछ को वह खुद इस्तेमाल कर लेता था और कुछ को वह बेच देता था। पर जितनी जल्दी वह कमाता था उतनी ही जल्दी वह उसे खर्च भी करता था।

यह कुछ दिनों तक तो ठीक से चला बल्कि यों कहो कि कुछ साल तो बहुत खुशी से निकल गये पर धीरे धीरे कुछ ऐसा हुआ कि चिड़ियें कम होने लगीं तो उसके रोज के शिकार में कमी होने लगी।

शिकार में कमी होने लगी तो उसकी आमदनी कम होने लगी। अब वह दुखी और चिन्तित रहने लगा और यही सोचता रहता कि वह पैसा कमाने के लिये क्या करे।

जब उसका यह हाल चल रहा था तो राजा हंस[20] ने चिड़ियों की दुनियाँ की सब चिड़ियों को बुलाया साथ में जो थोड़ी बहुत चिड़ियें उस बहेलिये के जंगल में बची थीं उनको भी बुलाया।

---

[18] Gullala Shah. A folktale of Kashmir, India.
Taken from the book "Folk-Tales of Kashmir", by James Hinton Knowles. 2nd edition. London, Kegan Paul. 1887. Hindi translation of this book is available with me as e-Book in 4 parts.

[19] Translated for the word "Fowler".

[20] Translated for the word "Swan"

यह एक बहुत बड़ी कौन्फरैन्स थी इसलिये इसका इन्तजाम भी बहुत बढ़िया किया गया था। इसमें काफी काम हुआ हर चिड़िया को बोलने का मौका मिला और हर चिड़िया ने जो कुछ देखा और जो कुछ सुना उससे वह बहुत खुश थी।

आखिर कौन्फरैन्स खत्म हुई। सब चिड़ियें अपने अपने देश चली गयीं पर वे थोड़ी सी चिड़ियें जो बहेलिये के देश से आयी थीं वहाँ से जाने के लिये तैयार नहीं थीं। यह देख कर राजा हंस ने उनके वहाँ से न जाने की वजह पूछी।

चिड़ियें बोलीं — "ओ राजा हमारे देश में एक बहेलिया रहता है जिसका निशाना बहुत अच्छा है। वह चिड़ियों को बिना चेतावनी दिये ही जाल में फाँस लेता है। हमारे बहुत सारे भाई बहिनों को उसने मार दिया है।

कुछ समय पहले हम लोग बहुत सारे थे पर अब आप देखें कि हम लोग कितने कम रह गये हैं। हम आपसे दया की भीख माँगते हैं आप हमें इस बेरहम आदमी से छुटकारा दिलायें।"

यह सुन कर राजा हंस को बहुत दुख हुआ। वह तुरन्त ही उनके दुख को दूर करने के बारे में सोचने लग गया। उसके पास दो मुख्य मंत्री थे उल्लू और तोता[21]

[21] Owl and Parrot. See their pictures above. Owl is above and parrot is below.

जिनको वह बहुत चाहता था और उनकी सलाह भी वह हमेशा मानता था।

सो इस समय उसने उन दोनों को बुलाया और पहले उल्लू की तरफ देख कर बोला — "उल्लू भाई मैं सब चिड़ियों का राजा हूँ और तुम मेरे मंत्री हो। मेरी प्रजा का एक हिस्सा एक बहेलिये से बहुत दुखी है। उसका निशाना कभी नहीं चूकता और उसके जाल में चिड़ियें बहुत जल्दी फँस जाती हैं पर वे अपना देश नहीं छोड़ना चाहतीं। मेहरबानी कर के उनके वहाँ ज़िन्दा रहने कोई इन्तजाम करो।"

उल्लू को राजा का यह मुश्किल हुक्म सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ पर तोते के ज़्यादा ज्ञान और अक्लमन्दी की याद करते हुए वह बोला — "ओ राजा आपका यह हुक्म मैं पूरा नहीं कर सकता क्योंकि मैं दिन में नहीं देख सकता। अगर आपकी इजाज़त हो तो आपका यह हुक्म तोता बजा कर लायेगा।"

यह सुन कर राजा हंस ने तोते की तरफ देखा और उसको अपना हुक्म बजा लाने का हुक्म दिया। तोता तुरन्त ही राजी हो गया उसने राजा को सिर झुकाया और राजा का हुक्म बजाने चल दिया जो उसने अभी अभी उल्लू को दिया था।

वह उन दुखी चिड़ियों के पास पहुँचा जो उस बहेलिये के देश से आयी थीं और उनसे थोड़ा धीरज रखने के लिये कहा और कहा कि वे अपनी मनमानी न करें बल्कि उसकी सलाह मानें। भगवान

उनके लिये सब भला करेगा। सब चिड़ियों ने एक आवाज में कहा कि वे उसकी बात मानेंगी।

जब बहेलिये को इस बात का पता चला कि उसके देश में अब एक भी चिड़िया नहीं रह गयी है तो उसके दुख की तो कोई हद ही नहीं रही। वह बहुत ही नाउम्मीद हो गया। वह नहीं जानता था कि अब वह अपने परिवार को खाना कहाँ से खिलाये।

अपने भूखे बच्चों की तरफ देखना बड़े दुख का काम था खास कर के जब वह शाम को बिना शिकार के घर लौटता था और उसके भूखे बच्चे खाने के लिये उसके चारों तरफ लिपट जाते थे। और फिर जब वे देखते थे कि उनके पिता के पास खाना नहीं है तो वे इधर उधर चले जाते थे।

जब तक चिड़ियाँ कौन्फ़रैन्स में थीं तब तक ऐसे ही चलता रहा कि एक दिन उसके बच्चों ने उससे कहा कि अब चिड़ियें दिखायी देने लगी हैं। यह सुन कर बहेलिये ने फिर से अपना जाल उठाया और तीर कमान उठाया और चिड़ियें पकड़ने चल दिया।

उसने अपना जाल वहाँ बिछा दिया जहाँ चिड़ियों के आने की बहुत उम्मीद थी। वह उस समय गुस्से के मारे इतना भयानक और इतना पक्के इरादे वाला लग रहा कि इस बार चिड़ियें पहले से भी ज़्यादा डरी हुई थीं।

वे तुरन्त तोते के पास गयीं और बोलीं — "अबकी बार फलाँ फलाँ जगह बहेलिये ने अपना जाल बिछाया है। आप हमें बताइये

कि हम उससे कैसे बचें क्योंकि हमें यह अच्छी तरह मालूम है कि अगर हम उसके जाल से न पकड़े गये तो वह हमें तीर मार कर मार देगा।"

तोते ने कहा कि वे अलग अलग जगहों पर जा कर छिप जायें और उसने उनसे वायदा किया कि वह उनकी सुरक्षा का हमेशा के लिये इन्तजाम कर देगा। यह सुन कर वे सब चिड़ियें वहाँ से उड़ गयीं और अलग अलग जगह जा कर छिप गयीं।

तब तोता सीधा बहेलिये के जाल की तरफ गया और जा कर उसके जाल में फँस गया। पर उस दिन कोई और चिड़िया उसके हाथ नहीं लगी यह देख कर बहेलिया तो जैसे पागल सा हो गया।

जब वह घर पहुँचा तो रोज की तरह उस दिन भी उसके बच्चे उसके चारों तरफ आ कर घिर गये और उससे पूछा कि आज उसको क्या मिला। वह बोला — "तुम्हारी बदकिस्मती से मुझे आज केवल यह तोता मिला।"

यह कह कर उसने अपने थैले में से एक तोता बाहर निकाल दिया। वह उसको खाने के लिये मारने ही वाला था कि तोते ने उसका इरादा भाँप कर उससे कहा — "ओ बहेलिये तुम मुझे क्यों मारना चाहते हो। क्या तुमको मालूम नहीं कि मेरा माँस खाने के लिये ठीक नहीं है। और अगर तुमने मुझे खा भी लिया तो इतने छोटे से कौर से तुम्हारी और तुम्हारे परिवार की भूख कैसे शान्त होगी।

मेरे विचार से तो मुझे मारने से अच्छा यह होगा कि तुम मुझे बाजार में किसी तोता बेचने वाले को बेच दो और उस आये पैसे से कई दिनों का राशन खरीद लो।"

बहेलिये की समझ में यह अक्लमन्दी की बात आ गयी सो उसने उसको एक सुरक्षित जगह रख दिया। उसने सोचा कि वह अगली सुबह जल्दी उठेगा और उसको बाजार बेचने के लिये ले जायेगा।

अगले दिन वह सुबह जल्दी उठा और तोते को ले कर बाजार चल दिया। उसने वह तोता बेचने के लिये रख दिया। उसने आवाज लगानी शुरू की "इसे कौन खरीदेगा इसे कौन खरीदेगा। मेरे पास यह तोता है इसे कौन खरीदेगा।" आवाज सुन कर बहुत सारे लोग उसको देखने के लिये रुक गये।

वे सब उससे बड़े खुश दिखायी दे रहे थे। बहुतों ने तो उसको खरीदने की इच्छा भी प्रगट की पर क्योंकि वे सब उसके लिये बहुत कम पैसा दे रहे थे इसलिये तोते ने उनके साथ जाने से मना कर दिया।

तोते का व्यवहार देख कर बहेलिया बहुत नाराज हो गया। वह सारा दिन गर्मी में उस तोते को बेचने के लिये घूमता रहा पर तोता नहीं बिका। यह देख कर वह बहुत ही थक गया और नाउम्मीद हो गया। जब वह घर पहुँचा और फिर से अपना परिवार और बच्चे भूखे और दुखी देखे तब तो उसका गुस्सा सातवें आसमान पर चढ़

गया। उसने सोच लिया कि वह उस तोते को वहीं और उसी समय मार देगा।

बेचारा तोता। उसको लगा कि बस अब उसकी ज़िन्दगी का आखिरी पल आ पहुँचा है। फिर भी उसने बहेलिये से थोड़ा धीरज रखने के लिये कहा।

वह बोला — "थोड़ा धीरज रखो। तुम देखोगे कि इस देर करने में मेरा अपना कोई मतलब नहीं है। जब मैंने इतनी छोटी छोटी कीमतों के लिये बिकने से मना किया तो मेरा मतलब कोई बुरा नहीं था। मेहरबानी कर के यह भी मत सोचो कि अपनी ज़िन्दगी बचाने के लिये मैं तुम्हारा उपकार नहीं मान रहा हूँ।

अगर तुम कल तक इन्तजार करो और मुझे एक सुन्दर से पिंजरे में रख दो। फिर उस पिंजरे को एक सुन्दर से कपड़े से ढक दो और तब मुझे राजा के महल के आसपास ले कर जाओ तो शायद कोई अमीर आदमी पिंजरे को देख कर यह पूछ ले कि इसमें क्या है। और यह भी हो सकता है कि उनमें से किसी की मुझमें रुचि हो जाये और वह मेरी कीमत भी पूछ ले।

अगर ऐसा हो जाये तो पहले की तरह से पैसे का सौदा तुम मुझ पर छोड़ देना। उससे कहना कि मेरी कीमत बहुत है और अपनी कीमत मैं उसको अपने आप खुद बताऊँगा।" बहेलिये ने तोते की सलाह की फिर तारीफ की और फिर राजी हो गया।

अगले दिन उसने तोते को एक सुन्दर से पिंजरे में रखा और उसको एक सुन्दर से कपड़े से ढक कर राजा के महल की तरफ चल दिया। राजा के कई रानियाँ थीं पर उनमें से किसी के कोई बच्चा नहीं था सिवाय एक रानी के। उसके एक बेटी थी।

उसकी यह बेटी बड़ी हो कर इतनी सुन्दर और अच्छी हो गयी थी कि राजा उसको बहुत प्यार करता था। वह हमेशा उसको अपनी आँखों के सामने ही रखता था और उसकी कोई ऐसी इच्छा नहीं थी जिसको वह अपनी पूरी ताकत लगा कर पूरी न करता हो।

एक बार उसने एक चिड़िया की माँग की थी जो बात कर सके सो उसके लिये वह बड़ी लगन से ऐसी चिड़िया की तलाश कर रहा था सो इस समय उस बहेलिये का वहाँ आना बड़े मौके की बात थी।

जब बहेलिया महल के चारों तरफ घूम रहा था तो राजा का मुख्य मंत्री वहाँ से गुजर रहा था। बहेलिये ने उसको झुक कर सलाम किया तो तोते ने भी पिंजरे के अन्दर से उसे सलाम किया।

जब उसने पिंजरे में से तोते का सलाम सुना तो वह आश्चर्य में पड़ गया। उसके मुँह से निकला — "अरे वाह। कितनी अजीब बात है। ज़रा पिंजरे के ऊपर से कपड़ा तो हटाओ मैं भी तो इस आश्चर्यजनक चिड़िया को देखूँ तो कि यह कैसी है।"

बहेलिये ने तोते के पिंजरे पर से कपड़ा हटाया तो वह तोते की चतुराई की बजाय उसकी सुन्दरता देख कर आश्चर्यचकित रह

गया। उसने उसे किसी भी कीमत पर खरीदना चाहा। जैसे कि पहले ही तय किया जा चुका था तोता बोला — "अठारह हजार रुपये।"

वजीर के मुँह से निकला — "अरे अठारह हजार रुपये?"

तोता फिर बोला — "हाँ अठारह हजार रुपये।"

वजीर बोला — "तब मैं तुम्हें नहीं खरीद सकता। पर मेरे मालिक राजा साहब तुम्हारी जैसी एक बोलती बात करती चिड़िया खरीदना चाहेंगे इसलिये मैं तुम्हें उनके पास लिये चलता हूँ।"

तोता राजी हो गया सो वे सब महल की तरफ चल दिये। महल के सामने वाले दरवाजे पर पहुँच कर वजीर ने पिंजरा लिया और उसे ले कर महल के अन्दर चला गया। राजा साहब को सिर झुका कर उसने पिंजरा राजा के सामने रख दिया और बोला "शायद हुजूर की बहुत दिनों की इच्छा पूरी हो जाये।"

जैसे ही वजीर ने पिंजरा राजा के सामने रखा तो तोते ने बड़ी साफ आवाज में उसको सलाम किया। राजा ने आश्चर्यचकित हो कर वजीर से पूछा कि इतनी चतुर और शानदार चिड़िया उसको कहाँ से मिली।"

उसने आगे कहा — "मैं तो ऐसी चिड़िया की कब से तलाश में था। तुम इसको मुझे बेच दो। जो तुम चाहो वह इसके लिये मुझसे ले लो मैं तुम्हें दे दूँगा।"

वजीर बोला — "राजा साहब यह चिड़िया मेरी नहीं है। मुझे एक गरीब बहेलिया मिल गया था जो इसको लिये महल के आसपास घूम रहा था। और यह मुझे मालूम था कि सरकार को एक ऐसी चिड़िया की जरूरत थी सो पहले तो मैंने इसे खरीदने की कोशिश की पर पाया कि इसकी कीमत तो मैं जितनी दे सकता था उससे कहीं ज़्यादा है सो उस आदमी को मैं यहाँ ले आया। अगर आप इजाज़त दें तो उस आदमी को यहाँ बुला लूँ।"

राजा ने इजाज़त दे दी। बहेलिये को अन्दर बुलाया गया। जब राजा उसे खरीदने के लिये तैयार हो गया तो उसने बहेलिये से उसकी कीमत पूछी कि वह जो चाहे माँग ले वह उसकी वही कीमत दे देगा।

बहेलिये ने काँपते हुए कहा — "मालिक मैं इस चिड़िया की कीमत नहीं बता सकता। मैं केवल इतना जानता हूँ कि इसे काफी पैसे दे कर खरीदा गया था। बाकी राजा साहब की इच्छा। यह चिड़िया अपनी कीमत अपने आप बतायेगी।"

तब राजा तोते की तरफ घूमा और उससे उसकी कीमत पूछी। इस पर तोता बोला — "अठारह हजार रुपये।"

राजा ने आश्चर्य से पूछा — "अठारह हजार रुपये? यह तो बहुत ज़्यादा हैं। मुझे यकीन है कि तुम मुझसे मजाक कर रहे हो।"

राजा ने कुछ कम दाम में उसका सौदा करना चाहा पर तोता उससे कम पैसे को बिकने में तैयार नहीं था उधर राजा भी उसको

खरीदने को तैयार बैठा था सो अठारह हजार रुपये बहेलिये को दे कर राजा ने वह तोता खरीद लिया। तोते को उसके सुन्दर पिंजरे के साथ राजा की बेटी के पास ले जाया गया।

अब तो बहेलिया एक अमीर आदमी हो गया था। पैसे उसके पास छप्पर फाड़ कर गिरे थे। अठारह हजार रुपये एक ही दिन में। बहुत खुशी खुशी वह घर लौटा।

उसके परिवार ने जब यह अच्छी खबर सुनी तो वह भी बहुत खुश हुआ। उस दिन उनके यहाँ बहुत दिनों बाद बहुत बढ़िया खाना बना। खाना खा कर वे अपने आगे के समय का प्लान बनाने लगे।

बहेलिया बोला — “हम इन अठारह हजार रुपयों का क्या करेंगे। क्या हम यह देश छोड़ दें जहाँ हम रोज दुखी रहते हैं और किसी अच्छी जगह चले जायें। या फिर हम यहीं रहें और इन पैसों से कोई व्यापार शुरू करें।

पैसा और इ़ज़्ज़त बढ़ जाने से अब हमको पुरानी मुसीबतों को भूल जाना चाहिये और नया कुछ सोचना चाहिये। ओह मेरी पत्नी और बच्चों कुछ तो कहो कि हम इनसे क्या करें।”

वे लोग इसी तरह बात कर रहे थे कि अचानक उनको एक बहुत बड़ा शोर सुनायी दिया। उस शोर से भी ऊँची आवाज में कोई बहेलिये का नाम ले कर चीख रहा था। कुछ सिपाही वहाँ आ गये थे जिनको राजा ने बहेलिये को महल बुलाने के लिये भेजा था।

बेचारा बहेलिया तो डर के मारे कॉपने लगा — "अरे क्या राजा ने मुझे बुलाया है। इस समय रात को राजा को मुझसे क्या चाहिये। शायद राजा अपनी खरीद से नाखुश हो और अपने पैसे वापस लेना चाहता हो। या फिर ऐसा भी हो सकता है कि तोते ने मेरी कुछ बुराई कर दी हो। उफ़ अब मैं क्या करूँ।"

मगर उसके सब शक गलत निकले क्योंकि राजा ने उसे उस बात करने के सम्बन्ध में उसे बुलाया था जो उसने अभी अभी तोते से की थी। उस बात में तोते ने राजा को अपना उद्देश्य बताया था।

वह राजा से यह चाहता था कि क्योंकि अब उस बहेलिये के पास काफी पैसा था तो राजा उसको यह हुक्म दे कि वह चिड़ियों को मारने का काम छोड़ दे और कोई व्यापार करना शुरू कर दे।

राजा ने ऐसा ही किया। बहेलिया राजी हो गया और बोला कि उसका भी यही विचार था। उसने राजा को अपना तीर कमान और चिड़िया पकड़ने वाला जाल भी महल भेजने का वायदा किया ताकि राजा को यह विश्वास रहे कि वह अब आगे से कोई चिड़िया नहीं मारेगा। यह कह कर बहेलिया वहाँ से चला गया।

जैसे ही बहेलिया राजा के पास से चला गया तो राजा ने अपने राज्य में यह मुनादी पिटवा दी कि आगे से कोई चिड़िया नहीं मारेगा। और जो कोई भी राजा के इस हुक्म को न मानता हुआ पकड़ा गया उसको कड़ी से कड़ी सजा मिलेगी।

इसलिये इसके बाद चिड़ियों के राज्य में अब शान्ति रहने लगी। वे अब बहुत जल्दी जल्दी बढ़ने लगीं और उनके गीत अब सारा दिन हवा में गूँजते रहते।

राजा को कृतज्ञता दिखाने के लिये तोते ने सोचा कि वह राजा के महल में ही रहेगा। उसने शाही परिवार में हर एक से दोस्ती कर ली थी तो सब उसको बहुत प्यार करते थे। खास कर के राजकुमारी वह तो अब सारा दिन उसी के साथ रहती थी। अब वह राजा के पास भी नहीं जाती थी बल्कि हमेशा तोते के साथ ही खेलती रहती और उससे बात करती रहती।

वह सोचती रहती "अगर यह तोता उड़ गया या मर गया तो मेरा क्या होगा। पौली तुम मुझे प्यार करते हो या नहीं। तुम मेरे पास से कभी जाओगे तो नहीं। ओह तुम मुझसे वायदा करो कि तुम मुझे छोड़ कर कभी नहीं जाओगे।"

जब इस तरह कुछ समय तक चलता रहा तो राजा कुछ गुस्सा हो गया क्योंकि अब उसकी बेटी उसके पास नहीं आती थी। क्योंकि वह अपनी बेटी को बहुत प्यार करता था तो वह उससे बिल्कुल अलग नहीं रह सकता था इसलिये उसको अपनी बेटी का हर समय तोते के साथ रहना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था।

एक शाम उसने अपने सलाहकारों को यह सलाह माँगने के लिये बुलाया कि इस बारे में कौन सा रास्ता अपनाया जाये। वह क्या करे कि उसकी बेटी फिर से उसके पास वापस आ जाये। वह न तो यह

चाहता था कि वह चिड़िया को मारे और साथ में वह उसे मारने डरता भी था पर फिर वह क्या करे।

उन्होंने उसको सलाह दी कि उस तोते को दरबार में या बागीचे में लाया जाये जहाँ भी उसकी बेटी जाती हो क्योंकि राजा जानता था कि जहाँ भी तोता जायेगा उसकी बेटी भी वहीं जायेगी। राजा इस सलाह से बहुत खुश हुआ। तुरन्त ही उसने तोते को दरबार में लाने का हुक्म दिया।

अब यह तोता तो बहुत होशियार था। दुनियाँ में कहाँ क्या हो रहा था इसके पास यह सब जानने की ताकत थी और जब भी कोई खास खबर होती तो वह अपनी मालकिन को बता देता। उसने राजा का यह प्लान राजकुमारी को बता दिया कि राजा किस तरह अपनी बेटी को अपने पास वापस लाना चाहता था।

बाद में तोते ने कहा – "अच्छा है कि तुम खुद उसके पास चली जाओ। तुम मुझे यहीं छोड़ दो और तुम चली जाओ।"

यह सुन कर राजकुमारी राजा के पास चली गयी। जब वह दरबार जा रही थी तो आधे रास्ते में ही उसे राजा का दूत मिल गया। उसने उससे पूछा कि वह क्या करने जा रहा था तो उसने उसे बताया कि वह तोते को दरबार में लाने जा रहा था।

राजकुमारी ने उससे कहा कि उसको जाने की जरूरत नहीं है वह सब ठीक कर लेगी। वह बोली तुम मेरे साथ वापस आओ मैं राजा साहब के पास ही जा रही हूँ।

जैसे ही राजकुमारी उसको वहाँ छोड़ कर राजा के पास गयी तोते को अपने पुराने घर और साथियों की याद आयी। उसने उनसे एक बार फिर मिलने की सोची। उसको लगा कि जब तक राजकुमारी राजा से मिल कर वापस आती है वह भी अपने पुराने लोगों से मिल कर वापस आ जायेगा।

उसने अपने पुराने टूटे हुए पंख तोड़ कर नीचे फर्श पर फेंके जिससे वह और ज़्यादा सुन्दर लगने लगा और वहाँ से उड़ चला। वह अपने घर सुरक्षित पहुँच गया।

सबने उसका वहाँ दिल से स्वागत किया। वे सब उससे मिल कर बहुत खुश थे। उसकी गैरहाजिरी में उनके साथ क्या कुछ हुआ उनको वह सब उसको बताना था।

उन्होंने अपनी बातचीत शुरू ही की थी कि उनको बात करते घंटों बीत गये। जब शाम के साये फैलने लगे तो तोते को याद आयी कि उसके तो जाने का समय हो गया। सबने उससे कुछ देर और ठहर जाने की विनती की पर उस सबको ठुकरा कर तोता वहाँ से चल दिया।

वापस आते समय वह एक बागीचे में रुका जो समुद्र के किनारे था। वहाँ बहुत सारे फूल खिले हुए थे। उसने वहाँ से दो सबसे ज़्यादा सुन्दर फूल तोड़े और वापस राजकुमारी के पास उड़ चला।

राजकुमारी दरबार से बहुत पहले ही वापस आ चुकी थी और यह देख कर कि उसका प्यारा तोता वहाँ नहीं है उसके लिये चिन्ता

कर रही थी। उसने फर्श पर पड़े कुछ पंख देखे तो उसको बहुत दुख हुआ। उसको लगा कि जरूर ही कहीं से कोई बिल्ली कमरे में आ गयी थी और उसे खा गयी है।

काफी देर रो लेने के बाद वह राजा के पास गयी और उसे अपनी कहानी बतायी और राजा से प्रार्थना की कि वह राज्य की हर बिल्ली को मरवाने का हुक्म सुना दे।

हालाँकि राजा को तोते की ऐसी कोई बहुत ज़्यादा फिक्र नहीं थी फिर भी वह अपनी बेटी की हर इच्छा पूरी करना चाहता था सो उसने राज्य भर की सारी बिल्लियों को मरवाने का हुक्म दे दिया। रात होने से पहले पहले सैंकड़ों बिल्लियाँ मारी जा चुकी थीं।

पर राजकुमारी को इस बदले से रत्ती भर भी चैन नहीं पड़ा था। वह अपने कमरे में वापस चली गयी और दरवाजा बन्द कर के तब तक रोती रही जब तक वह रोते रोते थक नहीं गयी।

वह बहुत दुखी हो कर अपने तोते को ही पुकारती रही "मेरे प्यारे पौल तुम कहाँ हो। कहाँ हो मेरे प्यारे पौल। मैं भी कितनी बेरहम थी जो मैंने तुमको पहली बार अकेला छोड़ा।"

इस तरह वह अपनी पालतू चिड़िया के लिये रोती रही। उस रात बहुत देर बाद उसको नींद आयी और जब आयी भी तो बहुत थोड़ी देर के लिये।

वह जल्दी ही जाग गयी और फिर अपने दुख में दुखी हो गयी। वह अपने बिस्तर से उठी और अपने आपको लटका कर मार कर इस दुख का अन्त करने की सोचा।

उसने एक रस्सी अपने कमरे की छत के शहतीर[22] में लगे कुंडे में बाँधी। उसमें एक फन्दा लगाया और उसको अपने सिर में डालने वाली ही थी कि तोता खिड़की के रास्ते उड़ कर कमरे में आ गया। अगर उसको एक पल की भी देर हो जाती तो उसको अपनी मालकिन की लाश ही देखने को मिलती।

जब उन दोनों ने एक दूसरे को इस तरह से देखा तो दोनों कितने खुश हुए इस खुशी को कौन बता सकता है। राजकुमारी ने चिड़िया को पकड़ कर अपनी छाती से लगा लिया और रोते हुए उसे बताया कि उसके टूटे हुए पंख देख कर कैसे उसने सोच लिया था कि उसके तोते को कोई बिल्ली खा गयी होगी और इसी वजह से उसने राजा से कह कर राज्य की सैंकड़ों बिल्लियाँ मरवा दीं।

और फिर कैसे उसको अकेलापन लगा तो वह आत्महत्या करने जा रही थी क्योंकि वह उसके बिना नहीं रह सकती थी।

राजकुमारी की कहानी सुन कर तोते का दिल भर आया कि वह राजकुमारी से यह कहना ही भूल गया कि वह अब राजा से कह कर

[22] Translated for the word “Beam” – long wooden logs in the ceiling to support it. See its picture above.

अपना पुराना वाला हुक्म वापस ले ले और राज्य की और भोलीभाली बिल्लियों को मरने से रोक ले। इसके बाद कुछ देर तक वे बिल्कुल चुपचाप रहे और एक दूसरे से मिलने की खुशी में डूबे रहे।

कुछ देर बाद तोते ने ही चुप्पी तोड़ी। उसने अपनी मालकिन को बताया कि किस तरह से उसके जाने के बाद उसको अपने लोगों से मिलने की इच्छा हो आयी थी और फिर उनसे उसकी क्या क्या बातचीत हुई और लौटते समय उसने क्या क्या देखा। उसने उसको रास्ते के समुद्र के पास के बागीचे से लाये दोनों फूल भेंट किये।

फूल देख कर राजकुमारी बहुत खुश हुई। उनकी सुन्दरता देख कर और महक सूँघ कर तो वह बेहोश सी ही हो गयी। उसने इतने सुन्दर फूल पहले कभी नहीं देखे थे। जब वह ज़रा होश में आयी तो वह वे फूल राजा को दिखाने ले गयी।

राजा और सारे दरबारियों ने भी जब उन फूलों को देखा तो उन्होंने भी उनकी बहुत तारीफ की। उन लोगों ने भी ऐसे फूल पहले कभी नहीं देखे थे। उनकी खुशबू से सारा दरबार महक रहा था।

यहाँ तक कि दूर रह रहे लोग जो महलों में रह रहे थे और जो नौकरों के घर में रह रहे थे उन्होंने भी इस महक को महसूस किया और आपस में पूछने लगे कि यह महक कहाँ से आ रही है।

राजा ने पूछा — "ये तुम्हें कहाँ से मिले?"

राजकुमारी बोली — "ये मुझे तोते ने दिये पिता जी। उसने मुझे बताया कि ये उसने उन फूलों वाले पेड़ों से तोड़े थे जो समुद्र के किनारे वाले परियों के राजा की बेटी के बागीचे में लगे हुए थे। वहाँ ये बारह हजार थे और उनका हर एक फूल बारह हजार रुपये का था।"

राजा बोला — "तुम ठीक कहती हो। ऐसे फूल तो किसी स्वर्ग के बागीचे के ही हो सकते हैं।"

राजकुमारी ने राजा से कहा कि वह उसके लिये वहाँ से कुछ फूल और मँगवा दे। अब यह तो राजकुमारी की बहुत मुश्किल माँग थी फिर भी राजा ने उससे वायदा किया कि वह कोशिश करेगा। तुरन्त ही उसने अपने कुछ दूत उन फूलों की खोज में भेज दिये।[23]

कई दिनों तक ढूँढने के बाद दूतों ने आ कर राजा को बताया कि वे उनको कभी नहीं पा सकते। पर राजा भी उन फूलों की खोज को इतनी जल्दी छोड़ने वाला नहीं था। उसने हुक्म दिया कि आसपास के राज्यों को भी यह सूचना भेज दी जाये कि अगर किसी ने ऐसे फूल कहीं देखे हों तो वह हमें बताये।

और वह कोई भी हो जो भी हमको वे फूल ला कर देगा हम अपनी सुन्दर बेटी की शादी उससे कर देंगे। ऐसा कर दिया गया पर सालों बीत गये इसकी कोई खबर नहीं आयी।

---

[23] One suspicion arises here that when the king knew that parrot knew the place of those flowers then why didn't he send the parrot to bring those flowers?

इस राजा के देश में एक व्यापारी रहता था जो बहुत ज़्यादा अमीर था और जिसकी अपने इस अथाह पैसे की वजह से सामान्य लोगों में बहुत इज़्ज़त थी। लोग इसकी बहुत तारीफ करते थे और चापलूसी करते थे जिसने इसको और बहुत घमंडी बना दिया था। यह इतना घमंडी हो गया था कि किसी की नहीं सुनता नहीं था राजा तक की भी नहीं।

एक दिन यह व्यापारी मर गया और इसके मरने के बाद क्योंकि इसके कोई भाई या लड़का नहीं था तो इसकी सारी जायदाद और पैसा राजा के पास आ गया था। वह दिन व्यापारी की पत्नी के लिये बहुत दुख का दिन था जिस दिन उसका पति मरा।

बेचारी स्त्री। वह बहुत कमजोर और बीमार थी। उसको बच्चे की आशा थी। उसको पता नहीं था कि वह क्या करे। खैर अगर वह मरना नहीं चाहती थी तो उसको कोई न कोई काम तो करना ही था सो वह एक किसान के पास काम करने चली गयी।

समय आने पर उसके बच्चा हुआ। उस बच्चे की किस्मत अच्छी थी। वह धीरे धीरे तन्दुरुस्त और अच्छा बढ़ने लगा। जब वह इतना बड़ा हो गया कि वह कुछ काम कर सके तो किसान ने उसको जानवर चराने के लिये मैदानों में भेजना शुरू कर दिया।

कुछ दिनों में उसको इतना समय भी मिलने लगा कि वह किसान के बच्चों के साथ स्कूल जाने लगा क्योंकि वह एक अच्छा बच्चा था और एक बड़ा और अक्लमन्द आदमी बनना चाहता था।

क्योंकि उसकी माँ को यह शक था कि वह बुरे समय में पैदा हुआ था तो अभी तक उसने उसका कोई नाम नहीं रखा था। उसके स्कूल के साथी लोग उसको "खरिया" कह कर बुलाते थे क्योंकि उसके सिर पर खुजली के निशान थे।[24]

स्कूल के मास्टर ने उसके अन्दर के छिपे गुणों को बहुत जल्दी पहचान लिया और यह देख कर कि अपनी पढ़ाई और काम में वह एक मेहनती बच्चा था उसने उसके ऊपर खास ध्यान देना शुरू कर दिया।

वह उसे जितना भी सिखा पढ़ा सकता था उसने उसको उतना सब सिखाना पढ़ाना शुरू कर दिया। उसने उसको पढ़ने के लिये किताबें भी दीं। कुछ ही समय में खरिया एक बहुत ही होशियार विद्वान बन गया। उसके सारे साथी उससे जलने लगे।

एक दिन ऐसा हुआ कि खरिया अपने मालिक किसान के किसी काम से गया हुआ था कि उसको राजा का एक दूत मिला जो राजा के लिये वे सुन्दर फूल ढूँढ रहा था। उसने दूत से पूछा — "तुम कहाँ से आये हो? किसलिये आये हो और तुम्हारा नाम क्या है?"

दूत ने राजा के सन्देश का कागज उसको दिखा दिया। खरिया ने उसे पढ़ा और बोला — "मुझे रास्ते के खर्च के लिये कुछ पैसे दो मैं इन फूलों को ले आऊँगा।"

---

[24] Translated for the word "Scabs".

दूत लड़के के तैयार और साफ जवाब से बहुत खुश हुआ। उसने उसको रास्ते के लिये जरूरी खर्चा दिया और राजा की एक बन्द चिट्ठी दी और वापस राजा के पास अपनी खोज की सफलता बताने के लिये दौड़ पड़ा।

खरिया सबसे पहले अपनी माँ के पास दौड़ा गया और उसे बताया कि वह इस काम की कोशिश करना चाहता है। उसकी माँ ने उसे बहुत समझाया कि वह ऐसी बेवकूफी न करे पर वह उसकी बात सुनने वाला नहीं था। फिर वह अपने मालिक किसान और मास्टर जी के पास गया और उनको अपना इरादा बताया। उनसे उसने छुट्टी ली और अपनी यात्रा पर रवाना हो गया।

दो तीन दिन में वह एक जंगल में पहुँचा जहाँ उसको एक बहुत ही सुन्दर और लम्बा आदमी मिला। उसने उस लम्बे आदमी का हाथ पकड़ा और बोला "सलाम।"

उस आदमी ने उसके सलाम का जवाब दिया और उससे पूछा कि वह कहाँ से आया था कब आया था और कहाँ जा रहा था। लड़के ने उसे सब कुछ बता दिया जैसा कि उसने अपनी माँ मालिक और मास्टर जी से कहा था।

उसने उससे कुछ भी नहीं छिपाया। उस लम्बे आदमी ने उसको आशीर्वाद दिया उसके लिये प्रार्थना की और फूलों की खोज में जाने के लिये कह दिया।

पर लड़के ने उसका हाथ नहीं छोड़ा जब तक कि उसने उसको यह नहीं बता दिया कि उसको किस दिशा में जाना चाहिये। यह देख कर कि लड़का वाकई फूल लेने जाना चाहता है और एक लायक बच्चा है उसने उसको बताया कि वह कौन था और कैसे अपनी पवित्रता के सहारे वह उसके लिये वही ला सकता था जो उसे चाहिये।

खरिया बोला — "यही तो मैं आपसे चाहता था। मुझे लगा कि आप कोई पवित्र आदमी[25] हैं और आपके अन्दर बहुत ताकत है। मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप मुझे यह बतायें कि मुझे ये फूल मिलेंगे या नहीं। मेरी किस्मत में क्या लिखा है और मेरा नाम क्या है।"

उस लम्बे आदमी ने जवाब दिया — "मेरे बच्चे। तुमको ये फूल मिल जायेंगे। तुम्हारी किस्मत अच्छी है और तुम्हारा नाम गुल्लाला शाह है।"

कह कर उसने अपना बॉया हाथ खरिया के सिर पर रखा और एक खोखला कद्दू ले कर उसमें पानी भरा और उसके ऊपर डाल दिया। इससे लड़के की खुजली और जो और कुछ कमियॉ थीं वह सब गायब हो गयीं। अब वह बहुत सुन्दर हो गया था।

यह करने के बाद आदमी ने उससे जाने के लिये कहा। जब खरिया जा रहा था तो उसने उसको फिर से आशीर्वाद दिया।

---

[25] Translated for the words "Holy Man"

कई दिनों की यात्रा के बाद खरिया एक जगह पहुँचा जहाँ उसने एक बूढ़ी विधवा के घर में ठहरने की जगह माँगी। वह उस बुढ़िया से बहुत ही इज़्ज़त और नम्रता से बात करता था। उसको खाना देता था और उसकी दूसरी तरीके से भी सहायता करता था। वह रोज शहर में इधर उधर घूमने जाता और हमेशा ही उस बुढ़िया के लिये कुछ न कुछ ले कर आता था।

एक दिन जब वह उस देश के राजा के महल के पास की नदी के किनारे नहा रहा था तो इत्तफाक से राजकुमारी ने उसको देख लिया और यह देख कर कि वह लम्बा और सुन्दर है अपनी एक दासी को उसे बुलाने भेजा।

खरिया ने कहा कि वह उसके साथ जायेगा तो दासी उसको ले कर एक बागीचे में आ गयी जहाँ राजकुमारी ने उसको लाने के लिये कहा था। वे लोग वहाँ कई दिनों तक मिलते रहे और जितना ज़्यादा वे एक दूसरे से मिले वे एक दूसरे को पसन्द करने लगे।

आखिर राजकुमारी ने खरिया से शादी करने का फैसला कर लिया। वह अपने माता पिता के पास उससे शादी करने के लिये उनकी इजाज़त लेने गयी।

राजा और रानी ने पहले उस नौजवान को देखने की और उसके बारे में जानने की इच्छा प्रगट की। सो इस बात को खरिया को बता दिया गया और उससे शाही दरबार में आने के लिये कहा गया।

कुछ दिन बाद ही राजा ने देखा कि लड़का सुन्दर है होशियार है और उसका दामाद बनने के लायक है तो उसने अपनी बेटी की शादी उसके साथ कर दी। शादी बहुत शानदार हुई उसमें बहुत पैसा खर्च किया गया। हर मौके पर बहुत शानदार खर्च हुआ।

खरिया जो अब गुल्लाला शाह के नाम से जाना जाता था अब रोज दरबार में जाता था। लोग उसकी बातें बड़ी ध्यान और इ़ज़्ज़त से सुनते थे। उसकी कोशिशों से राज्य में कई नियम और कानून ऐसे बनाये गये जिनसे राज्य की बहुत उन्नति हुई। पिछली गलतियाँ भी सुधारी गयीं।

एक दिन गुल्लाला शाह ने राजा से दरबार में न आने की इजाज़त माँगी क्योंकि वह शिकार खेलने जाना चाहता था। राजा ने तुरन्त ही उसको इजाज़त दे दी और उसके साथ जाने के लिये उसको कई सिपाही और घोड़े दे दिये।

बीच दिन में गुल्लाला शाह का घोड़ा जिस पर वह सवार था एक शिकार के पीछे भाग चला और इतनी तेज़ भागा कि उसके साथी लोग उससे काफी पीछे रह गये। कोई दूसरा घोड़ा उसका मुकाबला नहीं कर सका सो गुल्लाला शाह अकेला पड़ गया।

आखिर वह भागता हुआ घोड़ा अचानक रुक गया क्योंकि उसको पैर किसी अनदेखी जंजीर से बाँध दिये गये थे। यह देख कर कि घोड़ा इस तरीके से बँध गया था गुल्लाला शाह उस पर से उतर पड़ा और अपना तीर कमान ले कर पहाड़ पर चढ़ गया ताकि

वह वहाँ से कुछ देख सके कि यह काम किसने किया और अगर कोई दिखायी दे जाये तो वह उसे मार सके।

जब वह पहाड़ पर चढ़ रहा था तो आधी चढ़ाई पर ही उसको एक तालाब दिखायी दिया जिसके किनारे एक पेड़ खड़ा था और उस पर बहुत सारे फूल खिले हुए थे। उस पेड़ के नीचे वह थोड़ी देर के लिये सुस्ताने के लिये बैठ गया।

जब वह वहाँ बैठा हुआ था तो एक बन्दर उसके पास आया। उसने उसको मारना चाहा सो उसने अपना तीर कमान उठाया और तीर कमान पर साधा कि बन्दर को यह पता चल गया कि वह उसको मारना चाहता था सो वह वहाँ से भाग गया और जा कर तालाब में कूद गया।

इससे गुल्लाला शाह बहुत नाउम्मीद हो गया और जहाँ वह कूदा था वहाँ कुछ देर तक देखता रहा कि वह वहाँ फिर आयेगा। पर लो वहाँ बन्दर की जगह एक बहुत सुन्दर लड़की निकल आयी। उसने पानी से बाहर निकल कर उसे चूम लिया।

गुल्लाला शाह तो यह देख कर आश्चर्यचकित रह गया पर क्योंकि वह बहुत अच्छा और पवित्र आदमी था इसलिये उसने अपनी समझ नहीं खोयी थी। उसने उस लड़की से पूछा कि वह कौन थी।

उसने देखा कि वह उसको कोई जवाब देने में हिचकिचा रही थी तो उसने उसको मारने की धमकी दी कि अगर उसने उसे जल्दी से नहीं बताया तो वह उसको मार देगा।

वह लड़की डर गयी और बोली — "मेरा नाम पंज फूल है और मैं इस देश के राजा की बेटी हूँ। मैं हमेशा अच्छी रही हूँ और अच्छा करने की कोशिश करती हूँ। हर आदमी मुझे प्यार करता है। जब में बहुत छोटी थी तो मेरे पिता ने अपने दरबान के बेटे से मेरी शादी तय कर दी थी।

समय निश्चित हो गया तैयारियाँ हो गयीं पर शादी के दिन से कुछ दिन पहले ही दरबान का बेटा रोज की तरह अपने साथियों के साथ खेलने गया। वे लोग वजीर बादशाह खेल रहे थे यानी एक बच्चा बादशाह बना हुआ था दूसरा वजीर बना हुआ था और बाकी बच्चे और औफीसर बने हुए थे। हर बच्चे को अपने अपने हिसाब से अपने अपने डायलौग बोलने थे।

उस दिन दरबान का बेटा राजा बना हुआ था और शाही सिंहासन पर बैठा था। जब वे खेल रहे थे तो असली राजा का बेटा वहाँ से गुजरा। उसने जब वह खेल देखा तो खेल वाले राजा को शाप दिया "तुम परियों के देश से नीचे गिर जाओ और जा कर मामूली लोगों के साथ रहो।"

इस शाप के साथ ही दरबान का बेटा मर गया और उसके बाद मामूली लोगों में जा कर पैदा हो गया। जब मेरी एक साथिन ने मुझे

यह बताया तो मुझे बहुत दुख हुआ क्योंकि मैं उस दरबान के बेटे को बहुत प्यार करती थी और उसके सिवा किसी और से शादी करना नहीं चाहती थी।

राजा और रानी ने मेरा मन बदलने की बहुत कोशिश की पर मैं अपने इरादे की पक्की थी। इसके बाद मेरा सारा समय लोगों की भलाई करने में और पवित्र लोगों[26] के साथ बात करने में गुजरने लगा।

आज मैं इधर पूजा करने आयी थी। एक दिन एक पवित्र आदमी इधर आया था वह मुझे बहुत अच्छा लगा तो आज मैं उससे मिलने की आशा में इधर आयी थी कि शायद आज मेरी मुलाकात उससे यहाँ फिर हो जाये।

वह मुझे मुझसे बहुत खुश लगा क्योंकि मैंने उससे जो कुछ भी माँगा वह उसने मुझे दिया। एक बार मैंने उससे पूछा कि मैं दरबान के बेटे से कैसे मिल सकती हूँ। उसने कहा कि वह उस लड़के को जानता है उसका नाम गुल्लाला शाह है और अगर मैंने उसकी बात ठीक से मानी तो मैं उसको देखने में सफल हो जाऊँगी।

मैंने उससे वायदा किया कि मैं उसकी हर बात मानूँगी। उसने फिर कहा इस बात का खास ध्यान रखना क्योंकि राजा अपने दूसरे जादुओं से तुम्हारे उससे मिलने को रोकने की पूरी कोशिश करेगा।

[26] Translated for the words “Holy Men”.

उसने मुझे अगर मुझे अपना उद्देश्य पूरा करना था तो उसको पूरा करने के लिये मोती की एक ऐसी माला दी जिस पर कोई जादू असर नहीं कर सकता था। वह माला मैं अक्सर पहनती हूँ और उसको खास तरीके से सँभाल कर रखती हूँ।

उसके बाद मैं अपने घर चली गयी। पहला मौका पाते ही मैं अपने पिता के पास गयी और जा कर उन्हें वह सब बताया जो मैंने गुल्लाला शाह के बारे में सुना था और उनसे विनती की कि वह जल्दी से जल्दी मेरी शादी उससे कर दें।

पर उन्होंने जब यह सुना तो वह बहुत परेशान हो गये और मुझसे कहा कि मैं उसे भूल जाऊँ क्योंकि अब वह एक मामूली आदमी था और एक मामूली आदमी से मेरी शादी नहीं हो सकती थी। यह शादी परियों के देश पर एक धब्बा होती।

पर मैंने सोच रखा था कि अगर मैं शादी करूँगी तो गुल्लाला शाह से ही। राजा ने मेरी तरफ गुस्से भरी नजरों से देखा और पलट कर मैंने भी। फिर मैंने महल छोड़ दिया। यही मेरी कहानी है। अब अगर तुम गुल्लाला शाह को ढूँढने में मेरी कुछ सहायता कर सकते हो तो मैं हमेशा तुम्हारी ऋणी रहूँगी।"

इसी समय अचानक एक अजीब सी घटना घटी। गुल्लाला शाह ने भी उसको बता दिया कि वह कौन था और उसको चूम लिया। उस लड़की ने भी उसको फिर पहचान लिया और उसका हाथ अपने

हाथ में ले कर बोली — "आखिर मैंने अपना खोया हुआ प्यार पा ही लिया। अल्लाह मुझे हमेशा उसके साथ रहने दे।"

एक दूसरे का हाथ पकड़े हुए वे तालाब से वहाँ चले गये जहाँ उनका घोड़ा खड़ा हुआ था। दोनों घोड़े पर चढ़े जो अब शान्त खड़ा था और वहाँ से चल दिये। राजा ने उनको ढूँढने के लिये कुछ सिपाही भेजे थे वे उनसे जा कर मिल गये और सब गुल्लाला शाह के घर चले गये।

घर पहुँच कर गुल्लाला शाह ने पंज फूल को अपनी पत्नी से मिलवाया। दोनों राजकुमारियाँ एक दूसरे से मिल कर बहुत खुश हुईं और कुछ समय तक वे सब खुश खुश रहे।

फिर एक दिन गुल्लाला शाह की पहली पत्नी ने पंज फूल से उसकी वह मोती की माला माँगी जो वह हर समय पहने रहती थी। पंज फूल ने यह कहते हुए उसको उसे देने से मना कर दिया कि वह उसकी जान की रक्षा करता है इसलिये वह उसको कभी अपने गले से नहीं निकाल सकती।

पहली पत्नी ने बार बार उससे उसकी वह माला माँगी और उससे वायदा किया कि वह उसको वैसी ही सुन्दर और कीमती मोती की माला उसके बदले में दे देगी पर पंज फूल ने उसको उसे देने की या बदले में दूसरी माला लेने की कोई परवाह नहीं की।

वह अपने इरादों की पक्की थी और एक पल के लिये भी उस माला को अपने गले से अलग करने के लिये तैयार नहीं थी।

उसके इस व्यवहार से गुल्लाला शाह की पहली पत्नी बहुत नाराज हो गयी और गुल्लाला शाह से अपने झगड़े के बारे में बताया। उसने उससे विनती की कि वह उससे उसको वह माला दिलवा दे। गुल्लाला शाह ने वायदा किया कि वह वैसा करने की अपनी पूरी कोशिश करेगा।

जब गुल्लाला शाह ने पंज फूल से वह माला उसकी पहली पत्नी को देने के लिये कहा तो पंज फूल ने यह कहते हुए उसको भी मना कर दिया कि उसमें उसकी ज़िन्दगी छिपी हुई थी और वह उसके लिये सारे खतरे बीमारियाँ और मुश्किल का समय दूर करने का एक साधन थी।

अगर उसने उसे अपने गले से निकाल दिया तो वह बीमार भी पड़ सकती थी उनसे छीनी भी जा सकती थी और मर जाती।

पर गुल्लाला शाह ने जब कई बार उससे जिद की तो वह उसको अपने प्यार की वजह से मना नहीं कर सकी। उसने वह माला गुल्लाला शाह को दे दी और गुल्लाला शाह ने उसे अपनी पहली पत्नी को दे दिया।[27] इसके तुरन्त बाद ही पंज फूल गायब हो गयी। जब गुल्लाला शाह और उसकी पहली पत्नी को इस बात का पता चला तो वे बहुत दुखी हुए और बहुत रोये।

---

[27] It seems very ridiculous that after knowing that something which contained somebody's life wasbe taken like this. How can somebody be so selfish to play with one's life?

वे कहने लगे — “यह हमने क्या किया कि एक छोटी सी चीज़ के लिये हमने अपनी प्यारी पंज फूल को खो दिया। वह अपने पति का कितना कहना मानती थी। अफसोस हमने ऐसा क्यों किया अब हम ही अपनी प्यारी पंज फूल की मौत के जिम्मेदार हैं।”

जहाँ तक गुल्लाला शाह का सवाल था वह नहीं जानता था कि वह इस दुख में क्या करे। वह तो बस दिन रात रोता ही रहा। आखिर जब वह रोते रोते थक गया तो वह बीमार सा हो गया तो उसने वह जगह छोड़ देने का विचार किया और उन फूलों की खोज में जाने का विचार किया जिसकी वजह से उसने अपनी यात्रा शुरू की थी।

राजा ने जब उसको कमजोर और दुबला होते देखा तो उसको वहाँ से जाने की इजाज़त दे दी। यात्रा के लिये उसने उसको कुछ पैसे भी दे दिये।

सो गुल्लाला शाह वहाँ से चल दिया और अगले दिन परियों के देश में उस पहाड़ पर पहुँच गया जहाँ वह पंज फूल से पहली बार मिला था। वह उस पहाड़ पर ऊँचे और ऊँचे चढ़ता चला गया।

वहाँ आ कर वह एक सड़क पर आ निकला जिस पर दो आदमी उसी की तरफ आ रहे थे। वे परियों के देश के वजीर के नौकर थे। वजीर का नाम चलाने के लिये उसका कोई बेटा नहीं था इसलिये उसकी पत्नी ने अपने कई आदमी इधर उधर भेजे हुए थे

ताकि वे उसको लिये कोई ऐसा नौजवान ढूँढ कर ला सकें जिसको वह गोद ले सके।

उसके ये आदमी हर जगह घूम रहे थे, दूर भी और पास भी, पर अभी तक उनको कोई ऐसा आदमी नहीं मिल पाया था जिसको वे ले जा कर वजीर की पत्नी को दे देते। इसके लिये वे बहुत बेचैन थे और अब नाउम्मीद होते जा रहे थे। उनको समझ ही नहीं आ रहा था कि वे क्या करें। वे खाली हाथ भी वापस नहीं जा सकते थे।

जब उन्होंने गुल्लाला शाह को देखा तो उन्होंने सोचा कि वे उसको खा जायें पर बाद में उन्होंने देखा कि वह तो बहुत होशियार और सुन्दर है तो उन्होंने उसे वजीर के पास ले जाने की सोची। उन्होंने गुल्लाला शाह को पकड़ लिया और परियों के देश के वजीर के घर ले गये।

दोनों नौकरों ने यह दिखाया कि वह एक परी का बेटा है जो वजीर की पत्नी की बहिन है हालाँकि वह उसे जानती नहीं थी। जिसने भी गुल्लाला शाह को देखा वह उसे देख कर बहुत खुश हुआ। उसके बाद वह उनके घर में ही रहने लगा और वहाँ के सब लोग उसको वजीर का वारिस मानने लगे।

वजीर रोज राजा के दरबार में जाता था और जब वह दिन भर के काम से हारा थका शाम को अपने घर पहुँचता तो वह अपने गोद लिये बेटे को बुलाता और उससे बात करने में अपना समय

बिताता। दोनो घंटों तक बात करते रहते। गुल्लाला शाह उससे दरबार की खबरें पूछता और वजीर उसको सब बातें बताता।

एक शाम जब वे ऐसी ही बातें कर रहे थे वजीर ने उसे बताया कि दरबार में उस दिन बड़ी अजीब सी बात हुई। राजा अपनी बेटी पंज फूल से बहुत नाराज था क्योंकि उसने गुल्लाला शाह नाम के एक मामूली आदमी से अपना रिश्ता जोड़ लिया था और वह किसी दूसरे आदमी से शादी नहीं करना चाहती थी।

वह घर से भाग गयी थी। बहुत दिनों तक उसका कोई पता नहीं चला था। इसमें कोई शक नहीं कि वह उसी मामूली आदमी को ढूँढ रही होगी। पर राजा ने अपने किसी बहुत ही मजबूत जादू से उसको अपने पास बुला लिया था और अब उसको कोई बहुत ही कड़ी सजा मिलने वाली है।

उसका शरीर लकड़ी का बना दिया जायेगा और उसे एक बागीचे में खड़ा कर दिया जायेगा ताकि उससे दूसरी परियों को सीख मिल सके और वे ऐसा काम न कर सकें।

यह सुन कर तो गुल्लाला शाह के होश उड़ गये वह बड़ी मुश्किल से उससे आगे बात कर सका। उसने मन में कहा "तो यहाँ है पंज फूल। उसने सोचा असल में जैसे ही उसने अपना मोतियों की माला उतारी होगी वैसे ही उसे यहाँ वापस ले आया गया होगा। उसको बेचारी को मेरी बेवकूफी की सजा भुगतनी पड़ रही है। बहुत अफसोस है मुझे इस बात का।"

काफी देर के बाद जब वह कुछ होश में आया तो उसने वजीर से पूछा कि पंज फूल को कड़ी सजा से बचाने का क्या कोई रास्ता है। वजीर ने कहा "हाँ है।"

उसने आगे कहा — "अगर गुल्लाला शाह यहाँ आ जाये और उसकी लकड़ी की मूर्ति को जला कर राख कर दे और उस राख को जिस बागीचे में वह मूर्ति खड़ी है उसमें बीच में बने एक तालाब में फेंक दे तो वह अपनी पुरानी शक्ल में आ जायेगी।"

गुल्लाला शाह तो यह सुन कर बहुत खुश हो गया। उसने जल्दी ही वजीर से विदा ली और जा कर अपने कमरे में सो गया। पर उसको नींद नहीं आयी। वह बहुत खुश था।

जब उसने यह पक्का कर लिया कि घर के सभी लोग गहरी नींद सो गये तो वह उठा और उठ कर पंज फूल के बागीचे में गया जहाँ उसकी लकड़ी की मूर्ति खड़ी थी। उसने उसको जला कर राख किया और उसकी राख तालाब में फेंक दी।

जैसे ही उसने ऐसा किया तो लो पंज फूल तो उसके सामने आ कर ऐसे खड़ी हो गयी जैसे वह उसके सामने पहले दिन तालाब में से निकल कर खड़ी हुई थी।

गुल्लाला शाह बोला — "प्रिये मैं इतना बेवकूफ कैसे हो गया कि मैंने तुम्हें इतना परेशान किया। मुझे माफ कर दो और मुझसे वायदा करो कि तुम मुझे कभी छोड़ कर नहीं जाओगी। चलो हम

लोग बहुत सारी जगह घूमेंगे जहाँ तुम्हारे पिता के बेरहम हाथ तुम तक कभी नहीं पहुँचें।"

पंज फूल बोली — "प्रिय मैंने तुम्हें माफ किया पर तुम्हारे साथ जाना मेरे वश में नहीं है। अब मैं अपने पिता की हूँ। जब तक मेरे पास मेरी वह जादू के मोती की माला न हो मैं उनको धोखा नहीं दे सकती। मैं कहीं भी जाऊँ वह मुझे वहीं से बुलवा सकते हैं। और अगर ऐसा हो गया तो मेरा मामला और भी बुरा हो जायेगा।

मैं तुमसे विनती करती हूँ अब तुम यहाँ से चले जाओ कहीं ऐसा न हो कि मेरी वजह से तुम्हें कोई नुकसान पहुँचे। मेरे लिये तुम प्रार्थना करना कि राजा मेरे पिता जब यह सुनें कि मैं फिर से ज़िन्दा कर ली गयी हूँ तो वह मुझ पर दया करें। अब तुम यहाँ से तुरन्त ही चले जाओ जहाँ तुम यहाँ से ज़्यादा सुरक्षित रह सको।"

गुल्लाला शाह ने तब उसको वह सब बताया जो कुछ उसके साथ हुआ था कि वह कैसे उसकी खोज में इधर उधर घूम रहा था और वह अब कैसे राजा के वजीर का गोद लिया बेटा और वारिस बन गया है।

जाते समय वह बोला कि वह उससे फिर मिलेगा और अगर फिर भी राजा उसको सजा देना चाहेगा तो वह उस सजा की कोई तरकीब ढूँढेगा और उसे फिर से ज़िन्दा कर लेगा।

अगली सुबह जब शाही चौकीदारों ने देखा कि पंज फूल फिर से ज़िन्दा हो गयी है तो वे राजा के पास गये और उसको जा कर

यह बताया। राजा को यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ उसने पंज फूल को बुला भेजा।

जैसे ही वह आयी तो उसने उससे पूछा — "यह कैसे हुआ कि तुम हमको परेशान करने के लिये फिर से आ गयी। जाओ तुम एक साँप बन जाओ और दूर किसी जंगल में जा कर रहो।"

कह कर उसने एक तरफ इशारा किया जिस तरफ एक बहुत ही घना जंगल था और जिसमें बहुत सारे जंगली जानवर रहते थे। तुरन्त ही पंज फूल एक साँप बन गयी और जा कर उस जंगल में रहने लगी।

उस शाम जब वजीर अपने घर लौटा तो उसने उस दिन जो कुछ भी दरबार में हुआ था सब गुल्लाला शाह को बताया। गुल्लाला शाह बोला "बड़ी अजीब सी बात है। एक राजकुमारी के साथ ऐसा कोई कैसे कर सकता है। क्या वह हमेशा साँप ही बनी रहेगी?"

वजीर बोला — "नहीं इसका एक इलाज है।"

तब गुल्लाला शाह के पूछने पर उसने बताया "अगर गुल्लाला शाह उस जंगल में पहुँच जाये और एक गुफा खोदे जो तीन फीट गहरी हो और इतनी चौड़ी हो जिसमें हो कर दो आदमी चले जायें। फिर उस गुफा के मुँह को ढकने के लिये एक ढकना बनाये जिसमें एक छेद हो। उसके बाद वह जंगल में घूम घूम कर चिल्लाता रहे "पंज फूल गुल्लाला शाह यहाँ है। पंज फूल गुल्लाला शाह यहाँ है।" और यह कह कर उस गुफा में जा कर छिप जाये।

अगर वह यह काम ऐसे ही करे जैसा मैंने कहा है तो पंज फूल जो इस समय साँप के रूप में है तो वह गुफा के मुँह पर लगे उस ढकने के छेद से हो कर उस गुफा में चली आयेगी।

एक और बात उसके याद रखने की है कि जितना भी लम्बा साँप उस गुफा के अन्दर आ जाये उतना हिस्सा काट ले फिर उसको बहुत छोटे छोटे हिस्सों में काट ले और एक कपड़े में बाँध ले। इन टुकड़ों को ले जा कर वह पंज फूल बागीचे के तालाब में डाल दे। अगर यह काम इसी तरह से किया गया तो पंज फूल फिर से अपनी सुन्दरता लिये हुए वापस आ जायेगी।

जब गुल्लाला शाह ने यह सुना तो उसे काफी चैन पड़ा। कुछ देर और बात करने के बाद उसने वजीर से विदा ली और सोने चला गया। वह सो नहीं सका वह तो बस उसी समय का इन्तजार करता रहा जब वह अपनी प्यारी पंज फूल को फिर से ज़िन्दा कर लेगा।

जब उसने यह पक्का कर लिया कि घर के सब लोग सो गये वह उस जंगल में गया जहाँ पंज फूल साँप बन कर रह रही थी। उस रात उसने गुफा के लिये केवल जगह देखी और वापस घर आ गया। अगली रात वह एक कुल्हाड़ी फावड़ा आदि औजारों के साथ वहाँ गया और जा कर एक गुफा खोदी। उसने गुफा का मुँह ढकने के लिये एक ढकना बनाया जिसमें एक छेद भी बनाया।

फिर वह जंगल में जा कर चिल्ला चिल्ला कर पुकारने लगा — "पंज फूल गुल्लाला शाह यहाँ है। पंज फूल गुल्लाला शाह यहाँ है।" इस तरह पुकार कर वह गुफा में जा कर छिप गया।

पंज फूल ने जब अपना नाम सुना तो वह साँप के रूप में आयी और गुफा में घुसने लगी। गुफा के ढकने के छेद में से हो कर जब वह गुफा में घुस रही थी तो उसका काफी शरीर घायल हो गया।

गुल्लाला शाह ने जितना भी वह साँप गुफा के अन्दर घुस सका उतना काट लिया और फिर उसके छोटे छोटे टुकड़े कर के एक कपड़े में बाँध लिये। उन सबको इकट्ठा कर के वह पंज फूल बागीचे में ले गया और तालाब में फेंक दिये। जैसा कि वजीर ने कहा था पंज फूल एक बार फिर पानी में से उसी तरह निकल आयी जैसे वह उसके सामने पहली बार निकल कर आयी थी।[28]

गुल्लाला शाह ने उसको गले लगा लिया। फिर वे बहुत देर तक बात करते रहे। जब सुबह की रोशनी होनी शुरू हुई तब वे वहाँ से चले गये। दोनों में से कोई एक दूसरे को छोड़ना नहीं चाहता था पर वे क्या कर सकते थे।

अगर गुल्लाला शाह यह चाहता था कि वजीर को उसकी गैरहाजिरी का पता न चले तो अब उसके घर लौटने का समय हो गया था जबकि पंज फूल वहाँ से नहीं जा सकती थी। उसने वहाँ से

[28] This is again ridiculous that inspite of knowing the importance of the pearl necklace Gullala Shah did not bring it from his first wife and gave it to Panj Phool to wear so that she was safe for ever.

जाने की कोशिश भी की पर राजा के जादू के ज़ोर से वह वहाँ से कहीं नहीं जा सकी। सो वे अलग हो गये।

गुल्लाला शाह जल्दी से वजीर के घर आया और बस समय से ही अपने कमरे में घुस सका। एकाध घंटे में ही मजदूर लोग अपने काम पर निकले तो उस जगह से गुजरे जहाँ पंज फूल बैठी हुई थी।

वे उसको वहाँ बैठा देख कर बहुत आश्चर्यचकित हुए। उन्होंने जा कर यह राजा को बताया। राजा ने जब यह सुना तो उसने अपने वजीर को बुला भेजा और उससे इस बारे में सलाह माँगी।

राजा ने कहा — "क्या तुमको यह नहीं लगता कि गुल्लाला शाह यहीं कहीं है और यह सब कर रहा है?"

वजीर बोला — "यह तो बिल्कुल नामुमकिन है सरकार। पहली बात तो वह यहाँ तक आ ही नहीं सकता। दूसरे एक मामूली आदमी होने के नाते वह यह सब कैसे जान सकता है। यह तो कोई बहुत ही बड़ा आदमी होगा जो यह सब कर रहा होगा। उसको अल्लाह की दुआ होगी तभी यह सब हो सकता है।"

पंज फूल को फिर से बुलाया गया और इस बार उसको एक सोने की कील में बदल दिया गया जिसको तुरन्त ही एक नौकर को दे दिया गया और उससे कहा गया कि वह उसको किसी नाव[29] में ठोक दे जो अभी बन रही हो। नौकर उस कील को ले कर चला

[29] Means "in any Kashmiri River Boat" or "Shikara" as they call it.

गया और जो भी नाव उसको सबसे पहले दिखायी दी उसने उसको उसी में ठोक दिया।

राजा के पास से वजीर अपने घर गया नहाया धोया और फिर गुल्लाला शाह को बुलाया और उसको उस दिन की सारी खबर सुनायी। जब उसने सुना कि राजकुमारी फिर से ज़िन्दा हो गयी है तो उसने बहुत आश्चर्य प्रगट किया।

वह बोला — "यह तो बड़े आश्चर्य की बात है कि राजा ने उसको एक सोने की कील में बदल दिया है। मुझे तो ऐसा लगता है कि इससे उसके बदलने का कोई तरीका ही नहीं है।"

वजीर बोला — "हाँ है न। अगर गुल्लाला शाह किसी तरह से यहाँ आ जाये और वह उस नाव में बैठ जाये जिसमें वह कील ठुकी हुई है। फिर वह उस कील को ढूँढ ले और निकाल कर घिस कर उसका पाउडर बना ले और उस पाउडर को पंज फूल के बागीचे के तालाब में डाल दे तो वह उसको फिर से ज़िन्दा कर सकता है। और अगर वह इस बार ज़िन्दा हो गयी तो इसके बाद राजा का कोई जादू उस पर नहीं चल पायेगा।"

गुल्लाला शाह के लिये इतना जानना काफी था। आज देर हो गयी थी सो वजीर और गुल्लाला शाह दोनों सोने चले गये। इस इलाज को सुन कर गुल्लाला शाह ने इसमें अपनी कोई रुचि नहीं दिखायी पर वह बहुत ज़्यादा खुश था क्योंकि अगर वह इस बार उसको ज़िन्दा कर सका तो अपने सख्त और नीच पिता के चंगुल से

हमेशा के लिये छूट जायेगी। उसने सोचा इस बार मैं उसको जरूर ही ज़िन्दा करूँगा।

गुल्लाला शाह इस काम के लिये तुरन्त ही नहीं गया उसने कुछ इन्तजार किया ताकि इस बात का हल्ला गुल्ला थोड़ा कम हो जाये। इसके लिये उसने कई महीने इन्तजार किया।

एक दिन उसने वजीर की पत्नी से कई ऐसी जगहें देखने की इजाज़त माँगी जिनको वह देखना चाहता था। उसने उससे इस यात्रा के लिये वजीर की इजाज़त भी माँगने के लिये कहा।

उसने उससे यह भी कहा कि अब उसकी उम्र ऐसी हो गयी थी कि वह अपनी देखभाल खुद कर सकता था। वह उन जगहों के बारे में भी नहीं सुनना चाहता था जिनके बारे में उसके पिता वजीर उसे कई बार बता चुके थे।

उसकी माँ को यह सुन कर बहुत खुशी हुई कि उसका बेटा अब घूमना चाहता है पर वह उसको इस तरह जाने की इजाज़त नहीं दे सकती थी क्योंकि उनमें से कुछ जगहों के रास्ते बहुत खतरनाक थे और उन पर जाना बहुत मुश्किल था। खास कर के ऐसे बच्चे के लिये जिसको उन्होंने गोद ले कर इतने प्यार और कोमलता से पाला हो।

गुल्लाला शाह ने उसकी इस बात को बड़ी सहजता से मना किया। उसने बच्चों की तरह से अपने आपको पूरा ऊपर खींचा और बोला — "देखो न माँ मैं अब कितना बड़ा हो गया हूँ। और

फिर वजीर का बेटा क्या उन सब मुश्किलों से डरेगा। अगर मैं इस तरह का निकलूँ तो लानत है मुझ पर।

इससे तो अच्छा है कि मैं उन लोगों के हाथों मारा जाऊँ बजाय इसके कि मैं जब बाद में एक ऐसे ताकतवर राज्य का वजीर बनूँ जैसे कि मेरे पिता जी हैं। माँ तुम डरो नहीं और मुझे जाने दो। अगर तुम्हारे पास कोई तलिस्मा हो तो मुझे दे दो क्योंकि मैं बेकार में ही किसी परेशानी में क्यों पड़ूँ।"

अपने बेटे का यह अच्छा जवाब सुन कर वजीर की पत्नी उसको जाने की इजाज़त दे दी और उसे अपनी निशानी वाली अँगूठी दे कर कहा — "जब भी कभी तुम किसी मुश्किल में पड़ जाओ तो तुम इस अँगूठी को आग को दिखाना। उसी समय दो जिन्न उस आग में से प्रगट हो जायेंगे और तुम्हारी सहायता करेंगे।"

फिर उसने उसको रास्ते के खर्चे के लिये बहुत सारे पैसे दिये। वजीर ने भी जब अपनी पत्नी से अपने बेटे का यह प्रोग्राम सुना तो वह यह सुन कर बहुत खुश हुआ।

गुल्लाला शाह जितनी जल्दी हो सका उतनी जल्दी अपनी यात्रा पर चल दिया। कुछ समय की यात्रा के बाद एक दिन उसने पाया कि वह एक ऐसी नाव में बैठा था जिसमें सोने की कील लगी थी। उसकी आँखों ने उसे तुरन्त ही ढूँढ लिया था हालाँकि उस पर ऐसे

ही किसी की नजर नहीं पड़ सकती थी क्योंकि वह एक लकड़ी के तख्ते से ढकी हुई थी।

गुल्लाला शाह ने अपनी असलियत छिपा कर नाव के मालिक से विनती की कि वह उसको अपनी नावों के लिये एक नौकर रख ले। मालिक मान गया और उसने उसे एक नाविक की नौकरी दे दी जैसे कि वह वैसी ज़िन्दगी जीने का आदी हो।

कुछ समय बाद उसने अपने मालिक से कहा कि उसने एक सपना देखा था। उसके उस सपने में दो आदमी आये थे जिन्होंने भाले से उसकी नाव के तले में छेद कर दिया जिससे उसकी नाव डूब गयी।"

फिर वह आगे बोला — "मैं जानता हूँ कि इस सपने का मतलब क्या है। इसका मतलब है कि आपके किसी दुश्मन ने उसमें कोई जादू की चीज़ रख दी है और अगर वह जादू की चीज़ उसमें रखी रही तो आपकी नाव डूब जायेगी।"

यह सुन कर नावों का मालिक बहुत डर गया। उसने गुल्लाला शाह से उस नाव में रखी वह जादू की चीज़ को ढूँढने की कोशिश करने के लिये विनती की।

गुल्लाला शाह बोला कि यह बहुत ही मुश्किल काम है फिर भी अगर नावों का मालिक यह बात किसी को न बताये तो वह उसको ढूँढने की कोशिश करेगा। मालिक ने वायदा किया कि वह किसी को नहीं बतायेगा।

तब गुल्लाला शाह एक अकेली जगह गया और आग जलायी। जब उसमें से लपटें निकलने लगीं तो उसने माँ की दी हुई अँगूठी निकाली और उसको दिखायी तो आग में से दो जिन्न निकल आये। वे उसके लिये वह सब कुछ करने को तैयार थे जो कुछ भी वह उनसे कहता।

गुल्लाला शाह ने उनसे नाव को जमीन पर लाने के लिये कहा। वे नाव को जमीन पर ले आये। गुल्लाला शाह ने उसमें से सोने की कील निकाल ली और उनसे नाव को फिर से पानी में डाल देने के लिये कहा जो उन्होंने तुरन्त ही कर दिया।

फिर वह नावों के मालिक के पास गया और छिपा कर वह सोने की कील उसको दिखायी। नावों के मालिक ने उसे देख कर आश्चर्य प्रगट किया और उसको इस तरह का जादू निकाल देने के लिये बहुत बहुत धन्यवाद दिया कि अल्लाह ने उसको इतना अच्छा नौकर दिया।

गुल्लाला शाह ने वह कील अपने पास रख ली और कुछ देर में अपने मालिक को बताया कि अब सब कुछ ठीक था। पर अब उसे कुछ दिन की छुट्टी चाहिये थी। मालिक ने उसे वह तुरन्त ही दे दी। जादू की अँगूठी की सहायता से वह अपने पिता वजीर के घर लौट आया।

वजीर की पत्नी घर पर अकेली ही थी क्योंकि यह समय दरबार का था। उसने अपने बेटे का स्वागत बड़े प्यार से किया जैसे माँऐं

अपने बेटों का करती हैं। कुछ देर बाद वजीर भी घर वापस आ गया तो घर में खूब खुशियाँ मनायी गयीं।

सारा शहर गुल्लाला शाह की यात्रा के बारे में जानने के लिये उत्सुक था। उसकी यात्रा की कहानियाँ और उनमें आये खतरे जो जादुई अँगूठी से जीते गये थे शहर के हर आदमी की जबान पर थे।

एक दो दिन के बाद गुल्लाला शाह ने वह कील पीस दी और उसका पाउडर पंज फूल के बागीचे में बने तालाब में डाल दिया। जैसे ही उसने यह किया पंज फूल फिर से तालाब के पानी में से वैसी ही सुन्दर निकल आयी जैसी उसने उसे पहली बार देखा था। दोनों एक दूसरे के गले लग गये और खुश थे कि वे फिर मिल गये थे।

दोनों ने जबसे वे बिछुड़े थे तबसे अब तक की सब कहानी एक दूसरे को सुनायी। पंज फूल बोली कि अब वह उसके साथ जहाँ वह चाहे वहीं जा सकती थी पर वह उसका थोड़ा इन्तजार करे जब तक वह अपने कमरे से लौट कर आती है। वह वहाँ से अपने कुछ जवाहरात और कपड़े लाना चाहती थी जो बाद में उसकी सहायता करेंगे।

गुल्लाला शाह राजी हो गया और वह अपने कमरे में चली गयी। वहाँ से वह बहुत सारे जवाहरात और कुछ कपड़े ले कर लौटी जो बहुत कीमती थे। फिर वे परियों के देश से वापस अपने घर चल दिये।

वे बहुत जल्दी जल्दी चले और आराम करने से काफी पहले एक तालाब के पास आये जिसका पानी बिल्कुल साफ था। यहाँ वे कुछ सुस्ताये और खाना खाया। जब वे आपस में बात कर रहे थे तो गुल्लाला शाह ने पंज फूल से कुछ फूल लेने के लिये कहा जो समुद्र के किनारे वाले बागीचे में लगे हुए थे।

उसने उसे बताया कि इस बागीचे में बारह हजार फूलों वाले पेड़ थे जिनमें से हर पेड़ किसी न किसी परी का लगाया हुआ था। इसका हर फूल बारह हजार रुपये का था। यह सुन कर पंज फूल ने कहा कि वह उसकी इच्छा पूरी कर देगी और अगर कोई और भी इच्छा हो तो वह उसको बता दे।

पर ये फूल वह उसके लिये तभी ले सकती है जब परियों के देश में जहाँ ये उगते हैं वहाँ की राजकुमारी ने कभी कोई आदमी न देखा हो इसलिये वह फिर उसको कभी नहीं देख पायेगी।

कुछ दिन घूमने के बाद वे इस बागीचे में आये जो समुद्र के किनारे था। यहाँ उन्होंने एक जहाज़ किराये पर लिया जो उस समय वहीं किनारे पर लंगर डाले खड़ा था।

वे उस जहाज़ पर चढ़ गये तो पंज फूल ने गुल्लाला शाह को एक बहुत सुन्दर मोती का हार दिया और उससे तुरन्त ही जा कर एक अकेले कमरे में लैम्प की रोशनी के सामने लटकाने के लिये कहा। उसने उससे भी उसी कमरे में रहने के लिये कहा। इससे ऐसा

होता कि वैसे ही कई हार उसको मिल जाते। गुल्लाला शाह ने वैसा ही किया।

इस बीच पंज फूल ने एक लड़के का वेश बनाया और अपने आपको अपने पति का नौकर बताया। फिर उसने जहाज़ को परियों की राजकुमारी वाले बागीचे की तरफ जाने का हुक्म दिया।

वहाँ पहुँचने पर राजकुमारी के नौकर चाकर आये तो उसने उनसे जहाज़ को वहाँ से ले जाने के लिये कहा क्योंकि राजकुमारी चाहती थी कि वह शान्ति से और बिना किसी के जाने वहाँ रहे।

वह समुद्र के किनारे के उस हिस्से में अकेले घूमना चाहती थी। पर उस जहाज़ का मालिक गुल्लाला शाह और उसके नकली नौकर ने कहा कि क्योंकि उस जहाज़ पर बहुत सारा कीमती सामान था इसलिये वे वहीं रहना चाहते थे और चोरों के डर से उन्होंने जहाज़ का लंगर भी वहाँ डाला था।

वे वहाँ से नहीं हटेंगे जब तक कि राजा उनको चोरों की वजह से जो कुछ भी खोना पड़े वह सब वापस देने का वायदा नहीं करता और अगर वे किसी दूसरी जगह रुकेंगे तो वे जरूर आयेंगे इसलिये वे वहीं रुकना चाहते थे। जब राजा ने यह सुना तो उनको वहाँ रात को ठहरने की इजाज़त दे दी।

अगले दिन पंज फूल ने मोतियों के कुछ हार लिये जो लैम्प की रोशनी में बनाये गये थे और उनको राजकुमारी के बागीचे के पास देखने के लिये फैला दिये।

कुछ ही देर में राजकुमारी की दासियाँ वहाँ नहाने के लिये आयीं तो उन्होंने पंज फूल को देख कर उससे पूछा कि वह कौन थी। उसने कहा कि वह एक बहुत ही अमीर व्यापारी का नौकर था जो जहाज़ पर था।

वह बहुत ही अच्छा था और उसके पास बहुत सारा खजाना था खास कर के मोतियों के हार जो दुनियाँ भर में बहुत सुन्दर थे और बहुत कीमती थे। जब उन दासियों ने यह सुना तो वह उस खजाने को देखने की बहुत इच्छुक हुईं। पंज फूल भी उनको उन्हें दिखाने के लिये तुरन्त ही तैयार हो गयी।

जब उन्होंने वे सुन्दर हार देखे तो उन्होंने पंज फूल से कहा कि वे हार वे अपनी मालकिन को दिखाना चाहती थीं। पंज फूल राजी हो गयी और वे हार उनको दिखाने के लिये दे दिये।

राजकुमारी को वे हार इतने पसन्द आये कि वह उनको वापस देना ही नहीं चाहती थी। उसने अपनी दासियों से उन हारों के दाम पूछने को कहा और कहा कि वह और भी हार खरीद लेगी – जितने भी वह व्यापारी उसे दे सके।

जब वे दूसरे हार भी उसके पास आ गये जो कि बहुत सारे थे तो राजकुमारी ने व्यापारी से खुद मिलने का फैसला किया क्योंकि उसने सोचा कि यह व्यापारी कोई बहुत बड़ा आदमी होगा जिसके पास इतना कीमती खजाना है।

सो परदा लगा कर वह व्यापारी के पास गयी और वहाँ पहुँच कर पंज फूल से पूछा जो व्यापारी का नकली नौकर था कि व्यापारी का कमरा कौन सा था ताकि वह उन हारों का सौदा कर सके जो उसने चुने थे।

पंज फूल तो इस बात की आशा कर ही रही थी। वह इस मामले में किसी को भी धोखा देना नहीं चाहती थी सो उसने राजकुमारी से कहा कि व्यापारी तो उस समय उससे मिल नहीं सकता क्योंकि उस दिन उसने कोई खास पूजा की थी सो वह इस समय किसी स्त्री से बात नहीं कर सकता था।

राजकुमारी ने उससे पूछा — "मैं उस व्यापारी से क्यों नहीं मिल सकती। मैं एक अच्छी स्त्री हूँ और मैंने ऐसा अजीब आदमी कभी नहीं देखा। मुझे यकीन है कि मेरे यहाँ होने से उसकी कोई बदनामी नहीं होगी।"

पंज फूल फिर बोली — "अगर मैं आपको उसके कमरे तक ले भी जाऊँ तो भी वह आपसे नहीं मिलेगा बल्कि और गुस्सा होगा। वह आपके सामने आयेगा ही नहीं।"

यह सुन कर राजकुमारी की उससे मिलने की इच्छा और बढ़ गयी। उसने कहा कि वह अकेले ही उसके कमरे में उससे मिलने जायेगी और इस तरह से पंज फूल की इस बात में कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।

पंज फूल कुछ नहीं बोली और राजकुमारी व्यापारी के कमरे तक अकेली ही चली गयी और जा कर उसके कमरे का दरवाजा खटखटाया। व्यापारी ने दरवाजा नहीं खोला और अन्दर से ही बोला — "मैं तुम्हारे लिये दरवाजा नहीं खोल सकता। मैं किसी अजनबी स्त्री से नहीं मिल सकता इसलिये तुम्हें अन्दर भी नहीं बुला सकता।"

पर राजकुमारी उसकी सुनने वाली नहीं थी। उसने पूछा "किसलिये? मैंने कभी किसी अजीब आदमी का चेहरा नहीं देखा। मैं एक अच्छी स्त्री हूँ। मेहरबानी कर के मुझे अन्दर आने दीजिये। मैं एक अच्छी स्त्री हूँ और आपसे शादी करना चाहती हूँ। मेरी बस एक यही इच्छा है। हम लोग आपस में एक दूसरे से क्यों नहीं मिल सकते।"

इस तरह दबाव डाले जाने पर व्यापारी ने दरवाजा खोल दिया। दोनों ने एक दूसरे को देखा तो दोनों के मन में एक दूसरे के लिये प्यार जाग उठा। वे बहुत देर तक बात करते रहे। फिर व्यापारी ने उसको अपना खजाना दिखाया।

राजकुमारी उस अजीब व्यापारी के लिये अपने दिल में प्यार लिये और उसके खजाने के लिये आश्चर्य लिये अपने घर लौट आयी। जैसे ही वह महल पहुँची उसने अपने पिता को बताया कि वह कहाँ गयी थी उसने वहाँ क्या क्या देखा और किस तरह से वह

उस व्यापारी के प्रेम में पड़ गयी थी। और अब वह उससे शादी करना चाहती थी।

उसका पिता एक बहुत अच्छा राजा था उसने राजकुमारी से व्यापारी से मिलने का वायदा किया और अगली सुबह उससे मिलने के लिये जहाज़ की तरफ चल दिया।

जब उसने व्यापारी को देखा तो वह उसको देख कर बहुत खुश हुआ। वह कितना अच्छा बोलता था कितना अक्लमन्द था। उसने भी अपने दिल में उसको अपना दामाद चुन लिया। घर जा कर यह बात उसने अपनी बेटी को बतायी।

राजकुमारी तो यह सुन कर बहुत खुश हुई। उसकी खुशी की तो कोई हद ही नहीं थी। वह उस दिन का इन्तजार करने लगी जब उससे उसकी शादी होगी। शहर भर में खुशियाँ मनायी जा रही थीं। शादी हुई और बड़ी शान से हुई जैसी कि परियों के देश की राजकुमारी की होनी चाहिये थी।

कुछ समय तक गुल्लाला शाह महल में रहा और वहाँ जा कर बहुत खुशहाल हो गया। पर फिर भी उसका मन सन्तुष्ट नहीं था। एक दिन उसने राजकुमारी से अपने बारे में सब कुछ बताया कि वह वहाँ क्यों आया था। कैसे उसकी फूल लेने की इच्छा थी और कैसे वह फूल ले कर वह अपने देश जाना चाहता था।

राजकुमारी ने यह सब अपने पिता को बताया और उससे बारह हजार फूलों वाले पेड़ अपने साथ ले जाने की इजाज़त माँगी जो राजा ने उसको तुरन्त दे दी। जाने की तैयारियाँ शुरू हो गयीं।

बारह हजार पेड़ों को ले जाने के लिये बारह हजार गाड़ियाँ तैयार की गयीं। राजा ने जो कुछ भी अपनी बेटी को दिया था उसको ले जाने की भी तैयारी की गयी। बहुत सारे सिपाही और हाथी भी उन दोनों को दिये गये।

आखिर जाने की घड़ी आयी। यह बड़े दुख का मौका था क्योंकि उन दोनों को लोग बहुत प्यार करते थे। वे पहले गुल्लाला शाह के उस देश गये जहाँ उसकी पहली पत्नी रहती थी।

राजा उसको देख कर बहुत खुश हुआ और उनको रहने के लिये एक बहुत ही शानदार घर दिया और उन्हें जो कुछ और चाहिये था वह सब भी दिया।

गुल्लाला शाह वहाँ कुछ समय तक रहा फिर वहाँ से और भेंटें ले कर अपने देश चला जहाँ का वह रहने वाला था। यह एक लम्बी और मुश्किल यात्रा थी पर वे सुरक्षित रूप से शहर की दीवार तक पहुँच गये। उन्होंने यह सोचते हुए शहर के बाहर ही अपना कैम्प लगाया कि अचानक इतने सारे लोगों के आने से कहीं लोगों को कोई परेशानी न हो।

जब उनके आने की खबर महल पहुँची तो राजा बहुत डर गया। उसने तुरन्त ही अपने वजीर को बुलाया और उससे सलाह

माँगी कि इस बड़े राजा को खुश करने के लिये उसे क्या करना चाहिये जो अब यहाँ तक आ पहुँचा है। उसने कहा — "मुझे पूरा यकीन है कि यह इतने सारे आदमियों को ले कर यहाँ लड़ने के लिये ही आया होगा।"

वजीर ने मामले पर सोच विचार किया और बोला — "राजा साहब हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप अपनी सुन्दर बेटी को उसके पास भेजें जो वहाँ जा कर शान्ति लायेगी। कौन जानता है कि यह राजा आपकी बेटी की सुन्दरता से प्रभावित हो जाता है या नहीं और फिर हम सब बच जायें।"

राजा बोला — "मुझे अफसोस है वजीर साहब कि मैंने अपनी बेटी उस आदमी को देने का वायदा किया है जो फूलों वाले पेड़ ले कर आयेगा। इसके अलावा मेरी बेटी कई बार खुद किसी और आदमी से शादी करने के लिये मना कर चुकी है जो चाहे कितना भी बड़ा अक्लमन्द या अमीर ही क्यों न हो सिवाय इस आदमी के। मैं क्या करूँ।"

राजा और उसके सलाहकार इस तरह की बातें कर ही रहे थे कि गुल्लाला शाह ने रात के लिये अपने कैम्प को ठीक कर के अपने शाही और कीमती कपड़े उतारे और भिखारियों वाले कपड़े पहन लिये और इस तरह तैयार हो कर वह बारह हजार फूलों वाले पेड़ ले कर शहर की तरफ चला।

उसने गाड़ियों को चलाने वालों को सीधे महल जाने के लिये कहा और वह उनके आगे आगे चला। महल पहुँच कर उसने चौकीदार के हाथों राजा को सन्देश भेजा कि "अपने मालिक राजा साहब से कहो कि वह मुझे अन्दर आने की इजाज़त दें। मैं उनके लिये परियों के राजा के बागीचे के सुन्दर फूलों के पेड़ लाया हूँ।"

यह भी कितनी अजीब बात थी कि यह सन्देश भी राजा के पास तभी पहुँचा जब वह उन फूलों के बारे में बात कर रहा था। जब राजा ने चौकीदार का यह सन्देश सुना तो उसने उसका विश्वास ही नहीं किया बल्कि उसे लगा कि वह पागल हो गया था।

वजीर और दूसरे औफीसर लोग जो वहाँ पर मौजूद थे उनको भी यह सुन कर ऐसा लगा कि यह सच कैसे हो सकता था। राजा ने इसे एक मजाक समझते हुए हँस कर कहा "ठीक है इस आदमी को अन्दर आने दो।"

गुल्लाला शाह अन्दर आया फटे कपड़ों में लिपटा हुआ पर हाथ में नमूने के कुछ फूल लिये हुए जिनको राजकुमारी और शाही परिवार इतना पसन्द करता था। अब तो यह बात सच हो गयी थी कि जिन फूलों की माँग थी वे सच में वहाँ मौजूद थे पर उनका लाने वाला एक नीचे परिवार का था – एक गन्दा सा फटे कपड़े पहने हुए भिखारी।

राजा ने अपनी ठोड़ी अपने दाँये हाथ में रखी और नीचे कालीन की तरफ काफी देर तक चुपचाप देखता रहा। वह सोच रहा था

"क्या इस आदमी को मैं अपनी इतनी सुन्दर बेटी दे दूँ। मुझे यकीन है कि यह आदमी ऐसी कोई चीज़ नहीं माँगेगा जिसको मुझे इसे देने में शर्म आये। मैं इसको बहुत सारा इनाम दे कर विदा कर दूँगा।"

सो राजा ने उससे पूछा — "दोस्त तुम्हें क्या चाहिये। क्या तुम इस देश के वजीर बनना चाहोगे। या फिर तुम्हें बहुत सारा पैसा चाहिये। बोलो तुम्हें वही दे दिया जायेगा।"

भिखारी के रूप में गुल्लाला शाह बोला — अगर राजा साहब नाराज न हों तो मैं आपकी बेटी का हाथ माँगता हूँ। उसकी तुलना में मैं इज़्ज़त के सारे ओहदे और कितना भी पैसा बेकार समझता हूँ। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप अपना वायदा पूरा करें।"

राजा बोला — "तुम्हारी प्रार्थना तो बिल्कुल ठीक है और अगर मैं मना कर दूँ तो मैं अपना वायदा तोड़ूँगा सो मेरी बेटी तुम्हारी हुई तुम उसको ले जा सकते हो।"

जब वहाँ मौजूद सारे लौर्ड, नौकर चाकर और गुल्लाला शाह ने राजा के ये शब्द सुने तो वे राजा के दिमाग की कुलीनता पर आश्चर्य प्रगट करने लगे। क्योंकि हालाँकि यह एक छोटी सी बात थी पर अगर राजा इस भिखारी की माँग को पूरा नहीं करता तो वे क्या कर लेते। फिर भी सब लोगों ने इसे ठीक और न्यायपूर्ण समझा।

गुल्लाला शाह को नौकरों के साथ एक शानदार घर में भेजा गया जहाँ वह कुछ दिन रहा जब तक शादी का इन्तजाम किया

गया। उसके लिये उसके लायक कपड़े बनवाये गये और और भी बहुत सारी चीज़ें उसके लिये लायी गयीं।

जब यह सब हो गया तब राजा ने अपनी काउन्सिल बुलायी और उससे राय ली कि अब इस हालत में जब कि एक आदमी फूल ले कर आ गया है जिससे राजा अपनी बेटी की शादी का वायदा कर चुका है और दूसरी तरफ एक ताकतवर राजा शहर के बाहर आया हुआ है उसको क्या करना चाहिये।

वे लोग काफी देर तक बात करते रहे पर कुछ भी निश्चित रूप से नहीं सोच पाये सिवाय इसके कि वह और उसका वजीर उस राजा से जा कर मिलते हैं और उसके आने का उद्देश्य पता करते हैं।

सब लोगों के जाने के करीब एक घंटे बाद राजा और वजीर अपने कुछ नौकरों को साथ ले कर अपने मन में चिन्ता लिये शहर के बाहर लगे कैम्प की तरफ चले ताकि वे उस राजा के आने का उद्देश्य पता लगा सकें। ऐसा लग रहा था जैसे कि ये लोग शाही पार्टी के बजाय किसी तीर्थयात्रा पर जा रहे हों।

इस बीच गुल्लाला शाह अपने नौकरों को बहका कर अपने शाही घर से निकलने में कामयाब हो गया। वह अपने कैम्प पहुँचा और राजा के वेश में आ गया। जब राजा को उससे मिलवाया गया तो उसने गुल्लाला शाह को बिल्कुल भी नहीं पहचाना।

वे लोग रस्मो रिवाज के साथ मिले एक दूसरे को भेंटें दी गयीं और फिर दोनों बात करने के लिये बैठे। बात गुल्लाला शाह ने शुरू

की राजा के देश और उसके लोगों के बारे में पूछ कर। तब राजा ने पूछा कि वह वहाँ कब आया और कहाँ से आया।

गुल्लाला शाह ने उसे अपने बारे में बताया और उससे कहा कि वह उसकी बेटी का हाथ माँगने आया था। राजा बोला — "बड़े अफसोस की बात है राजा साहब कि मैंने अपनी एक कसम के अनुसार अपनी बेटी की शादी एक भिखारी से तय कर दी है।

अगर ऐसा न हुआ होता तो मैं आपके अलावा और किसी से उसकी शादी करता ही नहीं। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि इसके लिये आप मुझ पर दया करें क्योंकि यह बात मैं आपसे बड़े दुखी मन से कह रहा हूँ।"

गुल्लाला शाह बोला — आप बहुत ही न्यायप्रिय कुलीन और अच्छे राजा हैं। आपने यह कर के बहुत अच्छा काम किया है। अपनी जान गँवाना अपना राज्य हारना और अपना सब कुछ खोना अपने वायदे से फिरने से ज़्यादा अच्छा है।

क्या ही अच्छा होता अगर दुनियाँ के सारे राजा ऐसे होते जैसे आप हैं। तब लोग ज़्यादा खुश रहते ज़्यादा खुशहाल होते और सारी दुनियाँ में शान्ति होती। अल्लाह ने आपको खुशहाली दी है और आगे भी देता रहेगा। बस आप अपने लोगों के वफादार रहें और अपनी बात पर कायम रहें।

अब मैं आपको एक बात बताता हूँ कि वह भिखारी जिसको अपने अपनी बेटी देने का वायदा किया है वह भिखारी और कोई

नहीं मैं खुद ही हूँ। और मैं वही लड़का हूँ जिसे लोग खरिया के नाम से जानते थे। जिसके पिता बिना किसी वारिस के मर गये थे और जिसकी जायदाद और पैसा राजा ने ले लिये थे।

इस वजह से उसकी माँ ने एक किसान के यहाँ नौकरी की। अल्लाह मेरे साथ था। उसने मुझे बहुत पैसा दिया। फिर मैं आपके एक दूत से मिला जिसने मुझे आपकी इच्छा के बारे में बताया। मैंने उससे कहा कि मैं वे फूल ले कर आऊँगा।

फिर मैं बहुत दिनों तक इधर उधर घूमता रहा। इस घूमने में मैंने बहुत कुछ सीखा बहुत बड़ा और अमीर आदमी बन गया। आखीर में मैं वे फूलों के पेड़ ले कर आपके राज्य लौट आया।

मैंने सोचा कि मैं उन फूलों के साथ आपसे पहले एक भिखारी के रूप में मिलता हूँ ताकि आपके वायदे और न्यायप्रियता को परख सकूँ। पर आप तो अपने वायदे के पक्के निकले।

मैं आपसे विनती करता हूँ कि अगर मैंने इस मामले में कुछ गलत किया हो तो आप मुझे माफ करें और अपनी बेटी की शादी मुझसे कर दें।"

यह कह कर गुल्लाला शाह ने राजा के हाथ पकड़ लिये और उनको अपने साथ इज़्ज़त के साथ बिठाया।

जब राजा ने यह अच्छी खबर सुनी तो वह तो खुशी मारे आपे से बाहर हो गया। उसके मुँह से निकला "अल्लाह का शुकर है।

ओह अल्लाह का शुकर है।" और यह कह कर गुल्लाला शाह को अपने गले लगा लिया।

फिर बोला — "मैं तुम्हें अपनी बेटी जरूर दूँगा पर यह वायदा करने वाला मैं कौन होता हूँ। तुम जो मेरी ताकत के अन्दर है वह जो चाहे माँग लो मैं तुम्हें वही दे दूँगा।"

इस मिलने की खबर तुरन्त ही राजकुमारी को सुनायी गयी तो उसको तो विश्वास ही नहीं हुआ जब तक गुल्लाला शाह खुद उसके सामने नहीं आया और उसने अपने आपको उसे नहीं बताया।

कुछ समय बाद दोनों की शादी बड़ी शानो शौकत के साथ की गयी। गुल्लाला शाह फिर अपनी चार राजकुमारी पत्नियों के साथ खुशी खुशी वहीं रहने लगा क्योंकि पंज फूल भी राजा के नकली नौकर का रूप छोड़ कर फिर अपने असली रूप में आ गयी थी।

गुल्लाला शाह कुछ ही साल में बहुत ही लोकप्रिय और खुशहाल हो गया और राजा के मरने के बाद उसकी राजगद्दी पर बैठा। उसने कुछ और देश भी जीते और सब कुछ उसने बड़ी अच्छी तरह से सँभाला। वह अपने समय का सबसे बड़ा राजा बन गया। सारे राजा उसकी इज़्ज़त करते थे और उसको टैक्स देते थे।

कुछ लोग सोच रहे होंगे कि गुल्लाला शाह इतना बड़ा आदमी बन कर अपनी माँ और रिश्तेदारों को भूल गया होगा पर ऐसा नहीं था। उसने अपनी माँ को ढूँढ लिया और उसको रहने के लिये एक बहुत बढ़िया मकान दिया नौकर चाकर दिये।

उसने उन लोगों का भी पता किया जिन्होंने उसकी गैरहाजिरी में उसकी मॉ की सहायता की थी और उनको अपने राज में अच्छे ओहदे दिये। इस तरह वह सबका प्यारा बन कर रहा।

इसीलिये इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि वह सबका प्यारा था। उसका राज्य बहुत बढ़ा और वह काफी बूढ़ा होने तक राज करता रहा। जब वह मरा तो बूढ़े और बच्चे स्त्री और आदमी गरीब और अमीर सभी को बहुत दुख हुआ।

5 तोता[30]

तोतों की लोक कथाओं की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है। यह एक बड़ी मजेदार लोक कथा है जिसमें एक तोता एक लड़की को एक बुढ़िया के जाल से बचा कर अपनी मनचाही दुलहिन को पा लेता है। तो लो पढ़ो इटली की यह तोते की लोक कथा अब हिन्दी में।

एक बार की बात है कि एक शहर में एक व्यापारी रहता था। उसके एक बेटी थी।

एक बार उस व्यापारी को अपने व्यापार के काम से कहीं बाहर जाना था पर वह अपनी उस बेटी को अकेले छोड़ने से डरता था क्योंकि एक राजा की नजर उसकी बेटी पर थी और वह उस राजा से अपनी बेटी की शादी करना नहीं चाहता था।

जाना जरूरी था सो जाने से पहले उसने अपनी बेटी से कहा — "बिटिया, मैं ज़रा अपने धन्धे के काम से बाहर जा रहा हूँ पर तुम मुझसे वायदा करो कि जब तक मैं वापस नहीं आता तब तक न तो तुम घर के दरवाजे से बाहर झॉकोगी और न ही किसी और को घर के अन्दर झॉकने दोगी।"

---

[30] The Parrot. A folktale from Monferrato area, Italy, Europe.
Adapted from the book "Italian Folktales" by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980. 200 tales. My translation of 125 stories of this book in Hindi is available with me as e-Books – 8 parts.

वह बोली — “पिता जी, मुझे घर में बिल्कुल अकेले रहते हुए बिल्कुल अच्छा नहीं लग रहा है। क्या मैं एक तोता[31] भी अपने साथ के लिये नहीं रख सकती?”

व्यापारी जो बेचारा अपनी बेटी के लिये ही जीता था तुरन्त बाजार गया और अपनी बेटी के लिये एक तोता खरीद लाया। उसको एक बूढ़ा मिल गया था जिसने उस तोते को एक गीत के बदले में उसे बेच दिया।

वह उस तोते को अपनी बेटी के पास ले गया और उस तोते को उसको दे कर और आखीर तक उसको उपदेश देने के बाद अपने काम पर चला गया।

जैसे ही वह व्यापारी अपने घर से बाहर गया तो उस राजा ने जो उससे शादी करना चाहता था उस लड़की से मिलने की तरकीब सोचनी शुरू कर दी। उसने एक बुढ़िया को बुलाया और उसको उस लड़की के लिये एक चिट्ठी दे कर उस लड़की के घर भेजा।

इस बीच उस लड़की ने तोते से बात करना शुरू कर दिया — “मुझसे बात करो ओ तोते, मुझसे बात करो न।”

तोता बोला — “अच्छा तो लो सुनो, मैं तुमको एक बड़ी अच्छी कहानी सुनाता हूँ —

[31] Translated for the word “Parrot”. Parrots are of many colors and sizes. Parrots are famous for their talking qualities. A picture of Indian green parrot is given above.

“एक बार की बात है कि एक राजा था जिसकी एक ही बेटी थी। वह उसकी अकेली बच्ची थी। उसके न तो कोई और बेटा था और न ही और कोई बेटी ही थी।

उसके साथ कोई खेलने वाला भी नहीं था इसलिये उसके माता पिता ने उसके लिये एक इतनी बड़ी गुड़िया बनवा दी जितनी बड़ी वह खुद थी। उन्होंने उसको वैसे ही कपड़े भी पहना दिये जैसे उनकी बेटी पहनती थी।

अब जहाँ भी वह राजकुमारी जाती उसकी गुड़िया भी उसके साथ ही जाती। दोनों को एक साथ देख कर कोई यह नहीं कह सकता था कि उनमें से कौन सी राजकुमारी थी और कौन सी गुड़िया थी।

एक दिन राजा अपनी बेटी और उसकी गुड़िया को ले कर अपनी गाड़ी में जंगल में से जा रहा था कि रास्ते में दुश्मनों ने उसकी गाड़ी पर हमला कर दिया।

राजा मारा गया और दुश्मन राजा की बेटी को ले कर भाग गये पर गुड़िया को वे वहीं छोड़ गये। उसको नहीं ले गये सो वह वहीं छोड़ी हुई गाड़ी में ही पड़ी रही।

लड़की खूब रोयी खूब चिल्लायी तो दुश्मनों ने उसको भी वहीं छोड़ दिया और भाग गये। वह लड़की बेचारी अकेली जंगल में भटकती रही। भटकते भटकते वह एक रानी के दरबार में पहुँच गयी और वहाँ जा कर वह उस रानी की नौकरानी बन गयी।

वह लड़की बहुत होशियार थी सो रानी उसको बहुत प्यार करती थी। यह देख कर रानी के दूसरे नौकर उससे जलने लगे और उस लड़की को रानी की नजरों में नीचे गिराने के लिये जाल बिछाने लगे।

उन्होंने उस लड़की से कहा — "तुमको तो मालूम है कि रानी जी तुमको बहुत प्यार करती हैं और तुमको हर बात बता देती हैं पर एक बात ऐसी है कि जो हमको मालूम है और तुमको नहीं मालूम।"

लड़की ने पूछा — "ऐसी कौन सी बात है?"

नौकरों ने तब उसको बताया — "वह बात यह है कि रानी के एक बेटा था जो मर गया है।"

यह सुन कर वह लड़की रानी के पास गयी और बोली — "रानी जी क्या यह सच है कि आपके एक बेटा था और वह मर गया है?"

यह सुन कर रानी तो बेहोश होते होते बची। भगवान जाने यह सच्चाई उस लड़की को किसने बतायी क्योंकि केवल यह कहने की सजा कि "रानी का बेटा मर गया था" मौत थी। इसलिये उस लड़की को भी मरने की सजा सुनायी जानी चाहिये थी।

पर रानी को उस लड़की पर दया आ गयी और उसने उसको बजाय मौत की सजा सुनाने के एक तहखाने में बन्द कर दिया।

तहखाने में बन्द होने के बाद वह लड़की बहुत ही उदास और नाउम्मीद हो गयी। उसका खाना पीना छूट गया और वह रात रात भर रोने लगी।

एक दिन आधी रात को जब वह रो रही थी तो उसने दरवाजे की कुंडी खिसकने की आवाज सुनी और पाँच आदमी अन्दर आते देखे। उन पाँच आदमियों में से चार आदमी जादूगर थे और पाँचवाँ रानी का बेटा था। रानी के बेटे को उन जादूगरों ने वहीं उसी रानी के तहखाने में कैद कर रखा था जिसको वे इस समय घुमाने ले जा रहे थे।”

उसी समय उस लड़की की नौकरानी ने तोते की वह कहानी बीच में ही रोक दी। वह उस लड़की के लिये किसी की चिट्ठी ले कर आयी थी।

असल में वह चिट्ठी उसी राजा की थी जो उस लड़की से बहुत प्यार करता था और उससे शादी करना चाहता था। और उस लड़की का पिता भी उसी के डर से अपनी बेटी को अकेला छोड़ना नहीं चाहता था। उस राजा ने किसी तरह व्यापारी की उस लड़की तक पहुँचने की तरकीब निकाल ही ली थी।

पर लड़की को तो उस तोते की कहानी बहुत अच्छी लग रही थी और वह यह जानने के लिये बहुत उत्सुक थी कि उस कहानी में आगे क्या हुआ क्योंकि अभी तो उसमें उस कहानी का सबसे अच्छा हिस्सा आने वाला था।

वह अपनी नौकरानी से बोली — "मैं कोई चिट्ठी नहीं लूँगी जब तक मेरे पिता जी नहीं आ जाते। तोते, तुम अपनी कहानी जारी रखो।"

वह नौकरानी वह चिट्ठी वहाँ से वापस ले गयी और तोते ने अपनी कहानी फिर से शुरू कर दी —

"सुबह को जेलर ने देखा कि उस लड़की ने तो कुछ खाया ही नहीं है। यह बात उसने जा कर रानी से कही।

यह सुन कर रानी ने उस लड़की को बुला भेजा तो लड़की ने उसे बताया कि उसका बेटा तो ज़िन्दा था और वह भी वहीं उसी तहखाने में ही चार जादूगरों का कैदी था। वे उसको हर रात घुमाने ले जाते थे।

रानी यह सुन कर बहुत खुश हुई। उसने तुरन्त ही अपने बारह सिपाही क्रोबार[32] ले कर तहखाने में भेज दिये। उन्होंने उन चारों जादूगरों को मार डाला और रानी के बेटे को उनसे छुड़ा कर ले आये।

रानी अपना बेटा पा कर बहुत खुश हुई। उसके बाद रानी ने उस लड़की की शादी अपने बेटे से कर देने के लिये सोचा क्योंकि उसी ने तो उसको ज़िन्दा किया था और जादूगरों के हाथ से बचाया था।"

[32] Crowbar – a kind of iron rod with a turned end. See its picture above.

तभी उस लड़की की नौकरानी ने फिर से दरवाजा खटखटाया और ज़ोर दिया कि उसको वह चिट्ठी पढ़ लेनी चाहिये।

लड़की बोली — "ठीक है ठीक है। अब जब यह कहानी खत्म हो ही गयी है तो मैं यह चिट्ठी पढ़ सकती हूँ।"

पर तभी तोता जल्दी से बोला — "पर यह कहानी अभी खत्म नहीं हुई अभी तो कहानी और बची है। तुम सुनो तो।"

वह आगे बोला — "लेकिन वह लड़की उस रानी के बेटे से शादी नहीं करना चाहती थी। उसने रानी से उसके बदले में धन माँगा और एक आदमी के कपड़े माँगे।

रानी ने जब उसको धन और कपड़े दोनों दे दिये तो वह उस राज्य को छोड़ कर वहाँ से दूसरे शहर चल दी।

इस दूसरे शहर के राजा का बेटा बीमार था और कोई डाक्टर उसको ठीक नहीं कर पा रहा था। उसकी बीमारी यह थी कि आधी रात से ले कर सुबह तक वह ऐसा हो जाता था जैसे किसी भूत प्रेत या आत्मा ने उसके ऊपर अपना असर कर रखा हो।

यह लड़की आदमी के वेश में वहाँ गयी और उन लोगों से कहा कि वह डाक्टर है और किसी दूसरे देश से आया है। वह राजा के बेटे का इलाज करना चाहता है और इस इलाज के लिये वह उस राजा के नौजवान बेटे के साथ एक रात अकेला रहना चाहता है।

कोई राजा के बेटे का इलाज कर दे इससे अच्छी बात और क्या हो सकती थी सो उसको राजा के बेटे के साथ एक रात अकेले रहने की इजाज़त दे दी गयी।

सबसे पहले तो उस लड़की ने राजा के बेटे के पलंग के नीचे देखा तो वहाँ उसको एक चोर दरवाजा दिखायी दिया। उसने वह चोर दरवाजा खोला और उसके अन्दर चली गयी। वहाँ से वह एक बरामदे में निकल आयी थी। बरामदे के दूसरे छोर पर उसको एक जलता हुआ लैम्प दिखायी दिया।"

उसी समय नौकरानी ने फिर से दरवाजा खटखटाया और उस लड़की को बताया कि एक बुढ़िया उस लड़की से मिलना चाहती थी।

वह बुढ़िया कहती थी कि वह उस लड़की की चाची थी। पर असल में यह बुढ़िया उस लड़की की कोई चाची वाची नहीं थी यह तो उसी राजा की भेजी हुई बुढ़िया थी जो उसको बहुत प्यार करता था और उससे शादी करना चाहता था।

पर वह लड़की तो कहानी सुनने में इतनी मस्त थी कि उसने अपनी नौकरानी से कहा कि वह अभी इस समय किसी बुढ़िया वुढ़िया से मिलना नहीं चाहती और फिर तोते से बोली — "तोते, तुम अपनी कहानी जारी रखो।"

तोते ने अपनी कहानी फिर आगे बढ़ायी — "सो वह लड़की उस बरामदे में आगे बढ़ती गयी, बढ़ती गयी और लैम्प के पास तक

पहुँच गयी। वहाँ जा कर उसने देखा कि एक बुढ़िया आग पर एक बर्तन में राजकुमार का दिल उबाल रही है।

ऐसा वह इसलिये कर रही थी क्योंकि राजा ने उसके लड़कों को फाँसी दिलवा दी थी। लड़की ने उस बर्तन से राजकुमार का दिल निकाल लिया और उसको राजकुमार के पास खाने के लिये ले गयी। जैसे ही राजकुमार ने अपना दिल खाया राजकुमार ठीक हो गया।

राजा को बाद में पता चला कि वह कोई लड़का नहीं था बल्कि एक लड़की थी।

राजा बोला — "तुमने मेरे बेटे को ठीक किया है इसलिये अपना आधा राज्य मैं तुमको देता हूँ पर तुम क्योंकि एक लड़की हो इसलिये तुम मेरे बेटे से शादी कर लो और रानी बन जाओ।"

व्यापारी की लड़की बोली — "यह तो बड़ी अच्छी कहानी है। अब तो कहानी खत्म हो गयी अब मैं उस स्त्री से मिल सकती हूँ जो कहती है कि वह मेरी चाची है।"

पर तोता फिर बोला — "पर अभी यह कहानी खत्म नहीं हुई। अभी तो कहानी और है। तुम सुनती रहो।"

और तोते ने अपनी कहानी आगे बढ़ायी — "सो उस लड़की ने इस राजा के बेटे से भी शादी नहीं की और दूसरे शहर चल दी।

इस शहर के राजा का बेटा भी किसी के जादू के असर में था। वह बोलता नहीं था। वहाँ भी उसने उस लड़के के साथ एक रात अकेले रहने की इजाज़त माँगी जो उसको तुरन्त ही दे दी गयी।

रात को वह उस लड़के के पलंग के नीचे छिप गयी। आधी रात को उसने खिड़की के रास्ते से दो जादूगरनियाँ आती देखीं। उन्होंने उस लड़के के मुँह से पत्थर का एक छोटा सा टुकड़ा निकाला तो वह बोलने लगा। पर जाने से पहले वे जादूगरनियाँ उस पत्थर के टुकड़े को फिर से उस लड़के के मुँह में रख गयीं तो वह फिर नहीं बोल सका।"

तभी किसी ने फिर दरवाजा खटखटाया पर व्यापारी की लड़की अपनी कहानी सुनने में इतनी मस्त थी कि उसने उस खटखटाहट की आवाज ही नहीं सुनी और उस तोते ने अपनी कहानी जारी रखी — "उस लड़की ने फिर से राजा से उसके बेटे के कमरे में रहने की इजाज़त माँगी जो उसको मिल गयी।

अगली रात जब वे जादूगरनियाँ दोबारा आयीं और उन्होंने वह पत्थर का टुकड़ा राजा के बेटे के मुँह से निकाल कर उसके बिस्तर पर रखा तो उस लड़की ने उसके बिस्तर की चादर को एक झटका दिया और वह पत्थर उस राजकुमार के बिस्तर से नीचे गिर गया।

लड़की ने हाथ बढ़ा कर उस पत्थर को उठा लिया और अपनी जेब में रख लिया। सुबह को जब वे जादूगरनियाँ जाने लगीं और उन्होंने उस पत्थर के टुकड़े को राजा के बेटे के मुँह में रखने के लिये

खोजा तो उनको वह पत्थर ही नहीं मिला। पत्थर न पा कर वे वहाँ से भाग लीं।

अगले दिन राजकुमार ठीक था तो उस शहर वालों ने उस लड़के का नाम ही डाक्टर रख दिया।”

दरवाजे पर खटखटाहट चालू रही और व्यापारी की लड़की “अन्दर आ जाओ” कहने ही वाली थी कि उसने पहले तोते से पूछा — “अभी यह कहानी और है या खत्म हो गयी?”

तोता बोला — “यह कहानी तो अभी और है। तुम सुनती रहो। पर वह लड़की वहाँ डाक्टर के रूप में भी रुकने के लिये तैयार नहीं थी सो वह एक और शहर चली गयी।

इस शहर में जा कर उसने सुना कि वहाँ का राजा पागल हो गया है। वह पागल इसलिये हो गया था कि जंगल में उसको एक गाड़ी में पड़ी एक गुड़िया मिल गयी थी और वह उस गुड़िया के प्यार में पागल था।

बस वह हमेशा ही अपने कमरे में बैठा रहता और उस गुड़िया को देखता रहता और रोता रहता। रोता वह इसलिये था कि वह ज़िन्दा नहीं थी। वह लड़की राजा के सामने गयी तभी भी वह उस गुड़िया को लिये बैठा था और रो रहा था।

उसको देखते ही वह बोली — “अरे यह तो मेरी गुड़िया है। यह आपको कहाँ से मिली?”

और राजा उसको देखते ही बोला — "यह तो मेरी दुलहिन है।"

राजा इस बात पर चकित था कि उन दोनों की सूरतें कितनी मिलती जुलती थीं और किस तरीके से वह उसको देखते ही पहचान गया।"

दरवाजे पर फिर से खटखटाहट हुई तो अब की बार तोता बहुत परेशान हो गया क्योंकि वह अपनी कहानी को इससे आगे नहीं बढ़ा पा रहा था पर फिर भी वह बोला — "एक मिनट, एक मिनट। बस ज़रा सी कहानी और बची है वह हम और खत्म कर लें फिर तुम अपनी चाची से मिल लेना।"

पर उसको उस कहानी को आगे बढ़ाने का कोई मसाला ही नहीं मिल रहा था। अब वह उस कहानी को आगे कैसे बढ़ाये।

तभी किसी ने दरवाजा फिर से खटखटाया और आवाज लगायी — "दरवाजा खोलो बेटी, दरवाजा खोलो। मैं तुम्हारा पिता।"

सो तोता बोला — "ठीक है, बस तुम्हारे पिता जी आ गये। अब हम यह कहानी यहीं खत्म करते है। राजा ने उस लड़की से शादी कर ली और वे लोग खुशी खुशी रहने लगे।"

कहानी खत्म हो गयी थी सो वह लड़की तुरन्त ही दरवाजा खोलने चली गयी और दरवाजा खोल कर अपने पिता से लिपट गयी।

पिता बोला — "मुझे लग रहा है कि आज तुम मेरा कहा मान कर घर में ही रहीं। और हाँ तुम्हारा तोता कैसा है?"

"बहुत अच्छा है पिता जी।"

सो वे दोनों तोते को देखने अन्दर गये तो उन्होंने देखा कि तोता तो वहाँ कहीं नहीं था बल्कि उस तोते की जगह एक बहुत ही सुन्दर नौजवान खड़ा था।

वह नौजवान उस लड़की के पिता से बोला — "मुझे माफ कीजियेगा जनाब। मैं एक राजा हूँ जिसको एक तोते में बदल दिया गया था क्योंकि मैं आपकी बेटी से बहुत प्यार करता था।

मुझे मालूम था कि मेरा एक दुश्मन राजा इनको भगा ले जाना चाह रहा था तो मैं एक तोते का रूप रख कर इनको एक इज़्ज़तदार ढंग से इनका मन बहलाने के लिये और इनको उस दुश्मन राजा के चंगुल से बचाने के लिये यहाँ आ गया।

मुझे पूरा भरोसा है कि मैंने अपने ये दोनों काम सफलता से निभा दिये हैं और अब मैं आपसे अपनी शादी के लिये आपकी बेटी का हाथ माँगता हूँ। अगर आप इजाज़त दें तो।"

यह सुन कर व्यापारी बहुत खुश हुआ। उसने शादी के लिये हाँ कर दी और अपनी बेटी की शादी उस राजा से कर दी। यह सुन कर वह दुश्मन राजा तो बहुत गुस्से से भर गया पर वह कुछ कर नहीं सका। दूसरा तोता राजा और व्यापारी की बेटी दोनों बहुत दिनों तक खुशी खुशी राज करते रहे।

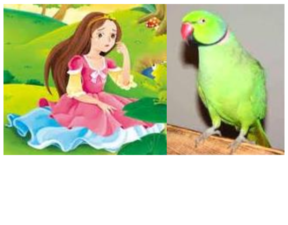

6 तोता–पहला रूप[33]

एक बार एक सौदागर था जिसके एक सुन्दर बेटी थी जिसको राजा और वाइसराय दोनों ही बहुत प्यार करते थे। राजा को मालूम था कि सौदागर जल्दी ही अपने काम पर बाहर जाने वाला है तो उसको लगा कि तब उसको उस लड़की से बात करने का मौका मिलेगा।

वायसराय भी इस बात को जानता था। वह इस सोच में था कि वह किस तरह वह राजा को उस लड़की से मिलने से कैसे रोके।

वह एक जादूगरनी को जानता था। वह उसके पास गया उसको निडर किया बहुत सारा पैसा देने का वायदा किया और उससे पूछा कि वह अपने आपको एक तोते में कैसे बदल सकता है। उसने उसको यह सिखा दिया। सौदागर ने उस तोते को अपनी बेटी के लिये खरीद लिया।

जब तोता ने सोचा कि अब राजा आता ही होगा तो उसने लड़की से कहा — "अब तुम्हारा मन बहलाने के लिये मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ पर जब मैं तुम्हें कहानी सुना रहा होऊँगा तो बीच में तुम किसी से न बात करोगी और न किसी से मिलोगी।"

[33] The Parrot : First Version. Version from Pissa. From "Italian Popular Tales". By Thomas Frederick Crane. 1880. The Hindi translation of this book is available with me as e-Book.

उसके बाद उसने अपनी कहानी कहनी शुरू की। उसने अभी कुछ ही देर तक कहानी सुनायी होगी कि उसकी नौकरानी एक सन्देश ले कर आयी कि उसके लिये एक चिट्ठी आयी है।

तोता बोला — "उससे कहो कि वह थोड़ी देर में ले कर आये। अब तुम मेरी बात सुनो।"

लड़की ने भी कहा — "जब तक मेरे पिता नहीं हैं मैं तब तक किसी की चिट्ठी स्वीकार नहीं कर सकती।"

उसने फिर कहानी कहनी शुरू कर दी। कुछ समय बाद फिर कोई बीच में आया। नौकरानी ने कहा कि "आपसे आपकी कोई चाची मिलने आयी हैं।" वास्तव में तो वह उसकी चाची वाची नहीं थी बल्कि एक स्त्री थी जिसे राजा ने भेजा था।

तोता बोला — "तुम उसको मत बुलाओ। अभी तो हमारी कहानी का बहुत ही मजेदार हिस्सा आने वाला है।"

तो वह लड़की अपनी दासी के हाथ यह खबर भेज देती है कि इस समय वह किसी मेहमान से नहीं मिल सकती। तोता फिर अपनी कहानी सुनाता रहता है।

जब उसकी कहानी खत्म हो गयी तो वह लड़की उससे इतनी खुश हुई कि वह तब तक किसी को नहीं सुनना चाहती थी जब तक उसके पिता नहीं आ जाते।

उनके आने के बाद तोता गायब हो जाता है और वायसराय उससे मिलने के लिये आता है और सौदागर से उसकी बेटी का हाथ

मॉगता है। सौदागर राजी हो जाता है और शादी होती है। पर शादी की रस्में अभी खत्म भी नहीं होती हैं कि एक भला आदमी लड़की का हाथ राजा के लिये मॉगने के लिये आता है।

पर अब तो बहुत देर हो गयी होती है और बेचारा राजा जो उस लड़की को बहुत प्यार करता है दिल टूटने की वजह से मर जाता है। लड़की वायसराय की पत्नी बन जाती है जो राजा से कहीं ज़्यादा चालाक था।

इस कहानी में हमने तोते के द्वारा सुनायी गयी कहानियाँ नहीं दी हैं क्योंकि हम उन्हें सिसिली में कहे सुने जाने वाले रूप में देने वाले हैं। और इसके फ्लोरैन्स वाले रूप में भी। यह कहानी हमने केवल इसलिये यहाँ दी है क्योंकि इस कहानी का यह रूप जिस संग्रह में दिया हुआ है वह बहुत मुश्किल से मिलता है।

7 तोता–दूसरा रूप[34]

एक बार की बात है कि एक सौदागर था जो अपने काम के सिलसिले में एक लम्बी यात्रा पर जा रहा था सो उसने अपनी पत्नी को उसके मन बहलाने के लिये एक तोता ला दिया।

पत्नी बहुत दुखी थी कि उसका पति जल्दी ही चला जायेगा। उसने चिड़िया को एक कोने में फेंक दिया और फिर उसके बारे में दोबारा सोचा भी नहीं।

शाम को वह अपनी खिड़की पर गयी तो उसको एक नौजवान गुजरता हुआ दिखायी दिया। उस नौजवान ने जैसे ही सौदागर की पत्नी को देखा तो उसको उससे प्यार हो गया।

पहली मंजिल पर एक स्त्री रहती थी जो कोयला बेचती थी। उस नौजवान ने उससे विनती की वह उस लड़की के साथ अपने सम्बन्ध बनाने में उसकी सहायता कर दे।

उसने वायदा तो नहीं किया क्योंकि सौदागर की शादी को अभी कुछ ही दिन हुए थे और वह एक ईमानदार लड़की थी। फिर उसने कहा कि एक तरीका है। उसकी अपनी बेटी की शादी होने वाली थी तो वह सौदागर की पत्नी को उसमें बुलायेगी तो वह उसको भी बुला लेगी पर फिर उसे खुद ही सँभालना पड़ेगा।

---

[34] The Parrot – Second Version. Version from Florence. From “Italian Popular Tales”. By Thomas Frederick Crane. 1880. The Hindi translation of this book is available with me as e-Book.

सो उस स्त्री ने अपनी बेटी की शादी के मौके पर सौदागर की पत्नी को बुलाया और उसने उसका बुलावा स्वीकार भी कर लिया। पत्नी ने अपने सबसे अच्छे कपड़े पहने और जाने के लिये तैयार ही थी कि तोता जिसे उसने कोने में फेंक दिया था बोला — "मैडम कहाँ जा रही हो। मैं तुम्हें एक कहानी सुनाना चाहता हूँ अगर तुमको अच्छा लगे तो।"

सौदागर ने उस कोयले वाली को विदा किया। कोयले वाली स्त्री ने भी बात को बिगाड़ना नहीं चाहा सो उसने शादी को टालने का वायदा किया और अगले दिन आने का वायदा किया।

तब तोते ने अपनी कहानी शुरू की —

"एक बार की बात है कि एक राजा का एक बेटा था जिसका गुरू जादू में इतना होशियार था कि वह कुछ शब्द बोलने पर ही अपने आपको अलग अलग जानवरों में बदल सकता था। राजकुमार ने चाहा कि उसका गुरू उसको भी वे शब्द सिखा दे पर जादूगर कुछ हिचकिचा रहा था सो उसने मना कर दिया। पर फिर उसे राजकुमार की इच्छा पूरी करनी ही पड़ी।

सो राजकुमार कौआ बन गया और उड़ कर एक दूर देश में चला गया। वह वहाँ के राजा के बागीचे में पहुँच गया। वहाँ उसने एक बहुत सुन्दर लड़की देखी जिसके हाथ में एक शीशा था और जिसमें उसकी तस्वीर लगी हुई थी। कौए ने उसके हाथ से वह तस्वीर छीन ली और अपने घर उड़ गया।

घर पहुँच कर उसने अपना रूप बदल लिया। वह अपने असली रूप में आ गया। पर वह उस अनजान लड़की को इतना प्यार करने लगा था कि वह उसकी याद में बीमार पड़ गया।

इस बीच वह लड़की जो राजा की बेटी थी अपनी तस्वीर अपने हाथ से छीनी जाती देख कर बहुत परेशान थी। उसके दिमाग को शान्ति नहीं थी। उसने अपने पिता से विनती की कि वह उसको उसकी तस्वीर की खोज में जाने दें। पिता ने उसे इजाज़त दे दी।

उसने एक डाक्टर का रूप रखा और चल दी। वह एक देश में आयी जहाँ के राजा ने मुनादी पिटवा रखी थी कि जो कोई डाक्टर उसके देश से गुजरे उसे उसके पास आना पड़ेगा क्योंकि उसकी बेटी बहुत बीमार है।

सो इस नये डाक्टर को महल जाना पड़ा पर वह उसकी उस बीमारी की को दवा नहीं खोज सकी। रात को वह राजकुमारी के बिस्तर के पास बैठी हुई थी कि रोशनी चली गयी। सो वह कमरे में रोशनी लाने के लिये बाहर चली गयी।

बार उसने एक छोटा सा मकान देखा तो उसने देखा कि वहाँ तीन बुढ़ियें एक बर्तन के चारों तरफ बैठी हैं जो आग पर रखा है और उसमें पानी उबल रहा है।

उसने उनसे पूछा — "क्या आप कुछ धो रही हैं।"

वे बोलीं — "क्या धोना? ये तीन सिर इसमें उबल रहे हैं। जब ये उबल जायेंगे तब राजकुमारी मर जायेगी।"

डाक्टर ने कहा — "अरे वाह भली स्त्रियों। आप लकड़ी और ले आयें मैं भी आपकी सहायता करता हूँ।"

वह वहाँ कुछ देर तक तो बैठी रही पर फिर फिर से आने का वायदा कर के चली गयी। आग जितनी तेज़ जलती जाती थी राजकुमारी के मरने का समय पास आता जाता था। डाक्टर ने राजा को तसल्ली दी और उसको बढ़िया खाना तैयार करने के लिये कहा।

अगली रात उसने वह खाना लिया और बहुत बढ़िया वाइन ली और उन बुढ़ियों के पास चल दी। जब वे उसको पी कर बेहोश सी हो गयीं उसने उन तीनों बुढ़ियों को आग में डाल दिया और वह बर्तन जिसमें तीनों सिर उबल रहे थे आग पर से उतार दिया।

उस बर्तन के आग पर से हटाते ही राजकुमारी ठीक होने लगी। राजा अपनी बेटी को उसको देना चाहता था और सोना और जवाहरात देना चाहता था पर डाक्टर ने कुछ नहीं लिया और वहाँ से चला गया।"

तोता बोला — "मैडम। बहुत देर हो गयी है। देखो न मैं अब थक गया हूँ। बाकी की बची हुई कहानी मैं तुम्हें कल सुनाऊँगा।"

अगले दिन कोयला बेचने वाली स्त्री फिर आयी। सौदागर की पत्नी फिर से उसके साथ जाने के लिये तैयार थी पर तोते ने उसे रोक लिया और उससे वायदा किया कि वह उस दिन अपनी कहानी खत्म कर देगा।

सो कोयला बेचने वाली स्त्री गुस्से में भरी लौट गयी और तोते ने अपनी कहानी आगे बढ़ायी —

"इस तरह डाक्टर के वेश में राजकुमारी वहाँ से चल कर एक दूसरे देश में आयी। वहाँ के राजा ने एक मुनादी पिटवा रखी थी कि जो कोई भी डाक्टर उसके राज्य से गुजरे वह उससे जरूर ही मिले क्योंकि उसके बेटे की तबियत बहुत खराब थी।

सो इस नये डाक्टर को यहाँ भी राजा के पास जाना पड़ा। यहाँ भी वह राजकुमार की बीमारी के इलाज का पता नहीं चला सका।

पर रात को जब वह राजकुमार के बिस्तर के पास बैठा हुआ था तो उसने साथ वाले में कमरे में बहुत ज़ोर का शोर सुना। सो वह दरवाजे के पास गया और देखा तो वहाँ तीन बुढ़ियें दावत की तैयारी कर रही थीं।

बाद में वे बीमार राजकुमार के पास गयीं उसको सिर से पैर तक तेल लगाया और उसको मेज तक ले गयीं। फिर उन्हाहेंने शराब पीनी शुरू की और आनन्द मनाना शुरू किया। उन्होंने फिर से उसे तेल लगाया और पहले से भी बुरी हालत में उसे छोड़ गयीं।

डाक्टर ने राजा को बहुत तसल्ली दी। दूसरी रात को उसने उनको राजकुमार को वहाँ से हटाने दिया। फिर वह वहाँ कमरे में प्रगट हो कर राजा के गुस्से की धमकी दे कर उन सबको भगा दिया और राजा के बेटे को राजा को दे आया।

राजा उससे बहुत खुश हुआ और उसने उसे बहुत सा इनाम देना चाहा पर डाक्टर ने उससे कुछ नहीं लिया और वहाँ से चला गया।"

तोता बोला — "अब बहुत देर हो चुकी है सो अब मैं तुम्हें यह कहानी कल सुनाऊँगा। अभी मैं बहुत थक गया हूँ।"

अगले दिन कोयला बेचने वाली फिर से वापस आयी। सौदागर की पत्नी इसके साथ जाने ही वाली थी कि तोते ने उसे रोक लिया और कहानी खत्म करने का वायदा किया। कोयला बेचने वाले स्त्री वहाँ से फिर से गुस्सा हो कर चली गयी।

तोते ने फिर अपनी कहानी शुरू की —

"लम्बी यात्रा के बाद राजकुमारी जिसने एक डाक्टर का वेश रखा हुआ था एक और देश में आ गयी। यहाँ भी उसने राजा की एक मुनादी सुनी कि जो कोई डाक्टर इस राज्य से गुजरे तो वह राजा के पास मिल कर जाये। सो यहाँ भी उसे राजा के पास जाना ही पड़ा।

यहाँ भी उसका बेटा बीमार था। इसकी बीमारी का इलाज भी यहाँ का कोई डाक्टर पता नहीं चला सका। राजकुमार किसी से बोलता नहीं था बल्कि अपनी बीमारी किसी को बताता भी नहीं था।

पर आखिर उसने डाक्टर को वह राज़ बता ही दिया जिसकी वजह से वह बीमार था। उसने उस तस्वीर की बात उसको बता ही दी जिसको ले कर वह बीमार पड़ा था।

डाक्टर ने राजा को बहुत तसल्ली दी। उसने वैसे ही कपड़े और गहना बनवाया जैसा कि उस तस्वीर में उस लड़की ने पहन रखा था। फिर वह उनको पहन कर राजकुमार के सामने गयी।

जैसे ही राजकुमार ने उसे देखा तो वह तो बिस्तर से कूद कर जमीन पर खड़ा हो गया और अपने प्यार को गले लगा लिया।"

यहाँ इस समय पत्नी अपने पति के आने की आवाज सुनती है। वह बहुत खुश हो जाती है। वह बेचारे तोते को खिड़की से बाहर फेंक देती है जिसको वह अब अपना एक थका देने वाला साथी समझती है।

सौदागर आ कर तोते के बारे में पूछता है। देखता है कि उसका तोता पड़ोसी की छत पर घायल सा पड़ा है तो वह उसे बड़ी नर्मी से उठा कर लाता है।

तब तोता उसको कोयला बेचने वाली की चालाकी बताता है और साथ में जो कुछ उसने किया वह भी बताता है। वह सौदागर को विश्वास दिलाता है कि उसकी पत्नी ने कोई गलती नहीं की है।

पर वह इस बात की शिकायत करता है कि उसकी पत्नी बहुत ही कृतघ्न है। उसने उसको एक सोने का पिंजरा देने का वायदा किया था पर उसने उसके लिये वह तो बनवाया नहीं बल्कि उलटे उसके साथ ऐसा व्यवहार किया।

सौदागर मरती हुई चिड़िया को तसल्ली देता है और बाद में उसके शरीर को दवाओं से सुरक्षित कर के सोने के पिंजरे में रख देता है। अपनी पत्नी को वह और भी ज़्यादा प्यार करने लगता है।

8 तोता जो तीन कहानियाँ सुनाता है[35]

एक समय की बात है कि एक बहुत ही अमीर सौदागर था जो शादी करना चाहता था। वह इतनी अच्छी पत्नी चाहता था जितना लम्बा दिन होता है और जो अपने पति को बहुत बहुत प्यार करती। उसको ऐसी पत्नी मिल गयी।

एक दिन पत्नी ने पति को थोड़ा सा परेशान देखा तो उससे पूछा — "प्रिय। क्या बात है आप इतना परेशान क्यों हैं?"

"क्या मैं परेशान हूँ? मुझे एक बहुत जरूरी काम है जिसे मुझे वहीं उसी जगह पर जा कर देखना होगा।"

पत्नी बोली — "तो आप इस बात को ले कर इतने परेशान हैं। चलिये इस बात को हम इस तरह से सुलझाते हैं। आप मेरे लिये खाने आदि का सब सामान ले कर छोड़ जाइये। घर के सारे दरवाजे और खिड़कियाँ बन्द कर जाइये। केवल एक सबसे ऊपर की खिड़की खुली छोड़ जाइये। मेरे लिये एक जालीदार खिड़की बनवा दीजिये और आराम से जाइये।"

पति बोला — "तुम्हारी यह सलाह बहुत अच्छी है।"

कह कर उसने घर में बहुत सारा आटा रोटी तेल और कोयला सब कुछ रखवा दिया। सारे खिड़की दरवाजे बन्द कर दिये सिवाय

---

[35] The Parrot Which Tells Three Stories. From "Italian Popular Tales". By Thomas Frederick Crane. 1880. The Hindi translation of this book is available with me as e-Book.

एक सबसे ऊँची वाली खिड़की के जो हवा अन्दर आने के काम आती। एक जालीदार खिड़की बनवायी और चला गया। पत्नी अब अपनी एक दासी के साथ घर में अकेली रह गयी। अगले दिन एक नौकर को जालीदार खिड़की में से कहा गया जो कुछ भी उसे करना था। फिर वह भी चला गया।

इस तरह से दस दिन बीत गये। अब पत्नी ऊब गयी थी उसको ऐसा लगा कि वह ज़ोर ज़ोर से रोये। उसकी दासी बोली — "मालकिन आप इतनी उदास क्यों होती हैं। हर चीज़ की दवा है। मैं यह मेज इस खिड़की तक खींचती हूँ। आप इस पर खड़ी हो कर बाहर का दृश्य देखें।"

सो मेज खिड़की के नीचे तक खींच दी गयी और पत्नी उस पर चढ़ कर बाहर का दृश्य देखने लगी। जैसे ही उसने बाहर देखा तो उसके मुँह से निकला — "आह। जनाब मैं आपको धन्यवाद देती हूँ।"

अभी उसके मुँह से केवल "आह" शब्द ही निकला था कि उसके सामने दो नौजवान आ गये। उनमें से एक नोटरी था दूसरा घुडसवार था। उन्होंने उसकी "आह" की आवाज सुनी तो उनका ध्यान उधर गया और उन्होंने उस तरफ देखा तो घुड़सवार के मुँह से निकला "देखो यह कितनी सुन्दर स्त्री है। मुझे इससे बात करनी है।"

नोटरी बोला — “नहीं इससे पहले मैं बात करूँगा।”

“नहीं पहले मैं।”

“नहीं पहले मैं।”

उन्होंने दोनों ने चार सौ औंस की शर्त लगायी कि जो कोई पहले बोलेगा वही जीतेगा। पत्नी ने भी उन दोनों को देखा तो वह खिड़की से हट गयी।

नोटरी और घुड़सवार दोनों ने शर्त के बारे में सोचा तो वे बेचैन हो उठे। बेचैनी में वे इधर उधर घूमते रहे और स्त्री से बोलने की तरकीबें सोचने लगे।

आखिर नोटरी कुछ निराश हो गया तो वह एक मैदान में चला गया और वहाँ पहुँच कर अपने राक्षस को बुलाना शुरू किया। राक्षस उसके बुलाने पर उसके सामने प्रगट हुआ तो नोटरी ने उसको सब कुछ बता दिया और कहा कि यह घुड़सवार उस स्त्री से पहले बोलना चाहता है।

राक्षस बोला — “मैं अगर तुम्हारा यह काम कर दूँ तो तुम मुझे क्या दोगे।”

“अपनी आत्मा।”

“तब तुम यह करो कि मैं तुम्हें एक तोते में बदल देता हूँ। तुम उड़ कर उस स्त्री की खिड़की पर बैठ जाना। नौकरानी तुम्हें ले जायेगी और फिर तुम्हारे लिये एक चाँदी का पिंजरा बनवा देगी और तुम्हें उसमें रख देगी।

घुड़सवार एक बुढ़िया को ढूँढेगा जो उस स्त्री को घर छोड़ कर बाहर निकलने पर मजबूर करने की कोशिश करेगी पर जैसा कि तुम्हें पता है वह ऐसा कर नहीं पायेगी। वह बुढ़िया तीन बार तुम्हारे पास आयेगी। उस समय तुम गुस्से में आ कर अपने पंख नोच डालना और उड़ने की कोशिश करना और बस यही कहते रहना —

"मेरी प्यारी माँ। तुम उस बुढ़िया के साथ मत जाओ। वह तुम्हें धोखा देगी। तुम यहीं बैठो मेरे पास मैं तुम्हें कहानी सुनाता हूँ।" और फिर तुम उसको जो चाहो वह कहानी सुनाना।"

राक्षस ने बाद में कहा — "तुम आदमी हो। तुम तोते बन जाओ।"

नोटरी तुरन्त ही एक तोता बन गया और खिड़की पर जा कर बैठ गया। दासी ने उसे देखा तो अपने रूमाल की सहायता से उसे उठा लिया। जब पत्नी ने तोते को देखा तो उसके मुँह से निकला — "ओह कितना सुन्दर तोता है। अब तुम्हीं मेरे धीरज के साथी बनोगे।"

"हाँ मेरी प्यारी माँ। मैं तुम्हें प्यार भी बहुत करूँगा।"

पत्नी ने उसके लिये एक चाँदी का पिंजरा बनवा लिया और तोते को उसमें बन्द कर दिया।

अभी हम तोते के पिंजरे में बन्द घर में ही छोड़ते हैं और घुड़सवार के पास चलते हैं। इसको एक बुढ़िया मिलती है तो इससे इसकी परेशानी के बारे में पूछती है।

"मैं तुम्हें यह मामला क्यों बताऊँ।" कह कर वह उसे झिड़क देता है। पर बुढ़िया उसके पीछे ही पड़ी रहती है तो उससे बचने के लिये फिर वह उसे सब बताता है – अपनी शर्त भी।

बुढ़िया बोली — "मैं तुम्हें उस स्त्री से बात करवा सकती हूँ। तुम मेरे लिये दो फलों की टोकरी तैयार करवा दो।"

घुड़सवार उस स्त्री से मिलने के लिये इतना बेताब हो रहा था कि उसने तुरन्त ही फलों की दो टोकरियाँ तैयार करवा दीं। ये दोनों टोकरियाँ ले कर वह बुढ़िया जालीदार खिड़की के पास गयी और अपने आपको स्त्री की नानी बताया।

स्त्री ने उसका विश्वास कर लिया। एक बात से दूसरी बात निकलती है। बुढ़िया बोली — "ओ मेरी धेवती। तुम हमेशा ही बन्द क्यों रहती हो। क्या तुम रविवार को मास[36] सुनने भी नहीं जाती?"

"मैं कैसे जा सकती हूँ जबकि मैं यहाँ बन्द रहती हूँ।"

"ओह मेरी बेटी तुमको तो बहुत पाप लगेगा। नहीं नहीं। यह ठीक नहीं है। तुमको रविवार को मास पूजा के लिये तो जाना ही चाहिये। आज दावत का दिन है चलो आज मास के लिये चलते हैं।"

जब बुढ़िया उससे मास चलने के लिये ज़िद कर रही थी तो तोते ने रोना शुरू कर दिया।

---

[36] Mass – Christian worship on Sundays

वह बोला — "मेरी प्यारी माँ। तुम इस बुढ़िया के साथ मत जाओ। यह बुढ़िया तुम्हें धोखा देगी। अगर तुम नहीं जाओगी तो मैं तुम्हें एक कहानी सुनाऊँगा।"

पत्नी के दिमाग में एक विचार आया। उसने बुढ़िया से कहा — "नानी। तुम जाओ मैं तुम्हारे साथ नहीं आ सकती।"

सो बुढ़िया को वहाँ से जाना ही पड़ा। जब बुढ़िया वहाँ से चली गयी तो वह तोते के पास गयी और बोली "देखो मैं उस बुढ़िया के साथ नहीं गयी अब तुम मुझे कहानी सुनाओ।"

पहली कहानी

बहुत दिनों पुरानी बात है कि एक राजा था। उसके केवल एक ही बेटी थी जिसको गुड़ियों का बहुत शौक था। उन सबमें उसके पास एक ऐसी गुड़िया थी जो उसे बहुत पसन्द थी। वह कभी उसे कपड़े पहनाती कभी उसके कपड़े उतारती। वह उसको बिस्तर में सुलाती। वह उसके लिये वह सब कुछ करती जो एक बच्चे के लिये किया जाता है।

एक दिन राजा को देश में दूसरी जगहों पर जाना पड़ा। वह राजकुमारी को भी साथ ले गया और राजकुमारी के साथ गयी वह गुड़िया भी। जब वे लोग इधर उधर टहल रहे थे तो गलती से उसकी वह गुड़िया एक हैज पर रखी रह गयी।

अब खाने का समय हो गया था। खाना खाने के बाद वे गाड़ी में बैठे और शाही महल आ पहुँचे। तब राजकुमारी को याद आयी कि वह तो कुछ भूल गयी थी। क्या? अपनी गुड़िया।" तब उसने क्या किया। बजाय ऊपर जाने के वह घूमी और अपनी गुड़िया को ढूँढने चल दी।

जब वह बाहर पहुँची तो वह तो खो गयी और ऐसे घूमने लगी जैसे उसे किसी बात का कोई होश ही नहीं था। कुछ समय बाद वह एक महल के पास आ गयी। वहाँ आ कर उसने पूछा कि वह महल किसका था। उन्होंने कहा कि वह महल स्पेन के राजा का था।

उसने वहाँ रहने की जगह माँगी। राजा ने उसे तुरन्त ही बुला लिया और उसको अपनी बच्ची की तरह से रखा। वह भी महल में अपने घर की तरह से रही। वहाँ वह रानी की तरह से रहती रही।

उस राजा को कोई लड़की या कोई लड़का नहीं था सो राजा ने उसे कुछ भी करने की इजाज़त दे रखी थी हालाँकि उसके महल में बारह लड़कियाँ और भी थीं।

अब बराबर वालों में ईर्ष्या तो होती ही है। जल्दी ही वे शाही लड़कियाँ उसके खिलाफ बोलने लगीं। वे बोलीं — "इसे देखो। पता नहीं यह कौन है कहाँ से आयी है। क्या यह हमारी राजकुमारी बनने वाली है। इस सबको हमें रोकना होगा।"

अगले दिन वे राजकुमारी के पास गयीं और उससे कहा "तुम ज़रा हमारे साथ आओगी।"

राजकुमारी ने कहा — "नहीं। क्योंकि पिता जी यह नहीं चाहते। जब उनकी इच्छा होगी तभी में आऊँगी।"

"तुम्हें मालूम है कि तुम्हें हमारे साथ आने देने के लिये क्या करना चाहिये। तुमको राजा को उसकी बेटी की कसम देनी चाहिये। जब वह यह सुनेगा तब वह तुम्हें हमारे साथ जाने देगा।"

राजकुमारी ने ऐसा ही किया। पर जैसे ही राजा ने यह सुना "आपको आपकी बेटी की कसम" तो उसने हुक्म दिया कि उसे चोर दरवाजे से नीचे फेंक दिया जाये।

जब राजकुमारी को चोर दरवाजे से बाहर फेंका गया तो उसको एक और दरवाजा मिला फिर एक और दरवाजा मिला और फिर एक और। इस तरह से उसे बराबर रास्ता मिलता गया। एक जगह पहुँच कर उसे हाथ से महसूस करने पर पता चला कि वहाँ कुछ दियासलाई और आग लगाने वाला सामान रखा है।

उसने एक मोमबत्ती जलायी तो वहाँ उसने एक बहुत सुन्दर लड़की देखी जिसके मुँह पर ताला लगा था इससे वह बोल नहीं सकती थी। पर उसने इशारों से बताया कि उस ताले को खोलने की चाभी बिस्तर पर रखे तकिये के नीचे है।

राजकुमारी ने वहाँ से चाभी निकाली और ताला खोला तब वह लड़की बोली कि वह एक राजा की लड़की है जिसे एक जादूगर ने चुरा लिया है। यही जादूगर उसके लिये रोज कुछ खाने के लिये ले कर आता है और खिला कर फिर ताला लगा कर चला जाता है।

राजकुमारी ने पूछा — "पर यह तो बताओ कि तुम्हें उससे छुड़ाने का क्या तरीका है।"

लड़की बोली — "मैं कैसे जानूँ। मैं तो और कुछ कर नहीं सकती सिवाय इसके कि जब वह मेरा मुँह खोले तब मैं जादूगर से ही पूछूँ। तुम इस बिस्तर के नीचे छिप जाओ और सुनो कि हम क्या बात कर रहे हैं उसके बाद तुम तय करना कि अब क्या करना है।"

"ठीक है। यही ठीक रहेगा।"

सो राजकुमारी ने फिर से उस लड़की का मुँह बन्द किया चाभी पलंग पर रखे तकिये के नीचे रखी और पलंग के नीचे छिप गयी।

पर आधी रात को बहुत ज़ोर का शोर सुनायी दिया। जमीन फट गयी। बिजली धुआँ और गन्धक की बू के साथ जादूगर अपने जादूगर के रूप में बाहर निकला। उसके साथ एक बड़े साइज़ का आदमी भी था जिसके हाथ में खाने का एक कटोरा था और दो नौकर थे जिनके हाथों में मशालें थीं।

जादूगर ने नौकरों को वापस भेज दिया। दरवाजों को ताला लगा दिया। तकिये के नीचे से चाभी निकाली। लड़की मुँह पर लगा ताला खोला।

जब वे दोनों खा रहे थे तो लड़की बोली — "जादूगर। मेरे दिमाग में एक विचार है। बस अपनी उत्सुकता को शान्त करने के लिये अगर मैं यहाँ से भागना चाहूँ तो मुझे किन चीज़ों की जरूरत पड़ेगी।"

"तुम तो बहुत कुछ जानना चाहती हो मेरी बच्ची।"

"कोई बात नहीं छोड़ो। मैं नहीं जानना चाहती।"

"फिर भी मैं तुम्हें बताऊँगा। इसके लिये तुम्हें महल के चारों तरफ पहले एक सुरंग खोदनी पड़ेगी और फिर रात को ठीक बारह बजे जब मैं उस सुरंग को तोड़ने के लिये घुस रहा होऊँ तब तुम अपने पिता के साथ होगी और मैं आसमान में उड़ जाऊँगा।"

लड़की बोली — "इसे तुम ऐसे समझना जैसे तुमने इसे कभी किसी से कहा ही नहीं।"

जादूगर ने कपड़े पहने और चला गया। कुछ घंटे बाद राजकुमारी पलंग के नीचे से निकल आयी। उसने अपनी छोटी बहिन से विदा ली और वहाँ से चली गयी।

वह उसी चोर दरवाजे की तरफ गयी। बीच में एक जगह वह रुक गयी और सहायता के लिये चिल्लाने लगी। राजा ने उसका चिल्लाना सुना। उसने तुरन्त ही एक रस्सी नीचे फेंकी और उसको ऊपर चढ़ाया।

राजकुमारी ने उसको सब बताया तो राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने तुरन्त ही सुरंग की खुदायी शुरू कर दी जिसको उसने बारूद आदि से भर दी। जब वह सब पूरी भर गयी तो राजकुमारी एक घड़ी ले कर नीचे उतर गयी और राजा की बेटी के पास पहुँची।

जब वह कमरे में घुसी तो बोली "यह मैं हूँ।" उसने चाभी निकाल कर लड़की के मुँह का ताला खोला उससे बातें कीं।

फिर वह बिस्तर के नीचे छिप कर इन्तजार करने लगी। आधी रात को जादूगर आया। राजा देख रहा था। उसकी घड़ी उसके हाथ में थी। जैसे ही रात के बारह बजे राजकुमारी ने सुरंग में आग लगा दी।

बहुत ज़ोर से धमाका हुआ। जादूगर गायब हो गया और दोनों बच्चियों ने अपने आपको जादूगर की कैद से आजाद कर लिया था। राजा अपनी दोनों बच्चियों को देख कर बहुत खुश हुआ और राजकुमारी को अपना ताज सौंप दिया।

पर राजकुमारी बोली — "नहीं योर मैजेस्टी। मैं तो खुद ही एक राजा की बेटी हूँ और मेरे पास अपना ताज है।"

यह खबर तो सारी दुनियाँ में फैल गयी। इससे राजकुमारी की शोहरत तो बहुत बढ़ गयी। हर आदमी उस राजकुमारी की हिम्मत और अच्छाई की बड़ाई कर रहा था कि किस तरह से उसने दूसरी राजकुमारी की ज़िन्दगी बचायी। वे हमेशा ही खुश और शान्ति से रहे।"

तोता इतनी कहानी सुना कर बोला — "मेरी प्यारी माँ। आप मेरी इस कहानी के बारे में क्या सोचती हैं।"

पत्नी बोली — "यह तो बड़ी अच्छी कहानी थी।"

इस बात को एक हफ्ता गुजर गया। बुढ़िया एक दिन फिर से दो दूसरी फलों की टोकरियाँ ले कर वहाँ आयी तो तोता बोला — "अरे वाह यह तो बहुत सुन्दर विचार है। ओ सुन्दर माँ। देखो वह बुढ़िया फिर आ रही है। ज़रा अपना ख्याल रखना।"

बुढ़िया बोली — "आओ क्या तुम मास के लिये चल रही हो?"

"हाँ नानी।"

"तो चलो हम एक साथ चलते हैं।" पत्नी तैयार होने लगी।

जब तोते ने उसको तैयार होते देखा तो उसने अपने पंख नोचने शुरू कर दिये और रोते रोते बोला — "नहीं माँ। तुम उस बुढ़िया के साथ मत जाओ वह तुम्हें बर्बाद कर देगी। तुम अबकी बार अगर फिर रुक जाओगी तो मैं तुम्हें एक और कहानी सुनाऊँगा।"

सो पत्नी ने बुढ़िया को कह दिया — "तुम जाओ। मैं नहीं जाऊँगी। मैं मास के लिये अपने प्यारे तोते के नहीं मार सकती।"

बुढ़िया वहाँ से चली गयी और तोते ने अपनी कहानी शुरू की।

दूसरी कहानी

एक बार की बात है कि एक राजा था जिसके एक अकेली बच्ची थी जो सूरज की तरह सुन्दर थी। जब वह अठारह साल की हुई तो एक तुर्की राजा ने उससे शादी का प्रस्ताव रखा।

जब राजकुमारी ने सुना कि वह तो एक तुर्क राजा था तो वह बोली कि तुर्क राजा से उसको क्या काम था। और उसने तुर्क राजा को मना कर दिया।

जल्दी ही वह बहुत बीमार हो गयी। उसको दौरे पड़ने लगे। उसका शरीर ऐंठने लगा। उसकी ऑखें बार बार पीछे की तरफ जाने लगीं। डाक्टरों की कुछ समझ में न आया कि यह सब क्या था।

बेचारे राजा ने घबरा कर अपनी काउन्सिल को बुलाया और कहा — "भले लोगों। आप सब जानते हैं कि मेरी बेटी दिन पर दिन अपनी ज़िन्दगी खोती जा रही है। आप लोग मुझे क्या सलाह देते हैं।"

साधु लोग बोले — "एक छोटी लड़की है[37] जिसने स्पेन के राजा की बेटी को ढूँढा है। आप उसको ढूँढें वही आपकी बेटी का इलाज कर पायेगी।"

राजा बोला — "यह तो बहुत अच्छा है। काउन्सिल की यह बात हमको अच्छी लगी।"

राजा ने कई जहाज़ उस लड़की को ढूढने के लिये भेज दिये। और कहा कि अगर स्पेन का राजा उसको यहॉ न आने दे तो ये लोहे के दस्ताने उसको देना और युद्ध का ऐलान कर देना। जहाज़ चले गये और एक दिन स्पेन पहॅुच गये।

[37] The Princess mentioned in the last story.

वहाँ पहुँच कर उन्होंने अपने आने की सूचना देने के लिये तोप छोड़ी। राजदूत जमीन पर उतरा। राजा के पास गया और उसको एक चिट्ठी ले जा कर दी। राजा ने चिट्ठी पढ़ी और पढ़ कर रो पड़ा। वह बोला — "मैं इस लड़की को नहीं दे सकता। मैं युद्ध के लिये तैयार हूँ।"

इस बीच वह लड़की वहाँ आ गयी। उसने पूछा — "क्या बात है योर मैजेस्टी।"

उसने चिट्ठी देखी तो बोली — "आप डरते क्यों हैं। मैं इस राजा के पास जरूर जाऊँगी।"

राजा ने पूछा — "मेरी बच्ची कैसे? तुम मुझे इस तरह छोड़ जाओगी क्या?"

लड़की फिर बोली — "मैं आपको छोड़ कर नहीं जा रही। मैं लौट कर आऊँगी। मैं जा कर इस लड़की को देखूँगी कि इसे क्या हुआ है और फिर वापस आ जाऊँगी।"

उसने अपनी छोटी बहिन से विदा ली और चल दी। जब वह राजा के पास पहुँची तो राजा खुद उससे मिलने के लिये आया। वह बोला — "मेरी बच्ची। अगर तुम मेरी इस बच्ची को ठीक कर दोगी तो मैं अपना ताज तुम्हें दे दूँगा।"

उसने अपने मन में कहा "दो ताज।"

वह राजा से बोली — "मेरे पास तो पहले से ही एक ताज है। मुझे देखने दीजिये कि क्या मामला है। ताज की कोई बात नहीं है।"

वह गयी और उसने राजकुमारी को देखा वह तो बस हड्डियों का ढाँचा ही रह गयी थी। उसने राजा से कहा — "राजा साहब। मेरे पास यह माँस का पानी है और कुछ और चीज़ें हैं।"

उनको जल्दी से जल्दी तैयार किया गया। उसने कहा — "मैं अपकी बेटी के साथ कमरे में बन्द रहती हूँ। आप उसको तीन दिन तक खोलने की बिल्कुल कोशिश न करें। तीन दिन बाद मैं आपको आपकी बेटी वापस कर दूँगी – ज़िन्दा या मुर्दा। और सुनिये जो मैं कहती हूँ कि अगर मैं भी दरवाजे को खटखटाऊँ तो भी आप दरवाजा न खोलें।"

सब कुछ पहले से तय कर लिया गया दरवाजे को जंजीरों और तालों से बाँध दिया गया। पर वे शाम को मोमबत्ती जलाने के लिये दियासलाई रखना भूल गये।

शाम को बहुत गड़बड़ हुई। नौजवान लड़की दरवाजा नहीं खटखटाना चाहती थी। सो उसने खिड़की से बाहर झाँका तो देखा कि कुछ दूरी पर एक रोशनी जल रही थी। सो वह एक मोमबत्ती ले कर एक रेशम की सीढ़ी के सहारे नीचे उतरी।

जब वह वहाँ पहुँची तो उसने देखा कि एक चूल्हा जल रहा था उस पर एक बर्तन रखा था जिसमें पानी उबल रहा था। पास ही

एक तुर्क बैठा हुआ और वह उसे लकड़ी की डंडी से चला रहा था। उसने उस तुर्क से पूछा कि वह क्या कर रहा था।

तुर्क ने जवाब दिया — "मेरे मालिक इस राजा की बेटी से शादी करना चाहते थे पर उसने उनसे शादी करने से मना कर दिया इसलिये वह उस पर जादू डाल रहे हैं।"

लड़की बोली — "ओह मेरे बेचारे छोटे तुर्क। तुम यह चलाते चलाते थक गये होगे। तुम्हें मालूम है कि तुम्हें अब क्या करना चाहिये। तुम थोड़ा आराम कर लो तब तक इसे मैं चलाती हूँ।"

यह सुन कर वह वहाँ से हट गया। लड़की ने फिर कहा "तुम थोड़ा सा सो लो तब तक इसे मैं चलाती हूँ। जब वह सो गया तो उसने उसे पकड़ लिया और उसे बर्तन में उबलते पानी में डाल दिया।

जब उसने देखा कि वह मर गया तो उसने अपनी मोमबत्ती जलायी और महल वापस आ गयी। जब वह कमरे में घुसी तो उसने देखा कि राजकुमारी बेचारी नीचे बेहोश गिरी पड़ी थी। कोलोन का पानी छिड़क कर वह उसको होश में लायी। तीन दिनों में ही वह काफी ठीक हो गयी थी।

उसके बाद उसने दरवाजा खटखटाया। राजा तो अपनी बेटी को ठीक देख कर खुशी के मारे अपने आपे में ही नहीं था। उसने स्पेन के राजा की बेटी से कहा — "मेरी बच्ची। मैं इसके बदले में तुम्हें कैसे धन्यवाद दूँ। तुम मेरे पास रह जाओ।"

राजकुमारी बोली — "यह सम्भव नहीं है। अगर वे मुझे आपके पास नहीं भेजते तो आपने मेरे पिता को युद्ध की धमकी दी थी। अब मेरे पिता आपको युद्ध की धमकी देते हैं अगर आप मुझे लौटने की इजाज़त नहीं देंगे।"

वह वहाँ दो हफ्ते रही फिर राजा ने उसको बहुत सारा पैसा और जवाहरात दे कर विदा किया। वह भी स्पेन के राजा के पास लौट आयी। इस तरह से यह कहानी खत्म हुई।"

"मेरी प्यारी माँ अब बताओ तुम्हें यह कहानी कैसी लगी।"

"बहुत सुन्दर बहुत सुन्दर।"

"पर अब तुम उस बुढ़िया के साथ नहीं जाओगी क्योंकि इसमें धोखा है।"

एक हफ्ते बाद वह बुढ़िया फिर अपनी टोकरियाँ ले कर उस पत्नी के घर आयी और बोली — "मेरी बच्ची। आज तो तुम्हें मेरी खुशी के लिये मेरे साथ चलना ही पड़ेगा। चलो आज मास सुनने चलते हैं।"

"ठीक है। मैं आती हूँ।"

जब तोते ने यह सुना कि पत्नी बुढ़िया के साथ जा रही है तो फिर उसने अपने पंख नोचने और रोना शुरू कर दिया और बोल — "मेरी सुन्दर माँ। उसके साथ मत जाओ। अगर तुम रुक जाओगी तो मैं तुम्हें एक कहानी और सुनाऊँगा।"

सो पत्नी ने बुढ़िया से कहा — "ओ मेरी नानी। मैं नहीं आ पाऊँगी क्योंकि मैं आपके लिये अपना तोता हाथ से नहीं जाने दे सकती।"

उसने जाली वाली खिड़की बन्द की और बुढ़िया भी उसे कोसती हुई वहाँ से चली गयी। पत्नी फिर तोते के पास बैठ गयी और तोते ने अपनी कहानी शुरू की —

तीसरी कहानी

एक बार की बात है कि एक राजा और रानी थे जिनके एक अकेला बेटा था और जो हमेशा ही शिकार में लगा रहता था। एक बार शिकार के लिये वह कुछ दूर जाना चाहता था। सो उसने अपने साथी लोग लिये और चल दिया।

तुम क्या सोचते हो कि वह कहाँ गया होगा। वहीं जहाँ वह गुड़िया थी।[38] जब उसने गुड़िया देखी तो उसने कहा "आज का मेरा शिकार खत्म हुआ चलो घर चलते हैं।"

उसने गुड़िया ली और उसे अपने सामने अपने घोड़े पर रखा आौर चल दिया। कुछ कुछ देर में वह कहता जाता था "यह गुड़िया कितनी सुन्दर है। तो ज़रा इसकी मालकिन के बारे में तो सोचो।"

जब वह महल पहुँचा तो उसने उसके लिये एक शीशे का डिब्बा बनवाया और उस गुड़िया को उसमें रख दिया। अब बस वह उसको

---

[38] This is the doll of the first story which was left on the hedge.

ही देखता रहता और कहता रहता "यह गुड़िया कितनी सुन्दर है। तो ज़रा इसकी मालकिन के बारे में तो सोचो।"

अब वह राजकुमार किसी से बोलता भी नहीं था। हमेशा दुखी सा रहता था। यह देख कर राजा ने डाक्टरों को बुलवा भेजा।

डाक्टरों ने देख भाल कर कहा — "राजा साहब। हम इस बीमारी के बारे में कुछ नहीं जानते। ज़रा जा कर देखिये कि वह इस गुड़िया के साथ क्या करता रहता है।"

सो राजा अपने बेटे को देखने गया और देखा कि वह तो बस अपनी गुड़िया की तरफ घूरे जा रहा है और कहता जा रहा है "यह गुड़िया कितनी सुन्दर है। तो ज़रा इसकी मालकिन के बारे में तो सोचो।"

डाक्टर उतने ही अक्लमन्द लौट गये जितने अक्लमन्द वे आये थे। इस बीच राजकुमार और कुछ करता ही नहीं था सिवाय गुड़िया को घूरने के और कहते रहने के कि "यह गुड़िया कितनी सुन्दर है। तो ज़रा इसकी मालकिन के बारे में तो सोचो।" वह लम्बी लम्बी साँसें भरता और यही कहता रहता।

राजा बहुत निराश हो गया था सो उसने अपनी काउन्सिल बुलायी और उससे पूछा — "आप सब देखें और बतायें कि मैं क्या करूँ क्योंकि मेरे बेटे की हालत तो दिन पर दिन बिगड़ती ही जा रही है। उसको न तो कोई दर्द है न कोई बुखार है फिर भी वह दुबला ही होता जा रहा है। कोई और मेरे राज्य का भोग करेगा क्या?"

तब काउन्सिल ने राजा से कहा — "योर मैजेस्टी। क्या आप वाकई बहुत परेशान हैं। क्या आपको उस लड़की के बारे में नहीं पता जिसने स्पेन के राजा की बेटी को बचाया था और एक दूसरी राजकुमारी को भी ठीक किया था।

हमारी राय यह है कि आप उस राजकुमारी को बुलवायें। अगर उसके पिता उसे आपके पास न भेजें तो आप उनसे युद्ध का ऐलान कर दें।"

सो राजा ने अपना एक दूत उस राज्य में भेजा कि वह अपनी बेटी को तुरन्त भेज दे। जब राजदूत राजा से मिला तो वह राजकुमारी राजा के पास आयी जिसने दो राजकुमारियों को ठीक किया था। उसने देखा कि राजा कुछ परेशान है।

उसने राजा से पूछा — "क्या बात है आप इतने परेशान क्यों हैं।"

राजा बोला — "कुछ नहीं बेटी। एक और मौका वैसा आ गया है। एक और राजा तुम्हें बुला रहा है। इससे तो ऐसा लगता है कि अब मैं तुम्हारा कुछ भी नहीं।"

"कोई बात नहीं योर मैजेस्टी। आप मुझे जाने दें मैं बहुत जल्दी लौट आऊँगी।"

सो वह अपने नौकरों के साथ जहाज़ पर चढ़ी और अपनी यात्रा शुरू की। जब वह वहाँ पहुँची जहाँ राजकुमार था तो वह गहरी गहरी साँसें ले रहा था और बराबर यही कह रहा था "यह

गुड़िया कितनी सुन्दर है। तो ज़रा इसकी मालकिन के बारे में तो सोचो।"

वह बोली — "आप लोगों ने मुझे बुलाने में देर कर दी। फिर भी आप मुझे एक हफ्ता दें। आप मुझे मरहम और खाना दे दें। फिर एक हफ्ते में मैं आपका राजकुमार ज़िन्दा या मुर्दा वापस कर दूँगी।"

उसने अपने आपको राजकुमार के साथ ही कमरे में बन्द कर लिया और उसे सुनने की कोशिश की जो राजकुमार कह रहा था क्योंकि उसने अभी तक वह नहीं सुना था जो वह बार बार कह रहा था। क्योंकि वह बहुत कमजोर था।

जब उसने सुना "यह गुड़िया कितनी सुन्दर है। तो ज़रा इसकी मालकिन के बारे में तो सोचो।" और अपनी गुड़िया उसके हाथ में देखी तो वह एकदम से बोली — "ओह तो वह तुम हो जिसने मेरी गुड़िया ली थी। दो इसे मुझे दो और मैं अभी तुम्हारा इलाज करती हूँ।"

जब उसने ये शब्द सुने तो उसने आँखें खोलीं और वह कुछ अपने आपे में आया बोला — "तुम क्या इस गुड़िया की मालकिन हो?"

"हाँ मैं ही इसकी मालकिन हूँ।"

बस सोचो वह तो उसको देखते ही ठीक होने लगा। उसने उसको माँस का पानी देना शुरू किया और वह ठीक होने लगा।

जब वह ठीक हो गया तब उसने उससे पूछा कि उसको वह गुड़िया कहाँ से मिली। राजकुमार ने उसे सब बता दिया। एक हफ्ते में राजकुमार ठीक हो गया और फिर उन्होंने कह दिया कि वे दोनों शादी कर रहे हैं।

राजा तो खुशी से बिल्कुल आपे से बाहर हो रहा था क्योंकि उसका बेटा ठीक हो गया था। उसने कई चिट्ठियाँ लिखीं। एक चिट्ठी तो उसने स्पेन के राजा को लिखी कि उसकी बेटी को उसकी गुड़िया मिल गयी है। दूसरे राजा को लिखा कि उसकी बेटी मिल गयी है। तीसरी उस राजा को जिसकी बेटी का उसने इलाज किया था।

उसको बाद सारे राजा इकट्ठे हुए और सबने मिल कर खूब आनन्द मनाया। राजकुमार ने राजकुमारी के साथ शादी कर ली। फिर वे आराम से रहे।"

कहानी सुन कर तोते ने पत्नी से पूछा — "ओ अच्छी माँ। क्या आपको यह कहानी पसन्द आयी?"

"हाँ मेरे बेटे। बहुत अच्छी थी।"

"पर अब आप उस बुढ़िया के साथ नहीं जाना।"

तभी वह बुढ़िया फिर से वहाँ आयी तो उसकी दासी आयी और बोली — "देखिये मालिक आ गये।"

"सच में। अच्छा तोते अब तुम सुनो। मैंने तुम्हारे लिये एक दूसरा पिंजरा बनवा दिया है।"

मालिक आ गये थे। सारी खिड़कियाँ खोल दी गयीं और उसने अपनी पत्नी को गले लगाया। शाम को खाने के समय उन्होंने तोते को मेज के बीच में रखा। और जब दोनों बहुत खुश थे तो चिड़िया ने थोड़ा सा सूप मालिक की आखों में फेंक दिया।

मालिक को जब वह सूप आँख में लगा तो उसने अपनी आँखों पर हाथ रख लिया। तभी तोता उसके गले की तरफ उड़ा उसे घोट दिया और उड़ गया।

उड़ते उड़ते वह मैदान में पहुँचा और बोला "मैं एक तोता हूँ मैं एक आदमी बनना चाहता हूँ।" यह कह कर वह एक सुन्दर चालाक आदमी में बदल गया।

फिर वह घुड़सवार से मिला और बोला — "क्या तुम्हें मालूम है कि उस बेचारी स्त्री का बेचारा पति मर गया है। एक तोते ने उसका गला घोट दिया।"

"सच में। बेचारी स्त्री।"

नोटरी शर्त के बारे में बिना कोई बात किये ही वहाँ से चला गया। नोटरी को पता चला कि उस स्त्री की एक माँ थी सो वह उसके पास गया और उससे कहा — "आप मुझे अपनी बेटी दे दें।"

कुछ हिचकिचाहट के बाद माँ राजी हो गयी और उनकी शादी हो गयी। उस रात नोटरी ने अपनी पत्नी से पूछा — "अब मुझे बताओ कि तुम्हारे पति को किसने मारा।"

“एक तोते ने।”

“और इस तोते के बारे में तुम क्या जानती हो।”

स्त्री ने उसे सब बता दिया कि किस तरह से तोते ने उसके पति की ऑखों में सूप फेंका और उड़ गया।”

“यह सच है। क्या मैं वह तोता नहीं था?”

“तो क्या वह तोता तुम थे? मुझे तो आश्चर्य है।”

“हॉ मैं ही वह तोता था और मैं केवल तुम्हारे लिये ही तोता बना था।”

अगले दिन नोटरी अपनी शर्त के चार सौ औंस लेने घुड़सवार के पास गया और उससे अपनी पत्नी के साथ बहुत आनन्द मनाया।

9 एक सलाह के लिये एक लाख रुपये[39]

यह कहानी एक बड़ी कहानी का अंश है जिसका शीर्षक ऊपर दिया हुआ है। यह कहानी भारत के काश्मीर प्रान्त की लोक कथाओं से ली गयी है। यह कहानी केवल तोते की वफादारी की ही नहीं हे बल्कि जल्दी में किसी निश्चय पर पहुँच पर कोई ऐसा काम करने की भी है जिसके लिये करने वाले को पछताना पड़े। तो सुनो कहानी एक वफादार तोते की

राजकुमार तो सोया नहीं था सो वह उठ कर बैठा हो गया और तलवार का वार बचा गया। फिर उसने तलवार पकड़ ली और बोला — "मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है या फिर मैं तुम्हारा क्या बिगाड़ना चाहता हूँ जो तुम मुझे मारने चली हो?

अपनी तलवार सँभाल कर रख लो ताकि तुम्हें उससे बाद में कोई परेशानी न हो जैसे कि उस राजा को हुई थी जिसने गलती से अपने तोते को मार दिया था।"

लड़की बोली — "कौन से राजा ने?"

राजकुमार बोला — "तो लो सुनो यह कहानी। एक बार की बात है कि एक राजा था जिसके पास एक बहुत सुन्दर तोता था। वह उसको बहुत प्यारा था। यह तोता राजा के हरम[40] में रहता था

[39] A Lac of Rupees For One Piece of Advice.
This tale appears in "Folk-tales of Kashmir" written by James Hinton Knowles in 1887. Hindi translation of all its tales is available at https://archive.org/details/@sushma75

[40] Haram means where queens live.

और राजा अपनी रानियों से बात करने से भी पहले उससे बात करता था।

एक बार उस तोते ने राजा से एक महीने की छुट्टी माँगी क्योंकि वह अपने बेटे की शादी करने जाना चाहता था। राजा ने उसे छुट्टी दे दी और वह तोता अपने घर चला गया। घर जा कर उसने बड़ी धूमधाम से अपने बेटे की शादी की और शादी के बाद वापस लौटने लगा।

लौटते समय वह दो पेड़ों की टहनियाँ तोड़ता लाया जिसमें से एक पेड़ के फल खाने से कोई भी जवान आदमी बूढ़ा हो जाता था और दूसरे पेड़ के फल खाने से बूढ़ा आदमी जवान हो जाता था। वे दोनों टहनियाँ बागीचे में बो दी गयीं और बढ़ने लगी।

समय आने पर दोनों पेड़ों पर फल लगे। पर जैसे ही वे पकने को थे कि उस देश में एक तूफान आया जिससे वे पेड़ नीचे गिर गये। एक बहुत बड़ा साँप भी तूफान के पानी के साथ साथ वहाँ आ गया उसने अपना जहर उन पेड़ों की शाखों पर बिखेर दिया जिसका किसी को पता नहीं चला।

तूफान के बाद जब पानी उतर गया तो उन पेड़ों को फिर से लगा दिया गया। वे पेड़ फिर से लहलहा उठे और उनमें फिर से फल आ गये।

समय आने पर उन पेड़ों के फल राजा के पास ले जाये गये। राजा ने उनमें से एक पेड़ के कुछ फलों को जाँचने के लिये एक कुत्ते की तरफ फेंके। कुत्ता उनको खाते ही मर गया।

यह देख कर राजा बहुत गुस्सा हुआ और यह सोचते हुए कि तोता उसके साथ मजाक कर रहा था उसने उसको मारने का हुक्म दे दिया। तोते को तुरन्त ही मार दिया गया। अगले साल उन पेड़ों में फिर से फल आये। तब तक उस पेड़ की शाखाओं का सारा जहर निकल चुका था।

एक दिन एक बूढ़ा उधर से गुजर रहा था। उसे भूख लगी थी सो उसने उस पेड़ से एक फल तोड़ कर खा लिया। उसको खाते ही वह तो जवान हो गया।

इस अजीब घटना की खबर उड़ते उड़ते राजा तक पहुँची तो उसने अपने एक नौकर को उस पेड़ के फल लाने का हुक्म दिया। उसमें से उसने कुछ फल अपने बूढ़े वजीर को दिये। वजीर ने उन्हें जैसे ही खाया तो वह भी उनको खा कर वैसा ही जवान और ताकतवर हो गया जैसा लोगों ने उसको पचास साल पहले देखा था।

राजा ने जब यह देखा तो वह अपने तोते के लिये बहुत दुखी हुआ और बहुत पछताया कि उसने उसको कितनी बेदर्दी से मरवा दिया था। वह तो उसके लिये कितने अच्छे फल की शाख ले कर आया था।"

कहानी सुना कर राजकुमार बोला — "मुझे यकीन है कि तुम मेरे साथ ऐसा नहीं करोगी।"

लड़की बोली — "नहीं मैं तुम्हारे साथ ऐसा नहीं करूँगी।"

10 नीच रानियाँ[41]

एक बार की बात है कि एक राजा था जिसके तीन रानियाँ थीं। उनमें से दो रानियों को वह अपनी तीसरी रानी से ज़्यादा प्यार करता था क्योंकि उसकी दो रानियों ने उसको दो बेटियाँ दी थीं जबकि तीसरी रानी के कोई बच्चा नहीं था।

काफी दिनों बाद उसकी तीसरी पत्नी को बच्चे की आशा हुई तो राजा को तो बहुत खुशी हुई पर उसकी दोनों रानियों को डर लगा कि अगर कहीं उसको बेटा हो गया तो राजा उनको कम प्यार करेगा सो उन्होंने दाई से यह समझौता किया कि अगर उस रानी के बेटा हो तो वह उसको वहाँ से हटा दे और उसकी जगह कोई पत्थर या चिड़िया या किसी और जानवर का बच्चा रख दे।

जब रानी के बच्चा होने वाला था तो दाई को बुलवाया गया और उससे यह पूछा गया कि उसको क्या होने वाला था बेटा या बेटी। दाई ने उनको बताया कि न तो उसको बेटा होगा न बेटी बल्कि एक चिड़िया होगी।

उसने साथ में यह भी कहा कि वह यह तो नहीं बता सकती कि ऐसा कैसे होगा पर उसे पूरा यकीन है कि ऐसा ही होगा। यह सुन कर रानी बहुत दुखी हुई। उसने दाई से इस बात को छिपा कर रखने की प्रार्थना की ताकि राजा को इस बात को पता न चले।

---

41 Wicked Queens. A tale from Kashmir, India.

दाई ने वायदा किया कि अगर कोई उससे कुछ पूछेगा तो वह यह कहेगी कि बच्चा मरा हुआ पैदा हुआ है। सो जब बच्चे के पैदा होने का समय आया तो रानी ने कहा कि केवल दाई ही उसके पास रहेगी।

जैसी कि आशा थी रानी के बेटा हुआ तो दाई ने उसको छिपा दिया और रानी को एक कौए का बच्चा दिखा कर कहा — "देखो मैंने कहा था न। मेरी कही बात सच निकली। पर तुम चिन्ता न करना मैं इसको कहीं छिपा दूँगी। और कोई इस बात को जान भी नहीं पायेगा।"

ऐसा कह कर उस नीच स्त्री ने बच्चे और कौए को लिया और दूसरी रानियों को दिखाया। वे यह देख कर बहुत खुश हुईं और उसको बहुत बड़ा इनाम देने का वायदा किया।

इधर इन दो रानियों ने उस बच्चे को एक बक्से में रखा और एक नदी में फेंक दिया। उन्होंने सोचा कि वह बक्सा डूब जायेगा और इस तरह यह मामला यहीं खत्म हो जायेगा।

पर इत्तफाक की बात कि यह बक्सा डूबा नहीं। परमेश्वर की कृपा से वह तैरता रहा। एक बूढ़े माली ने उसे बहते देखा तो उसे नदी में से निकाल लिया और खोला तो उसमें एक बच्चे को पाया। उसने उसे निकाल लिया।

बच्चे को देख कर वह बहुत खुश हुआ। उसके अपने कोई बच्चा नहीं था सो वह उसको अपने बच्चे की तरह से पालने लगा।

उसने उसके लिये एक धाय रख ली जो उस बच्चे की देखभाल करती थी।

एक साल बीत गया तो राजा की तीसरी पत्नी को फिर से बच्चे की आशा हो गयी। उसकी दोनों सौतों को फिर से यह चिन्ता हुई कि अगर अबकी बार भी उसके बेटा हो गया तो उनका क्या होगा। पहले की तरह से इस बार भी उन्होंने दाई से कह कर माँ को धोखा देने और उसका बच्चा चुराने का इन्तजाम कर लिया।

अब ऐसा हुआ कि इस बार भी रानी को बेटा हुआ पर दाई ने यह बताया कि इस बार भी उसको कौए का बच्चा हुआ है और यह कर वह बच्चे को छिपाने के लिये तुरन्त ही कमरे से बाहर निकल गयी ताकि राजा और शाही परिवार के दूसरे लोगों को उसके बारे में कुछ पता न चले।

वह उस बच्चे को ले कर फिर उन दोनों नीच रानियों के पास गयी और उसे उनको दे दिया। उन दोनों रानियों ने उस बच्चे के साथ भी वही किया जो उन्होंने उसके पहले बच्चे के साथ किया था। पर परमेश्वर की कृपा से वह बक्सा भी नदी में तैर गया और उसी जगह उसी माली को मिल गया जिसको पहला वाला बच्चा मिला था। उसने इस बच्चे को भी अपना बच्चा समझ कर पाल लिया।

एक साल बाद तीसरी रानी को फिर से बच्चे की आशा हुई पर इस बार भी उसकी आशाओं पर पानी फिर गया। क्योंकि पहले दो

बार दोनों रानियाँ अपने बुरे काम में सफल हो चुकी थीं इस बार भी उन्होंने दाई को बहुत पैसा दे कर तीसरी रानी का बच्चा बदलने के लिये कहा।

पर इस बार रानी के जुड़वाँ बच्चे पैदा हुए थे सो दाई ने उसे बताया कि उसके दो पिल्ले[42] हुए हैं और जल्दी ही उन बच्चों को ले कर कमरे से बाहर चली गयी। इन बच्चों के साथ भी वही किया गया जो पहले दो बच्चों के साथ किया गया था पर परमेश्वर की कृपा से वे दोनों भी उसी माली को मिल गये जिसको पहले दो बच्चे मिले थे।

रानी के दुख की कोई हद नहीं थी। वह तीनों बार नाउम्मीद हुई थी। उसने किसी से मिलना छोड़ दिया। वह खाती पीती भी नहीं थी बस अपने मरने की दुआ माँगती रहती थी।

इस घटना के कुछ दिन बाद एक दिन जब दोनों रानियाँ राजा से बात कर रही थीं तो उन्होंने राजा को बताया कि किस तरह उसकी तीसरी रानी ने अजीब बच्चों को जन्म दिया था। राजा यह सुन कर बहुत दुखी हुआ और उसको बहुत अजीब भी लगा।

उसने तुरन्त ही दाई को बुला भेजा और उससे पूछा कि क्या यह बात ठीक थी। दाई बोली "हाँ हुजूर यह सच है।"

इस पर राजा ने अपनी तीसरी रानी को जितनी जल्दी से जल्दी हो सकता था देश निकाले का हुक्म दे दिया।

---

[42] Translated for the word "Puppies"

खैर वह देश से नहीं निकाली गयी। नौकरों को लगा कि इसमें दूसरी दो रानियों की कुछ चाल है जिनको कि वे समझते थे कि वे उनकी प्यारी रानी से जलती थीं।

इसलिये उन्होंने राजा के दिल में अपनी साख बनाने के लिये राजा से प्रार्थना की कि वह रानी को देश निकाला न दें बल्कि वहाँ से कुछ दूरी पर एक बागीचे में उसके लिये एक घर बनवा दें और उसको वहाँ रख दें। उसको खाने पीने और रहने सहने के लिये काफी पैसा दे दें। राजा उनकी यह बात मान गया और ऐसा ही किया गया।

उधर बच्चे माली की देखरेख में बढ़ते रहे। जब वे बड़े हो गये तब वे स्कूल भी जाने लगे। लड़कों को माली का काम भी सिखाया गया।

एक दिन एक अक्लमन्द बुढ़िया जो बहुत इधर उधर की बातें करती थी एक जगह बात सुनती थी और दूसरी जगह जा कर उसे पैसे ले कर बता देती थी राजा की दोनों रानियों के पास आयी। यह देख कर कि वह एक अक्लमन्द स्त्री है उन्होंने उससे पूछा कि उनके कोई बेटा क्यों नहीं हुआ और उससे प्रार्थना की कि वह किसी पवित्र आदमी[43] को बुला कर ला दे जो उनकी इच्छा को पूरा होने में सहायता कर दे।

[43] Translated for the words "Holy Man"

स्त्री बोली कि भगवान की मर्जी को बदला नहीं जा सकता था। जिसको वह चाहता नहीं देता और जिसको वह नहीं चाहता तो नहीं देता।

इसी संदर्भ में उसने उनको एक माली के बारे में बताया जिसको तीन साल में तीन लड़के और एक लड़की नदी में तैरते हुए मिल गये थे। जब दोनों रानियों ने यह सुना तो उनको बड़ा आश्चर्य हुआ।

उन दोनों ने उससे यह जानने की कोशिश की कि उसने उन बच्चों के साथ क्या किया। उसने उनको पढ़ने भेजा या नहीं। वे उसी के घर में रह रहे थे क्या आदि आदि।

बुढ़िया ने उनको सब बता दिया कि वे कितने सुन्दर थे कितने होशियार थे कैसे वे तीनों लड़के उस माली के साथ बागीचे में काम करते थे और कैसे वे तीनों अपनी छोटी बहिन को प्यार करते थे।

दोनों रानियों ने ऐसा दिखाया कि उनको शक था कि तीनों भाई अपनी बहिन को इतना प्यार करते थे कि वे उसके लिये कुछ भी कर सकते थे।

उन्होंने उससे कहा कि वह उनका अपनी बहिन के लिये प्रेम का इम्तिहान ले। वह अपने भाइयों से एक खास चिड़िया लाने के लिये कहे। रानियों ने उससे यह भी कहा कि वह बहुत अच्छी चिड़िया है जो आदमियों की तरह बोलती है और इतना अच्छा गाती है जितना धरती पर कोई नहीं गा सकता। हमें यकीन है कि वह बच्ची उस चिड़िया को बहुत पसन्द करेगी।

फिर उन्होंने उससे कहा कि अगर उसने उनका यह काम कर दिया तो वे उसको बहुत सारा इनाम देंगी। बुढ़िया ने कहा कि वह उनका यह काम जरूर कर देगी और वहाँ से चली गयी।

वहाँ से जा कर उसने लड़की से दोस्ती की। वह बहुत जल्दी ही उसकी दोस्त बन गयी। उसने उसको चिड़िया के बारे में बताया तो वह तो उसके बारे में यह सुन कर कि वह क्या क्या कर सकती है उसको लेने के लिये बहुत उत्सुक हो गयी। अब उसको बिना उसके दिन रात चैन नहीं था।

उसके तीनों भाइयों ने अपनी बहिन को दुखी देखा तो उससे पूछा कि वह क्यों दुखी थी। बच्ची ने उनको उस चिड़िया के बारे में बता दिया। अब क्योंकि सारे लड़के तो अपने बागीचे के काम से एक साथ अनुपस्थित नहीं रह सकते थे सो सबसे पहले सबसे बड़ा भाई उस चिड़िया को लाने के लिये चला।

उसका रास्ता एक जंगल से हो कर जाता था सो जब वह जंगल से गुजर रहा था तो उसको जंगल में एक शिकारी मिला। उसने उस शिकारी से पूछा कि क्या वह उस चिड़िया को जानता था।

शिकारी बोला हाँ वह जानता तो है पर उसके लाने में बहुत खतरा है। उसने उसे यह भी बताया कि बहुत सारे आदमियों ने उसको लाने की कोशिश की है पर वे रास्ते में ही मर गये हैं।

पर लड़के को डराया नहीं जा सकता था। उसने चिड़िया लाने का पक्का इरादा कर रखा था सो उसने उससे उसको लाने के लिये

रास्ता पूछा। शिकारी ने उसको रास्ता बता दिया और वह लड़का उस चिड़िया को लाने चल दिया।

वहाँ से वह एक बड़े मैदान में पहुँचा जहाँ कोई नहीं रहता था सिवाय एक जोगी के। उसने उस जोगी से जा कर अपने दिल की बात कही तो जोगी ने भी उसे उस यात्रा पर जाने से मना किया पर लड़का तो मानने वाला नहीं था तब जोगी ने भी उसको आगे का रास्ता बताया और उसे जाने दिया।

फिर जोगी ने उसे एक छोटा सा पत्थर और एक छोटा सा मिट्टी का घड़ा दिया और कहा — "इस पत्थर को तुम अपने आगे फेंक देना तो वह तुम्हें वहाँ जाने का रास्ता दिखायेगा तुम उसके पीछे पीछे चला जाना।

वह पत्थर तुमको एक पहाड़ की तलहटी में ले जायेगा जहाँ तुमको तेज़ हवा और बिजली की कड़क जैसी बहुत तेज़ आवाज सुनायी देगी। हो सकता है कि उस आवाज में तुमको अपना नाम भी सुनायी दे।

पर तुम डरना नहीं और किसी भी हालत में वापस नहीं आना नहीं तो तुम एक पत्थर के खम्भे में बदल जाओगे। तुम उस पहाड़ पर चढ़ जाना। जब तुम उस पहाड़ की चोटी पर पहुँच जाओगे तो तुमको वहाँ सुनहरे पानी की एक झील दिखायी देगी।

उस झील के किनारे एक पेड़ खड़ा होगा जिसकी एक शाख पर एक पिंजरा लटका होगा जिसमें वह चिड़िया बन्द है। जब तुम उस

पेड़ के पास पहुँचो तो सबसे पहले उसकी वह शाख पकड़ना जिस पर पिंजरा लटका है। फिर पलट कर उस रास्ते को देखना जिधर से तुम आये थे।

यह बहुत जरूरी है क्योंकि अगर तुमने ऐसा नहीं किया तो तुम जिस रास्ते से आये हो उस रास्ते को भूल जाओगे।

वह चिड़िया तुमसे पूछेगी कि तुम वहाँ क्यों आये हो तो तुम उससे कहना कि तुम उसे लेने आये हो। उसके बाद सब कुछ ठीक है। अगर तुमने मेरी ये सारी बातें मानी तो तुमको कोई खास मुश्किल नहीं पड़ेगी और तुम सुरक्षित रूप से चिड़िया को ले कर आ जाओगे।"

लड़का उस पत्थर और घड़े को ले कर चल दिया। उसने पत्थर अपने आगे फेंक दिया और उसके पीछे पीछे चलता रहा। कुछ दूर तक तो सब ठीक रहा पर जब वह पहाड़ की तलहटी में पहुँचा और उसने वहाँ तेज़ हवा और बिजली की कड़क की बहुत तेज़ तेज़ आवाजें सुनीं तो वह डर गया और उसने पीछे मुड़ कर देखा। तुरन्त ही वह पत्थर का हो गया।

कुछ दिन बाद तक भी जब बड़ा भाई चिड़िया ले कर वापस नहीं आया तो दूसरे भाई ने सोचा कि अब वह जा कर देखेगा कि उसका भाई कहाँ रह गया। वह उसी जंगल में पहुँचा जिससे हो कर उसका भाई गया था।

उसको भी वहाँ एक शिकारी मिला और शिकारी के कहने पर आगे चला तो वह भी मैदान में पहुँच गया और वहाँ वह उसी जोगी से मिला जिससे उसका बड़ा भाई मिला था।

हालाँकि दोनों ने उसको इस यात्रा पर जाने से मना किया था और उससे यह भी कहा था कि तुम्हारा भाई तो पहले ही मर चुका है और इसका सुबूत यह था कि पत्थर और मिट्टी का घड़ा जोगी के पास वापस आ चुके थे।

जब लड़के ने यह सुना तो उससे पूछा — "क्या मेरे भाई को वापस लाने का कोई तरीका है।"

जोगी बोला — "है। पर उसे वही वापस ला सकेगा जो उस चिड़िया को ले कर आयेगा।"

लड़का बोला — "तब आप मुझे वह पत्थर और मिट्टी का घड़ा दें मैं उसे लाने जाता हूँ।"

जोगी ने उसे पत्थर और मिट्टी का घड़ा दे दिया और वह लड़का उनको ले कर वहाँ से चल दिया। वह भी अपने भाई की तरह कुछ दूर तक तो ठीक चला पर उसने भी जैसे ही तेज़ हवा और बिजली की कड़क की आवाजें सुनी वह पीछे मुड़ गया और तुरन्त ही पत्थर का हो गया।

छोटे भाई ने उसका भी कुछ दिन इन्तजार किया फिर वह भी उन दोनों को देखने के लिये निकल पड़ा। दुखी पर बहादुर लड़के ने अपने पिता और बहिन को विदा कहा अपने रास्ते पर चल पड़ा।

वह उसी जंगल में पहुँचा जिससे हो कर उसका भाई गया था। उसको भी वहाँ एक शिकारी मिला और शिकारी के कहने पर आगे चला तो वह भी मैदान में पहुँच गया और उसी जोगी से मिला जिससे उसका बड़ा भाई मिला था।

हालाँकि दोनों ने उसको इस यात्रा पर जाने से मना किया और उससे यह भी कहा कि तुम्हारे दो भाई तो पहले ही मर चुके हैं और इसका सुबूत यह था कि पत्थर और मिट्टी का घड़ा जोगी के पास वापस आ चुके थे।

उसने कहा — "बिना मेरे भाइयों के मेरी भी क्या ज़िन्दगी है। आप मुझे वह पत्थर और मिट्टी का घड़ा दें मैं उस चिड़िया का लाने की पूरी कोशिश करूँगा ताकि मेरे भाई वापस आ सकें और मेरी बहिन की इच्छा भी पूरी हो जाये।"

यह सुन कर जोगी ने उसको पत्थर और मिट्टी का घड़ा दे दिया और वह वहाँ से चल दिया। इस बार पत्थर और मिट्टी का घड़ा जोगी के पास वापस नहीं आये क्योंकि यह लड़का डरा नहीं और इसने पीछे मुड़ कर भी नहीं देखा जब तक यह पहाड़ की चोटी पर नहीं पहुँच गया।

वहाँ उसने सुनहरे पानी की एक झील देखी और देखा उसके किनारे खड़ा एक पेड़ और पेड़ की एक शाख पर लटका हुआ एक पिंजरा। पिंजरे में चिड़िया बहुत ही मीठी आवाज में गा रही थी।

वहाँ जा कर उसने उस पेड़ की शाख पकड़ ली। उसके शाख पकड़ते ही सारा शोर बन्द हो गया। कहीं से कोई आवाज नहीं आ रही थी सिवाय चिड़िया की आवाज के।

वह पूछ रही थी — "तुम यहाँ क्या करने आये हो और तुम्हें क्या चाहिये।"

लड़के ने कहा कि उसको केवल चिड़िया पेड़ की उस शाख का एक टुकड़ा जिस पर चिड़िया का पिंजरा लटक रहा था और थोड़ा सा सुनहरा पानी चाहिये और कुछ नहीं ताकि वह अपने भाइयों को जिला सके।

चिड़िया ने उससे शाख काटने के लिये कहा और उसका मिट्टी का घड़ा सुनहरे पानी से भरने के लिये कहा। उसने उससे एक घड़ा भर कर पानी और लेने के लिये कहा। और कहा कि दूसरा घड़ा उसको पास में ही पड़ा मिल जायेगा।

लड़के ने ऐसा ही किया। पिंजरे और दूसरी चीज़ों को साथ ले कर लड़का नीचे उतरने लगा। जब वह नीचे जा रहा था तब चिड़िया ने उससे कहा कि वह एक घड़ा भर कर पानी उन पत्थरों पर छिड़क दे जो टुकड़े हो कर चारों तरफ गिर जायेंगे।

लड़के ने वैसा ही किया तो वे पत्थर के टुकड़े पहले तो टूट कर बिखर गये फिर सारे टुकड़े आदमियों में बदल गये। इस तरह बहुत

सारे राजा राजकुमार और पवित्र लोग[44] ज़िन्दा हो गये जो कभी उस चिड़िया को वहाँ से लाने गये थे।

उन्होंने उस लड़के को धन्यवाद दिया और कहा कि वे तो उसके नौकर जैसे थे। उसके दोनों भाई भी ज़िन्दा हो गये थे।

एक दो दिन में यह लम्बा जुलूस जोगी के पास पहुँचा। तीनों भाई उस जुलूस के आगे आगे चल रहे थे। जब जोगी ने जुलूस आते देखा तो वह समझ गया कि यह लड़का अपने काम में सफल हो गया है। उसने उसको आशीर्वाद दिया। जब वे लोग कुछ और आगे चले तो उनको शिकारी मिला।

तीनों भाई अपने घर सुरक्षित आ पहुँचे। बूढ़े माली और उनकी बहिन ने उनका ऐसे स्वागत किया जैसे किसी के मर कर ज़िन्दा हो जाने पर करते हैं। सारे लोग जिनको लड़के ने ज़िन्दा किया था वे भी अभी तक उसके साथ थे और उसको छोड़ना नहीं चाहते थे।

माली बोला — "अरे मैं इतने सारे लोगों को कैसे खिलाऊँगा पिलाऊँगा?"

चिड़िया बोली — "तुम चिन्ता न करो तुम्हें सब कुछ मिल जायेगा।" उसकी बात सच ही हुई। रोज उन सबके लिये अच्छा अच्छा और नया नया खाना आने लगा। सारे मेहमानों ने खूब पेट भर कर खाया।

---

[44] Translated for the words "Holy Men"

जल्दी से जल्दी माली और उसके तीनों बेटों ने अपने मेहमानों के लिये रहने के लिये घर भी बना दिये। वहीं उनके पास एक तालाब बनाने की भी जगह थी सो उन्होंने एक गड्ढा खोद कर उसमें बर्तन वाला सुनहरा पानी डाल दिया जिससे वह तालाब सुनहरे पानी से भर गया। उसी तालाब के किनारे उन्होंने वह पेड़ की शाख भी लगा दी जो वे पहाड़ से लाये थे। वह शाख बढ़ कर एक बहुत सुन्दर पेड़ बन गयी।

वह बूढ़ा माली और उसका परिवार तो बहुत अमीर और खुशहाल हो गया। उसके पास तो अब इतना पैसा हो गया जितना उसने कभी सोचा भी नहीं था। उनका नाम सारी दुनियाँ में फैल गया। राजा खुद उससे मिलने आया और उसके साथ उसने बराबरी का व्यवहार किया।

एक दिन राजा ने उससे पूछा कि उसके पास यह सुन्दर और होशियार चिड़िया कहाँ से आयी तो सबसे छोटे भाई ने उसे सब कुछ बताया। उसने उससे यह भी पूछा कि इतने शानदार और इतने सारे नौकर और इतना सारा पैसा उनके पास कहाँ से आये।

इसका जवाब दिया चिड़िया ने — "सुनिये राजा साहब मैं आपको बताती हूँ। ये तीन लड़के और यह सुन्दर लड़की जिनको आप यहाँ अपने सामने देख रहे हैं ये माली के बच्चे नहीं हैं जैसा कि सारे लोग समझते हैं। ये आपके बच्चे हैं।"

यह सुन कर राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ — "यह कैसे हो सकता है? यह चिड़िया तो बहुत बात बनाती है।"

चिड़िया फिर बोली — "राजा साहब आप मानें या न मानें पर ऐसा ही है। आप नाराज नहीं होना मैं आपको सब बात बताती हूँ। मैं कोई बेवकूफी भरी बात नहीं कर रही हूँ। ये चारों बच्चे आपकी सबसे छोटी रानी के बच्चे हैं जिसको आपने अपने महल से बाहर निकाल दिया था।

उसने बेचारी ने किसी कौए के बच्चों या पिल्लों को जन्म नहीं दिया था जैसा कि आपकी दोनों नीच बड़ी रानियों ने आपको बताया। उन्होंने आपसे झूठ बोला ताकि आप कहीं अपनी छोटी रानी को उनसे ज़्यादा प्यार न करने लगें और उन्हें छोड़ दें इसी डर से उन्होंने ऐसा किया।

उन्होंने अपने हाथों से इन बच्चों को बक्से में बन्द करके इन्हें नदी में बहा दिया। परमेश्वर की कृपा से ये बच्चे इस बूढ़े माली के हाथ लग गये और इसने उन्हें बचा लिया।

कुछ साल बाद उन नीच रानियों को पता चला कि ये बच्चे ज़िन्दा हैं तो उन्होंने एक अक्लमन्द बुढ़िया से इस नन्हीं सी बच्ची को इस बात के लिये मजबूर करवाया कि यह अपने भाइयों से मुझे लाने के लिये कहे। वे यह जानती थीं कि मुझे लाना बहुत मुश्किल है और इसमें कई लोगों की जानें जा चुकी हैं।

उनको यह भी मालूम था कि तीनों भाई अपनी बहिन की इच्छा पूरी करने की कोशिश जरूर करेंगे और इसी कोशिश में वे तीनों मारे जायेंगे। दो बड़े भाई तो पत्थर के बन ही गये थे और शायद वे उसी हालत में रहते अगर सबसे छोटा भाई अपने उद्देश्य में सफल नहीं होता। राजा साहब आपने सुना जो कुछ आपको मैंने बताया।"

इसके बाद चिड़िया चुप हो गयी और उस जगह बिल्कुल चुप्पी छा गयी। कई मिनटों तक कोई नहीं बोला। फिर राजा बोला — "उफ़ मैंने यह क्या किया। मैंने अपनी भोलीभाली प्यारी पत्नी को महल से निकाल दिया। मैंने अपनी उन दोनों बड़ी रानियों की बातों को सुना ही क्यों और उनके झूठ बोलने पर उसे बाहर निकाल दिया।"

कह कर राजा फूट फूट कर रो पड़ा। उसके साथ साथ वहाँ जितने लोग बैठे थे सभी रो पड़े। जैसे ही राजा अपने महल लौटा उसने अपनी दोनों बड़ी रानियों को बाहर निकाल दिया और छोटी रानी को वापस बुला लिया।

राजा और उसकी प्रिय पत्नी छोटी रानी की खुशी की तो कोई हद ही नहीं थी जब उन्होंने एक दूसरे को समझा और जाना कि वे चार सुन्दर बच्चों के माता पिता हैं – तीन लड़के और एक लड़की।

वे लोग बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे और राजा के बाद उसके राज्य पर उसके तीनों बेटों ने राज किया।

इसी कहानी का दूसरा रूप

मैं आपको दो राजकुमारों की एक कहानी सुनाता हूँ। एक समय की बात है एक राजा था जिसके तीन रानियाँ थीं। हालाँकि उसके तीन रानियाँ थीं पर उसके बेटा कोई नहीं था। इस वजह से बहुत परेशान रहता था क्योंकि वह चाहता था कि उसका खून ही उसके बाद उसका राज्य सँभाले। इसके अलावा उसकी नजर में कोई और ऐसा आदमी नहीं था जो उसके काम कर सके।

कुछ समय बाद उसकी यह मुश्किल हल होती नजर आयी। उसकी तीसरी पत्नी को बच्चे की आशा हो गयी। यह सुन कर राजा बहुत खुश हुआ। वह हमेशा रानी का हाल पूछता रहता और उसकी देखभाल से सम्बन्धित बराबर अपने हुक्म दोहराता रहता।

अब जैसा कि सोचा जा सकता है उस रानी की इतनी देखभाल होते देख कर दोनों बड़ी रानियाँ उससे जलने लगीं। उनको यह बात बिल्कुल अच्छी नहीं लगती थी कि राजा उसकी इतनी देखभाल करे और उनके पास बिल्कुल न आये। उनको यह भी डर लगा कि ये हालात तो चलते ही रहेंगे अगर कहीं उसके लड़का हो जाये तो। सो इस सबको रोकने के लिये उन्होंने एक चाल खेली।

जैसे ही उन्होंने मौका पाया तो उन्होंने दाई को बुलाया और उससे कहा कि जब छोटी रानी के बच्चा हो तो वह बच्चे की जगह एक पिल्ला रख दे। इसके लिये उन्होंने उसको बहुत पैसे दिये।

दाई ने अपना वायदा निभाया और जैसे ही रानी के बच्चा हुआ तो दाई ने उसकी जगह एक पिल्ला रख दिया और कह दिया कि रानी ने तो एक पिल्ले को जन्म दिया है।

बच्चा जो लड़का था रानियों ने एक बढ़ई की दूकान में डलवा दिया। जब राजा ने यह सुना तो उसे बहुत दुख हुआ उसकी समझ में ही नहीं आया कि वह क्या करे।

कुछ समय बाद छोटी रानी को फिर से बच्चे की आशा हुई तो राजा को सुन कर बहुत खुशी हुई। उसने सोचा कि भगवान अबकी बार उसकी इच्छा जरूर पूरी कर देंगे। पहले की तरह से उसने छोटी रानी की देखभाल के लिये बड़े सख्त हुक्म निकाल दिये।

उसकी दोनों बड़ी रानियों की जलन अभी खत्म नहीं हुई थी सो उन्होंने इस बार भी दाई को बहुत सारे पैसे दे कर अपनी नीचता में बच्चे को उसी बढ़ई की दूकान में फिंकवा दिया जिसमें उसके भाई को फिंकवाया था और उसकी जगह एक पिल्ले को रखवा दिया। यह बच्चा भी एक बहुत सुन्दर लड़का था।

राजा ने जब यह सुना तो वह बहुत नाउम्मीद हो गया और उसका सारा धीरज जाता रहा। उसने अपनी छोटी रानी को महल से निकलवा दिया। बेचारी रानी बिना एक पैसा लिये वहाँ से चल दी और अपना पेट भरने के लिये घर घर जा कर भीख माँगने लगी। वह खुद भी बहुत दुखी थी।

राजा के दोनों लड़के बढ़ई के घर में बढ़ई की देखभाल में बड़े होने लगे जो हमेशा भगवान को इस खजाने को उसे देने के लिये धन्यवाद देता रहता।

कुछ साल गुजर गये कि एक दिन वे दोनों लड़के महल के पास की सड़क पर एक लकड़ी के घोड़े से खेल रहे थे जो उनके बढ़ई पिता ने उनको बना कर दिया था। राजा ने उनको देखा तो उसके मुँह से निकला — "क्या ही अच्छा होता अगर ये दोनों मेरे बेटे होते तो।"

उसने उन दोनों को अपने पास बुलाया अऔर उनसे पूछा — "क्या तुम मेरे साथ महल में रहोगे और मेरा काम करोगे?"

दोनों ने बेहिचक जवाब दिया — "नहीं। हम लोग तो एक गरीब बढ़ई के बच्चे हैं। हम इतनी ऊँची जगह पर काम कैसे कर सकते हैं।" ऐसा कह कर वे वहाँ से कुछ दूर भाग गये और फिर अपने घोड़े से खेलने लगे। राजा उन्हें फिर भी देखता ही रहा।

उसने देखा कि एक लड़के ने एक चम्मच चावल लिया और उसे लकड़ी के घोड़े के मुँह में देता हुआ बोला — "खा ओ लकड़ी के घोड़े खा चाहे तेरी खाने की इच्छा है या नहीं है।"

उसके बाद उसने दूसरे लड़के को देखा कि वह एक प्याले में पानी ले कर उस घोड़े की पूँछ की तरफ आया और उससे बोला — "पी ओ लकड़ी के घोड़े पानी पी चाहे तेरी पीने की इच्छा है या नहीं।"

राजा ने यह सब देखा और सब सुना फिर उनकी बेवकूफी पर आश्चर्य करने लगा। उसने उनको फिर बुलाया — "बच्चों तुम लोग यहाँ फिर से आओ और मुझे बताओ कि यह तुम लोग क्या कर रहे हो। क्या तम्हें पता नहीं कि एक लकड़ी का घोड़ा कैसे कुछ खा पी सकता है।"

लड़के बोले — "हाँ यह बात तो हमें मालूम है।"

फिर उन्होंने कुछ याद करते हुए कहा — "पर जब एक स्त्री पिल्लों को जन्म दे सकती है तो लकड़ी का घोड़ा क्यों नहीं खा पी सकता।"

यह सुन कर राजा को भी इस बेवकूफी की बात का अब अन्दाज हुआ उसने सोचा कि तब उसके दिमाग को क्या हुआ था। ऐसी बेवकूफी की बात पर उसने पहले ही कैसे विश्वास कर लिया। उसने बच्चों को वहाँ से भगा दिया और खुद महल के अन्दर चला गया।

अगली सुबह उसने अपने खास खास वज़ीरों को बुलाया और उनसे इस मामले में सलाह माँगी। सबने यही कहा कि उन्होंने जब यह सुना था तब उनमें से भी किसी को इस बात पर विश्वास नहीं हुआ था।

राजा ने उनसे फिर पूछा कि वे इस मामले के बारे में क्या सोचते हैं कि क्या हुआ होगा। तो सबने उनसे एक आवाज में कहा कि

यकीनन इसमें दोनों बड़ी रानियों का हाथ है उन्होंने छोटी रानी से

जल कर यह जाल रचा है।

जब उन्होंने देखा कि छोटी रानी की इतनी देखभाल हो रही है तो वे जल उठीं और उन्होंने यह सब जाल रचा। फिर उन्होंने राजा को सलाह दी कि वह दाई को बुलायें और उसको मौत की सजा का डर दिखा कर उससे पूछें कि सच क्या है और उसके बच्चों का क्या हुआ।

राजा ने ऐसा ही किया। दाई ने उन्हें सब बता दिया। बढ़ई के दोनों बच्चों को राजा के पास लाया गया जो अब उसके बच्चे साबित हो चुके थे। तीसरी रानी को भी तुरन्त ही बुला लिया गया और दोनों बड़ी रानियों को देश निकाला दे दिया गया।

इसके बाद सब लोग खुश खुश रहे। राजा और छोटी रानी जो अब राजा की बड़ी रानी हो चुकी थी बहुत दिनों तक जिये। बच्चे भी बड़े हो कर बहुत अच्छे बहादुर और लायक आदमी बने जिन्हें राजा और उसकी जनता बहुत प्यार करती थी।

इस कहानी का तीसरा रूप

एक बार की बात है कि एक बहुत ही बड़ा और शानदार राजा था जिसके चार सौ पत्नियाँ थीं पर कोई बेटा नहीं था। राजा के पास एक तोता था जिसको वह बहुत प्यार करता था।

वह रोज दरबार से जभी भी घर लौटता तभी उसको बुला भेजता था और अगर वह उसके पास नहीं होता था तो दुखी हो जाता था।

एक दिन राजा का एक वजीर तोते के पिंजरे के पास खड़ा हुआ था तो उसने देखा कि उसका पिंजरा कुछ गन्दा है सो उसने एक नौकर को बुलाया और उसको वह पिंजरा साफ करने के लिये दे दिया।

इस बीच उसने सोचा कि तोते की उड़ने की ताकत परखी जाये। उसने एक लम्बा सा धागा तोते के पंजे में बाँधा और उसको उड़ने के लिये छोड़ दिया।

तोता सारा धागा ले कर तुरन्त ही उड़ गया और जब उसने देखा कि अब वह धागे से बँधा होने की वजह से उड़ नहीं पा रहा है तो उसने वह धागा अपनी चोंच से काट दिया और उड़ गया।

वह दूर उड़ता चला गया और वजीर उसके पीछे पीछे भागता रहा। बेचारे वजीर ने उसका आखीर तक पीछा करने का और अगर मुमकिन हो सका तो उसको पकड़ने का फैसला किया। अगर वह उसे अपने देश में न पकड़ सका तो दूसरे देश तक जाने का भी इरादा किया क्योंकि उसकी राजा के पास बिना तोते के जाने की हिम्मत ही नहीं हो रही थी।

तोता बहुत सारे मैदान पार करके उड़ता चला गया। फिर उसने एक चौड़ी सी नदी पार की और एक झाड़ी पर जा कर बैठ गया जो

नदी के पास ही उग रही थी। वहाँ उसको एक स्त्री ने पकड़ लिया और उसको अपने घर ले गयी। खुशकिस्मती ने वजीर ने यह देख लिया तो वह भी उसके पीछे पीछे चला गया और जा कर तोते को उससे ले लिया।

तोते को उससे ले कर वह बहुत खुश हुआ। अपनी कृतज्ञता दिखाने के लिये उसने उस स्त्री से कहा कि वह उसकी शादी राजा से करा देगा और उसकी शादी का खर्चा वह खुद करेगा। स्त्री राजी हो गयी।

सो वजीर ने उसको अपना घर ठीक करने के लिये और कुछ कपड़े खरीदने के लिये **30** हजार रुपये दिये और उससे कहा कि वह कुछ महीनों में तैयार हो जाये तब वह उसके पास आयेगा।

वजीर जब महल पहुँचा तो उसने यह सब राजा को बताया। उसने स्त्री की सुन्दरता और होशियारी का इस तरह बखान किया कि राजा का मन उससे शादी करने के लिये करने लगा। जल्दी ही शादी का इन्तजाम हो गया और शादी भी हो गयी।

राजा अपनी नयी पत्नी को बहुत प्यार करता था। उसका प्यार उससे और ज़्यादा बढ़ गया जब उसको पता चला कि उसको बच्चे की आशा हो गयी थी। उसने भगवान से प्रार्थना करनी शुरू कर दी कि भगवान करे उसके बेटा ही हो।

उसने उसकी देखभाल के लिये खास हिदायतें दे रखी थीं और दूसरे तरीकों से भी उसने उसको बहुत इज़्ज़त दी। अब जैसा कि

सोचा जा सकता है कि राजा की उसके लिये इतनी देखभाल और इज़्ज़त देख कर दूसरी रानियाँ उससे जलने लगीं। इस जलन की वजह से उन्होंने सोचा कि राजा को नाउम्मीद किया जाये।

बच्चे के जन्म के कुछ दिन पहले ही उन्होंने दाई को बुलवाया और उसको जवाहरात और पैसे दे कर उससे छोटी रानी के जैसे ही बच्चा हो वैसे ही उसका बच्चा बदलने के लिये कहा। उन्होंने कहा कि वह उसको किसी पत्थर से बदल दे।

जब रानी के बच्चा हुआ जो एक बहुत ही सुन्दर लड़का था तो तुरन्त ही दाई ने उसको एक पत्थर के टुकड़े से बदल दिया। बच्चे को उसने एक बक्से में रखा और नदी में बहा दिया और कह दिया कि रानी ने एक पत्थर के टुकड़े को जन्म दिया है।

राजा ने जब इस अजीब से जन्म की कहानी सुनी तो उसका उस रानी के लिये प्यार बुरी तरह से नफरत में बदल गया। उसने उसे शाही अस्तबल में रहने के लिये भेज दिया और उसको जानवरों की तरह जौ खाने के लिये दे दिये।

अगली सुबह एक पवित्र आदमी नदी के किनारे अपनी पूजा कर रहा था कि उसने नदी में एक बक्सा तैरता जाता देखा। उसको यह देखने की उत्सुकता हुई कि उस बक्से में क्या है सो वह वहीं से चिल्लाया — "ओ बक्से अगर तू मेरे किसी काम का है तो मेरे पास आजा नहीं तो तू यहाँ से कहीं दूर चला जा।"

उसके ऐसे बुलाने पर बक्सा उसके पास आ गया। उसने उसे उठाया और घर ले गया। घर जा कर उसे खोला तो उसमें तो एक बहुत प्यारा सा बच्चा था जो पिछले दिन ही पैदा हुआ था। उसने वह बच्चा अपनी पत्नी को दे दिया। वे सब उसको धीरे धीरे बड़ा होते देख कर बहुत खुश होते रहे।

समय बीतता गया। अब वह लड़का नौ साल का हो गया था। एक दिन वह दूसरे बच्चों के साथ महल के ऑगन में खेल रहा था तो राजा की रानियों ने उसे देखा। उन्होंने देखा कि उसकी शक्ल तो राजा से काफी मिलती जुलती थी। यह देख कर उनको आश्चर्य हुआ। उनको लगा कि कहीं यह राजा का बेटा तो नहीं है जिसको उन्होंने नदी में फिंकवा दिया था।

उन्होंने दाई को बुलवाया और उसे दिखाया तो उसने उसका सिर देख कर कहा कि हॉ यह तो वही है। उसने उसे उसके सिर पर पड़े एक खास गड्ढे से पहचान लिया था।

राजा की रानियॉ यह सुन कर बहुत परेशान हुईं। उनको लगा कि अगर राजा को इस बात का पता चल गया तो वह उनकी इस नीचता के लिये बहुत कड़ी सजा देंगे। सो उन्होंने दाई से हाथ जोड़ कर विनती की कि वह इस परेशानी का जल्दी से जल्दी कोई हल निकाले। इसके लिये उन्होंने उसे बहुत सारा इनाम देने का वायदा किया।

दाई ने पहले तो यह पता किया कि वह लड़का रहता कहाँ है फिर वह उसके घर गयी और उसकी पत्नी को बताया कि वह उसकी दूर के रिश्ते की ननद थी। इस तरह अब उस स्त्री को आदमी की पत्नी से अपने लिये कोई काम निकालना बहुत मुश्किल नहीं रहा।

इस तरह से वह कई बार उनके घर में जाती रही और एक दिन उस आदमी की पत्नी ने उसको अपने घर रहने के लिये बुला लिया कि वह कुछ दिन उसके पास आ कर रहे। जब वह वहाँ रह रही थी तो वह अक्सर उस लड़के के बारे में बात करती और उसके अच्छे गुणों के बारे में बात करती रहती।

एक दिन उसने उस लड़के की माँ से कहा — "वह सब तो ठीक है पर मुझे यकीन है कि एक चीज़ है जो वह नहीं करेगा। वह फलाँ फलाँ देश नहीं जायेगा जहाँ एक बहुत सुन्दर बागीचा है और उस बागीचे में उसकी दीवार के सहारे सोने की शाखों वाला और मोतियों के फूलों वाला एक चन्दन का पेड़ खड़ा है।

अगर वह वहाँ जाये और उस पेड़ को ले आये तो उसके चरित्र का भी पता चल जायेगा और उसकी किस्मत भी चमक जायेगी।"

जब शाम को लड़का खेल कर वापस आया तो उसकी माँ ने उसे वह सब बताया जो उसने दाई से सुना था और उत्सुकतावश उससे वहाँ जा कर वह पेड़ लाने के लिये कहा।

लड़का राजी हो गया और अगले दिन सुबह ही वह अपनी इस खतरनाक यात्रा पर कुछ रोटियाँ अपने कमरबन्द में बाँध कर निकल पड़ा। वह बहुत दूर चलता गया जब तक वह एक नदी के पास नहीं आ पहुँचा। वहाँ वह सुस्ताने के लिये बैठ गया।

कुछ ही देर में एक स्त्री उस नदी में से बाहर निकली और उससे बात करने लगी। बातों बातों में उसने उससे पूछा कि वह कहाँ जा रहा था। लड़के ने उसे सब बता दिया तो उसने उससे प्रार्थना की कि वह वहाँ न जाये क्योंकि उस बागीचे में बहुत सारे देव और जंगली जानवर रहते थे।

पर लड़का तो मानने वाला नहीं था। वह तो वहाँ जाने के पीछे लगा था तो उस स्त्री ने सोचा कि उसको वह अपनी ताकत दे दे जिससे उसकी सहायता हो जायेगी।

वह बोली — "सुनो जब तुमने वहाँ जाने के लिये अपना मन बना ही लिया है तो तुम्हारे लिये यह जानना जरूरी हो जाता है कि तुम वहाँ के बारे में कुछ जान लो।

जब तुम वहाँ पहुँचोगे तो तुम देखोगे कि बागीचे के फाटक के दोनों तरफ दो चीते खड़े हैं जिनकी भूख को तुम्हें भेड़ की एक टाँग से शान्त करना पड़ेगा नहीं तो वे तुम्हारे ऊपर कूद पड़ेंगे और तुम्हें खा जायेंगे।

तुम उनसे डरना नहीं बस भेड़ की एक टॉग उनकी तरफ फेंक देना और उनसे सहायता मॉगना। वे तुमको बागीचे के अन्दर जाने देंगे।

जब तुम बागीचे के अन्दर पहुँच जाओगे तो वहॉ तुम्हें बहुत सारे देव मिलेंगे पर तुम उनसे भी डरना नहीं। तुम उनको चाचा कह कर पुकारना और उनसे कहना कि तुम उनसे मिल कर बहुत खुश हो। तुम उनसे भी सहायता मॉगना।

वे तुम्हें कुँए के पास ले जायेंगे जिसके चारों तरफ तुम्हें बहुत किस्म के बहुत सारे सॉप दिखायी देंगे। तुम उनसे भी नहीं डरना। तुम उनकी तरफ जमीन पर कुछ रोटियॉ और पनीर[45] फेंक देना तो वे तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचायेंगे।

चन्दन का पेड़ वहीं कुँए के पास ही उग रहा है। तुमको उसे वहॉ से लाने में कोई मुश्किल नहीं होगी। जाओ भगवान तुम्हें खुशहाल करे।"

लड़के को लगा कि अब उसका रास्ता बहुत आसान हो गया है। वह खुशी खुशी उस तरफ चल दिया। जैसे ही उसको लगा कि वह अब बागीचे के पास पहुँच रहा है उसने एक भेड़ की एक टॉग काट ली। कुछ रोटियॉ और पनीर भी साथ में ले लिया। जैसा कि नदी से निकली स्त्री ने उससे कहा था वह सब सच निकला।

[45] Translated for the words "Curdled Milk"

वह बागीचे के पास पहुँचा तो उसको दो चीते मिले जिनको उसने भेड़ की टाँग खिला कर सन्तुष्ट किया। अन्दर गया तो उसको कई देव मिले जिनको उसने चाचा कह कर सलाम किया।

वहाँ से वह कुँए के पास पहुँचा तो उसे बहुत किस्म के बहुत सारे साँप मिले। उनको उसने रोटी और पनीर खिला कर शान्त किया। फिर उसने चन्दन का पेड़ उखाड़ लिया और वापस घर चल दिया।

जब वह बागीचे से बाहर निकला तो एक चीते ने उससे जिद की कि वह उसके ऊपर चढ़ कर अपने घर जाये। वह एक बड़ा अच्छा दृश्य था कि एक लड़का अपने कन्धे पर चन्दन का पेड़ लिये चीते पर सवार हो कर घर आ रहा था।

यह बात सारे शहर में फैल गयी। सो यह बात राजा और रानियों के कानों तक भी पहुँची। सब लोगों ने उसकी बहुत तारीफ की पर राजा की रानियों ने तारीफ के अलावा कुछ और भी किया। वे डर के मारे रोयीं। उनको पूरा यकीन था कि राजा को सच का बहुत जल्दी पता चल जायेगा और तब वे सजा से नहीं बच पायेंगीं।

इस दुख में उन्होंने दाई को फिर से बुला भेजा और उससे उन्हें सहायता करने के लिये कहा। इस प्लान के अनुसार दाई फिर से लड़के के घर गयी और लड़के की यात्रा के बारे में पूछा। माँ ने बड़े

गर्व के साथ कहा — "देखो यह है वह चन्दन का पेड़। क्या मेरा बेटा बहादुर नहीं है?"

दाई बोली — "हाँ वह तो है पर अफसोस वह वहाँ से पेड़ को

ढकने वाल ढकना तो लाया ही नहीं जो वहीं एक पन्ने[46] के बक्से में कुँए के पास ही रखा है। वह तुम्हारे पास जरूर होना चाहिये। उसके बिना तो यह पेड़ जाड़ों में मर जायेगा। उसको दोबारा वहाँ भेजो और उससे उसे और मँगवा लो।"

दाई को खुश करने के लिये और अपने आपको भी उसकी माँ कहलाने के गर्व के लिये उसने शाम को बच्चे को वहाँ दोबारा जाने और पेड़ के ऊपर ढकने का ढकना लाने के लिये कहा। निडर बच्चा फिर से वहाँ जाने के लिये तैयार हो गया।

वह अपने चीते पर चढ़ा जो तब तक वहीं था वापस नहीं गया था और जल्दी ही उसी नदी के पास पहुँच गया जहाँ वह पहली बार आराम करने के लिये लेटा था। तुरन्त ही नदी में से वह स्त्री फिर निकल कर आयी और उससे पूछा कि वह कहाँ जा रहा था।

उसने उसे बताया कि वह कहाँ जा रहा था तो उसने फिर उसे वहाँ जाने से मना किया कि इस बार यह मामला पहले से बहुत मुश्किल था। यह बक्सा कुँए की दीवार पर रखा था और यहाँ दो

[46] Translated for the word "Emerald" – one of the nine precious stones.

शाहमार[47] रहते थे जो बहुत बड़े और भयानक थे। पर लड़का तो मानने वाला था नहीं।

जब स्त्री ने देखा कि लड़का अपने इरादे पर अटल है तो इसने लड़के से कहा कि वह खुद कुँए के पास न जाये बल्कि किसी देव को उस बक्से को उसके लिये लाने के लिये कहे। और अगर वह बक्सा लेने में सफल हो जाये तो वह इसी नदी के रास्ते से वापस जाये और उसे बताता जाये जो कुछ भी उसके साथ वहाँ हुआ था।

इसके बाद उसने उसे आशीर्वाद दिया और कहा कि जब वह लौट कर घर जायेगा तो वह भी उसके साथ उसके घर तक जायेगी।

सब लोग कितने खुश थे जब यह लड़का दोबारा मौत के मुँह से बच कर अपने काम में सफल हो कर लौटा। राजा ने उसे बुला कर उसको अपने वजीरों का सरदार बना दिया और उसे दूसरी तरीकों से भी इज़्ज़त दी।

राजा की रानियों ने सोचा कि अब हम क्या करें। अब तो हम यकीनन पता कर लिये जायेंगे और फिर हमारी सजा भी पक्की है। पर वे कर भी क्या सकती थी सिवाय इस भेद के खुलने तक इन्तजार करने का। लड़के को पकड़ने के सारे रास्ते अब उनके लिये बन्द हो गये थे।

---

[47] Shahmaar is a special kind of snake which becomes Shahmaar when it is not looked up on by any human being for 100 years. And if it is not seen by anyother by any man for another 100 years, it becomes a python. And it is not seen by any other man for another 100 years (total of 300 years) he becomes Veehaa. It possesses some special powers, especially of taking the shape of a woman.

पर उनको ज़्यादा इन्तजार नहीं करना पड़ा। एक दिन नदी की स्त्री की सलाह पर वजीर ने एक बहुत बड़ी दावत का इन्तजाम किया जिसमें उसने राजा को भी बुलाया। राजा ने उसका बुलावा स्वीकार कर लिया और उसके घर आया।

जब वे सब खाना खा रहे थे तो नदी वाली स्त्री ने चिल्ला कर सबको शान्त रहने के लिये कहा। सबकी ऑखें उधर उठ गयीं। उसने बोलना शुरू किया — "राजा साहब आप अपने बेटे को देखें। यह उस स्त्री का बेटा है जिसको आपने महल से निकाल कर अपने अस्तबल में रख दिया था और जिसको आप जानवरों की तरह से जौ खाने के लिये देते हैं।

पत्थर पैदा करने वाली कहानी आपकी दूसरी पत्नियों ने गढ़ कर आपको बतायी जो आपकी उस पत्नी से जलती थीं क्योंकि आप उसकी बहुत ज़्यादा देखभाल करते थे।"

राजा के मुँह से निकला — क्या ऐसा है? क्या यह सच है? हॉ मेरा दिल कहता है कि यह सच है। इन सब नीच रानियों को राज्य से बाहर निकाल दो और मेरी रानी को और मेरे बच्चे को मेरे पास वापस ला दो।

इसके बाद मैं किसी और की तरफ देखूँगा भी नहीं। देखो एक सच्ची पत्नी और एक सुन्दर बेटा मेरे लिये आज एक ही दिन में पैदा हो गये हैं। मैं आज बहुत खुश हूँ।"

राजा ने फिर नदी वाली स्त्री को यह सब उसे बताने के लिये बहुत बहुत धन्यवाद दिया। अपनी पत्नी को अस्तबल से बुला भेजा बेटे को भी बढ़ई के घर से बुलवा लिया। सभी लोग फिर खुशी खुशी रहने लगे।

11 एक राजकुमार जिसको भेड़ बना दिया[48]

एक बार की बात है कि एक देश में एक राजा रहता था जिसके सोलह सौ रानियाँ थीं पर उनसे उसके बेटा केवल एक ही था। उसका यह बेटा बहुत सुन्दर था। राजा अपने इस बेटे की शादी किसी ऐसी राजकुमारी से करना चाहता था जो उसके बेटे जैसी ही सुन्दर हो।

इत्तफाक से एक और राजा था। उसके भी सोलह सौ रानियाँ थीं और एक बेटी थी। वह भी उसके राजकुमार जितनी ही सुन्दर थी। उस राजा की भी उतनी ही इज़्ज़त थी जितनी इसकी।

जिस राजा के लड़का था उस राजा के पास एक बहुत ही अक्लमन्द और वफादार तोता था। राजा उससे बहुत सारे मामलों में सलाह लिया करता था और उसकी सलाह वह मानता भी था। बड़ी बड़ी मुश्किल समस्याओं में वह उसकी सलाह लेता था।

यही सोच कर इस समय भी उसने अपने तोते को बुलाया और उसको अपनी इच्छा बतायी। उसने उससे जाने के लिये कहा और वैसी ही बहू ढूँढने के लिये कहा जैसी वह अपने बेटे के लिये चाहता था।

[48] The Prince Who Was Changed into a Ram. A tale from Kashmir, India.

तोता राजी हो गया। उसने राजा से कहा कि वह राजकुमार की पसन्द लिख कर उसके पैर में बाँध दे। राजा ने वैसा ही किया और वह वहाँ से उड़ चला।

वह एक पड़ोसी देश में पहुँचा जहाँ बहुत भारी बारिश हो रही थी सो उसको एक जंगल में शरण लेनी पड़ी। उसको एक पुराना खोखला पेड़ मिल गया जहाँ उसको लगा कि वह जगह उसके आराम के लिये ठीक रहेगी।

जैसे ही वह उसके अन्दर जाने के लिये उड़ा तो उसके अन्दर से एक आवाज आयी — "तुम अन्दर नहीं घुसना नहीं तो तुम अन्धे हो जाओगे।" सो तोता पेड़ के जड़ के पास एक टहनी उग रही थी उस पर जा कर बैठ गया और बारिश खत्म होने का इन्तजार करने लगा।

इतने में उस खोखली जगह में से एक मैना निकली और आ कर तोते के पास बैठ गयी। दोनों बहुत देर तक बात करते रहे। इस बीच तोते ने उसको बताया कि वह कहाँ जा रहा था। जैसा कि हम आगे चल कर देखेंगे उनकी यह मुलाकात बहुत अच्छी रही।

मैना उस राजकुमारी के लिये जो अपने पिता की अकेली बेटी थी बहुत सुन्दर राजकुमार की तलाश में थी। इस राजा के भी सोलह सौ रानियाँ थीं। तोता बोला तब तो हमारा राजा ही वह राजा होना

चाहिये जिसके बेटे से उस राजकुमारी की शादी होनी चाहिये। तोते ने मैना को राजकुमार की पसन्द भी बतायी।

सो वे दोनों राजकुमारी के देश गये। जब वे वहाँ पहुँचे तो महल के एक नौकर ने उनको देखा तो राजा को जा कर बताया कि जिस मैना पर वह बहुत विश्वास करता था वह तो एक तोते के साथ घूम रही है और राजा के हुक्म को तो बिल्कुल भूल ही गयी है।

जब राजा ने यह सुना तो उसने दोनों चिड़ियों को मारने का हुक्म दे दिया। महल के नौकर मैना से जलते थे इसी लिये उन्होंने मैना की बुराई राजा से कर दी थी।

मैना को इस बात का कुछ कुछ पता चल गया था सो वह ऊपर की खिड़की से उड़ी। उड़ते समय उसने राजा का बेरहम हुक्म सुन लिया था।

वह तोते से बोली — "आओ राजा ने हमारे ऊपर झूठा इलजाम लगा कर हमको मारने का हुक्म दे दिया है। इससे पहिले कि राजा के तीर हमको मारें चलो हम यहाँ से दूर भाग चलें।" और वे दोनों वहाँ से दूर उड़ गये।

राजा के नौकर उनको मारने गये तो बहुत देर तक ढूँढने पर भी उनको न पा सके तो अपने आपको यह तसल्ली देते हुए वापस आ गये कि लगता है कि उन चिड़ियों को शाही हुक्म का पता चल गया इसलिये वे किसी सुरक्षित जगह चली गयी हैं।

तोता और मैना ने कुछ दिन तक इन्तजार किया ताकि लोग उस बात को भूल जायें फिर उसके बाद वे महल वापस आये और आ कर तोता राजा के दॉये घुटने पर और मैना राजा के बॉये घुटने पर जा कर बैठ गये।

उन्होंने राजा से पूछा — "आप हमको क्यों मारना चाह रहे थे? हम तो आपके वफादार हैं। वे लोग हमसे जलते हैं इसी लिये उन्होंने आपसे हमारी बुराई की। हम लोग दोनों बड़ी शान वाले उन राजाओं के नौकर हैं जो अक्लमन्द भी हैं और अमीर भी।

दोनों राजाओं के सोलह सोलह सौ रानियॉ है। उनमें से एक के केवल एक बेटा है और दूसरे के केवल एक बेटी है। इन दोनों राजाओं ने हालॉकि एक दूसरे को कभी देखा नहीं है पर ये दोनों अपने बच्चों की एक दूसरे के बच्चों से शादी करना चाहते हैं।

एक राजा को ऐसी ही बहू चाहिये जैसी दूसरे राजा की बेटी है और दूसरे राजा को वैसा ही दामाद चाहिये जैसा कि दूसरे राजा का बेटा है। देखिये हम दोनों उन्हीं दोनों राजाओं के नौकर हैं। भगवान की कृपा से हम लोग आपके राज्य के बाहर एक जंगल में मिले थे और अब यह अच्छी खबर ले कर आपके पास आये हैं।"

यह कह कर तोते ने अपना पैर राजा की तरफ बढ़ा दिया जिसमें राजकुमार की पसन्द लिखी हुई थी। वह सब पढ़ कर राजा को आश्चर्य भी हुआ और खुशी भी। पहले तो उसको चिड़ियों पर

विश्वास ही नहीं हुआ फिर दोनों का एकसापन देख कर उसे उन पर विश्वास हो गया।

उसने तस्वीर ले कर अपने शाही जनानखाने[49] में भेज दी और अपनी सोलह सौ पत्नियों से कहा कि वे उस तस्वीर को देख कर बतायें कि वह अपनी राजकुमारी के लिये उस राजकुमार को पसन्द करती हैं या नहीं।

कुछ दिन बीत गये पर तस्वीर वापस नहीं आयी। राजकुमारी को तो वह तस्वीर इतनी पसन्द आयी कि वह उसको अपने हाथ में ही लिये रखती। खैर कुछ दिन बाद जनानखाने से जवाब आया कि राजकुमार सबको बहुत पसन्द है। अब उसकी शादी जल्दी ही हो जानी चाहिये क्योंकि राजकुमारी तो राजकुमार को देखे बिना जी ही नहीं पा रही है।

जैसे ही यह जवाब राजा के पास पहुँचा तो राजा ने तोते को यह कह कर वापस भेज दिया कि वह अपने मालिक से कह दे कि राजकुमार की मनपसन्द लड़की मिल गयी है और वे चार महीने के अन्दर अन्दर शादी के लिये यहाँ आ जायें।

तोते ने आदर के साथ राजा को झुक कर नमस्कार किया और अपने देश उड़ गया। अपने देश पहुँच कर उसने राजा को अपनी यात्रा की सफलता के बारे में बताया। राजा यह सुन कर बहुत खुश

[49] Used for “Harem” or “Royal Household” where queens live.

हुआ। उसने तुरन्त ही इस शानदार मौके को शानदार तरीके से मनाने का हुक्म दे दिया।

राजकुमार के लिये सबसे कीमती और बढ़िया कपड़े बनवाये गये। घोड़ों के लिये बहुत शानदार जीन बनवायी गयीं। सिपाहियों की भी नयी और बढ़िया यूनीफार्म बनवायी गयी।

बहुत सारे तरह की भेंटें जैसे अनमोल हीरे जवाहरात बढ़िया कपड़े मुश्किल से मिलने वाले फल कीमती मसाले और बढ़िया किस्म के इत्र इकट्ठा किये गये। हर चीज़ को याद कर कर के इकट्ठा किया गया।

महीने जल्दी ही गुजर गये। इतनी तैयारियों में समय कब निकल गया पता ही नहीं चला।

पर अफसोस शादी के कुछ दिन पहले ही राजकुमार का पिता बीमार पड़ा और मर गया। परिवार वालों के लिये यह एक बहुत बड़ा धक्का था। राजकुमार को अपना जाना टालना पड़ा क्योंकि ऐसे समय पर वहाँ से चलना उसका अपने पिता का अपमान करना दिखाता था सो उसने कुछ समय तक इन्तजार किया।

जैसे ही उसके पिता की मौत का अफसोस का समय बीता वह वहाँ से चल दिया। तोते ने उसको रास्ता दिखाया। राजकुमारी के देश कोई बहुत दूर नहीं था सो वे जल्दी ही वहाँ पहुँच गये। राजकुमार ने अपने डेरे महल के पास वाले बागीचे में डाल दिये।

अगर राजकुमार उस बागीचे में न घुसा होता तो अच्छा होता क्योंकि वहाँ उसका तोता मर गया। उस वफादार चिड़िया को वहाँ के माली ने मार डाला क्योंकि वह कुछ खजूर तोड़ कर राजकुमार की तरफ फेंक रहा था।

जैसे ही राजकुमार के ऊपर यह मुसीबत आयी उसके कुछ देर बाद ही उसने सुना कि राजकुमारी के पिता ने अपनी बेटी की शादी उससे करने से इनकार कर दिया क्योंकि उसका पिता मर गया था।

बागीचे में डेरा डालने के कुछ दिन बाद ही राजकुमारी बाहर सैर करने के लिये अपनी पालकी में जा रही थी कि इत्तफाक से वह उसी रास्ते से गुजरी जिस रास्ते पर वह बागीचा था। उसने बागीचे पर नजर डाली तो वहाँ राजकुमार को देखा तो वह उसे पहचान गयी क्योंकि उसकी तस्वीर अभी भी उसके पास थी।

उसने उस समय तो उससे कुछ नहीं कहा और अपनी पालकी ढोने वाले कहारों को वापस महल चलने के लिये कहा। उसको अपना प्रेमी मिल गया था। उसी समय से उसको सब कुछ बहुत अच्छा लगने लगा।

शाम को खाने के समय उसने अपने खाने में से आधा खाना खाया और बचा हुआ आधा खाना राजकुमार की तस्वीर के साथ राजकुमार को भेज दिया। उसने अपनी नौकरानी से कहा कि वह राजकुमार से कहे कि वह उसे खा ले और अगर वह न खाये तो उसमें अपनी उँगली घुसा दे।

नौकरानी ने वैसा ही किया। राजकुमार ने खाना नहीं खाया तो नौकरानी ने उसको खाने की प्लेट में ऊँगली घुसाने के लिये कहा। जब उसने प्लेट में रखे चावल में अपनी ऊँगली घुसायी तो वहाँ उसको अपनी तस्वीर मिली।

उसने सोचा कि राजकुमारी तो मुझे प्यार करती है। ऐसा सोच कर उसने अपने हाथ पोंछे एक चिट्ठी राजकुमारी के नाम लिखी और उसे नौकरानी को दे कर वापस भेज दिया।

जब राजकुमारी ने वह चिट्ठी पढ़ी तो उसके मन में राजकुमार से मिलने की इच्छा ने जोर पकड़ लिया। उसने आधी रात को अपना घोड़ा तैयार करवाया अशर्फियों[50] से भरा एक थैला लिया और उस बागीचे की तरफ चल दी जहाँ राजकुमार ठहरा हुआ था।

राजकुमार तो उसको देख कर आश्चर्य में पड़ गया। राजकुमारी बोली — "तुम आश्चर्य में मत पड़ो मैं तुम्हें बहुत प्यार करती हूँ और इसी लिये मैं छिप कर तुम्हारे पास आयी हूँ। मेरे पिता तुमसे मेरी शादी की इजाज़त नहीं देंगे। चलो अपना घोड़ा तैयार कर लो और मुझे अपने साथ अपने देश ले चलो। वहाँ हमारा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा।"

सो दोनों घोड़ों पर सवार हो कर राज्य से बाहर की तरफ चल दिये। कुछ घंटों तक तो वे काफी तेज़ी से चले पर फिर एक पेड़ के नीचे आराम करने के लिये लेट गये।

---

[50] Gold coins

अगले दिन सुबह तरोताजा हो कर वे फिर से अपनी यात्रा पर चल दिये।

वे लोग बहुत दूर नहीं गये थे कि उनको घोड़े पर सवार सात डाकू मिल गये। राजकुमार बोला — "चलो हम तेज़ी से भाग चलते हैं क्योंकि हम इनसे लड़ नहीं सकते।"

सो दोनों ने अपने अपने घोड़ों को एड़ लगायी और उनको भगा दिया पर डाकू भी घुड़सवारी में होशियार थे और उनके घोड़े अभी अभी निकले थे थके नहीं थे सो वे भी उनके पीछे पीछे भाग लिये।

राजकुमार बोला — "इस तरह भागने से कोई फायदा नहीं है। वे हमारे पास ही आ रहे हैं। अब हम क्या करें?"

राजकुमारी बोली — "तब हमें उनका डट कर मुकाबला करना चाहिये।" कह कर वह अपनी जीन पर बैठी बैठी ही पीछे की तरफ मुड़ गयी और एक तीर उन डाकुओं पर चलाया। फिर दूसरा फिर तीसरा और इस तरह से उसने सात तीर चला कर सातों डाकुओं को मार डाला। खुशी खुशी वे अपनी यात्रा पर फिर से आगे बढ़ चले।

उस रात वे आराम करने के लिये एक गाँव में रुके। उस गाँव में एक जिन्न रहता था। जिन्न के एक बेटा था जिसका केवल आधा शरीर था। इसी गाँव में राजकुमार और राजकुमारी एक तालाब के किनारे रुक गये।

जब वे सो रहे थे तो जिन्न ने अपने बेटे से कहा — "तुम जल्दी से जाओ और राजकुमार को तो मार डालो और राजकुमारी घोड़े और खजाने को यहाँ ले आओ।"

बेटा यह सुन कर बहुत खुश हुआ कि अब उसको खून पीने को मिलेगा। बस उसने अपना काम खत्म किया ही था कि राजकुमारी जाग गयी। उसने चारों तरफ देखा तो उसको अपना प्रेमी मरा पड़ा दिखायी दिया और एक बदसूरत आधा आदमी उसकी लाश के पास खड़ा था। यह सब देख कर वह डर गयी।

फिर भी वह हँस कर बोली — "अच्छा हुआ तुमने उसे मार दिया। अब तुम मुझे अपने साथ ले चलो और मुझसे शादी कर लो। पर पहले इस मरे हुए शरीर को कहीं गाड़ दो तब हम यहाँ से जायेंगे।"

तुरन्त ही एक कब्र खोदी गयी। उस आधे आदमी ने राजकुमारी को उसे देखने के लिये बुलाया तो उसने कहा — "अरे यह तो बहुत छोटी है थोड़ी और गहरी खोदो।"

जिन्न के बेटे ने वह कब्र एक फुट गहरी और खोद दी। राजकुमारी बोली — "यह तो अभी भी छोटी है।"

जिन्न के बेटे ने कब्र और चौड़ी और और गहरी खोद दी। जब वह यह कर रहा था कि राजकुमारी ने उसकी तलवार निकाल ली और उसकी गर्दन उसके धड़ से अलग कर दी।

अपना बदला लेने के बाद वह फफक फफक कर रो पड़ी। उसका प्रेमी तो मर चुका था। उसने उसकी लाश ली और उसको तालाब के किनारे तक ले गयी। अब वह वहाँ बैठ कर रोने लगी। यह उसके लिये बड़े दुख का समय था। उसको लगा कि वह भी मर जाती तो अच्छा था।

जब वह वहाँ बैठी रो रही थी तो इत्तफाक से वहाँ से एक साधु की पत्नी गुजरी। उसको बहुत दुखी देख कर वह उसके पास रुकी और उससे पूछा कि क्या बात थी वह क्यों रो रही थी। राजकुमारी ने राजकुमार की लाश की तरफ इशारा करते हुए उसे बताया कि वह क्यों रो रही थी।

स्त्री बोली — "बेटी धीरज रखो शायद मैं तुम्हारी कुछ सहायता कर सकूँ। तुम तब तक यहीं इन्तजार करो जब तक मैं वापस लौट कर आती हूँ।" कह कर वह वहाँ से चली गयी।

घर जा कर उस स्त्री ने अपने पति को राजकुमारी का सारा हाल बताया और उससे राजकुमार को ज़िन्दा कर देने की प्रार्थना की। साधु बोला — "अफसोस। वह जगह तो शैतान औरत और उसके भयानक बेटे की है। मैं अभी राजकुमारी के पास जाता हूँ और उसको तसल्ली देने के लिये राजकुमार को ज़िन्दा करता हूँ।"

साधु तुरन्त ही राजकुमारी के पास गया तो वह तो सहायता का इन्तजार ही कर रही थी जो साधु की पत्नी उससे वायदा कर के गयी थी। साधु बोला — "मुझे तुम्हारे बारे में सब पता चल चुका है और

मैं तुम्हारी सहायता करने के लिये आया हूँ। मैं तुम्हारा राजकुमार तुमको वापस कर दूँगा।"

उसने राजकुमार की लाश का सिर अपने एक हाथ में लिया और उसका शरीर दूसरे हाथ में लिया और दोनों को जोड़ दिया। दोनों जुड़ गये तो लाश ज़िन्दा हो गयी। पहले उसके हाथ पैर हिले फिर उसने आँखें खोलीं फिर होठ खोले और वह बोल पड़ा।

जब राजकुमारी ने यह देखा तो उससे न रहा गया वह दौड़ कर राजकुमार के गले लग गयी और खुशी को मारे रो पड़ी। सबके लिये यह बहुत ही खुशी का मौका था यहाँ तक कि उस साधु के लिये भी जिसने उसको ज़िन्दा किया था।

उस रात राजकुमार और राजकुमारी किसी दूसरी जगह चले गये। यहाँ राजकुमारी की जान बहुत बड़े खतरे में थी। इस जगह एक जादूगरनी रहती थी। उसके एक बेटी थी। जैसे ही उसकी बेटी ने राजकुमार को देखा तो वह उससे प्रेम कर बैठी और उससे शादी करनी चाही।

इसके लिये उसने एक तरकीब सोची। उसने अपनी माँ से राजकुमार और राजकुमारी को अपने घर खाने के लिये बुलाने के लिये कहा। जादूगरनी ने उनको अपने घर खाने के लिये बुलाया। जब राजकुमार उनके घर के कमरे देख रहा था तो जादूगरनी ने उसके गले में रस्सी का फन्दा डाला और उसको एक भेड़ में बदल दिया।

सारा दिन वह भेड़ जादूगरनी की बेटी के पीछे पीछे घूमता रहा। जहाँ वह जाती वह उसके पीछे जाता। रात को वह उसके गले से रस्सी का फन्दा निकाल लेती तो वह राजकुमार बन जाता और उसके साथ सोता।

इस तरह कई दिन बीत गये। राजकुमारी बहुत दुखी थी। उसको पता ही नहीं था कि वह क्या करे। कभी वह सोचती कि राजकुमार ने उसको छोड़ दिया है। कभी वह सोचती कि शायद उसका कत्ल हो गया है।

जब वह और न सह सकी तो उसने एक आदमी का रूप रखा और उस देश के राजा के पास गयी और उससे कोई काम माँगा। राजा उसकी शक्ल सूरत और बोलने के ढंग से बहुत प्रभावित हुआ तो उसने उसको अपना डिप्टी इन्सपैक्टर आफ पुलिस यानी कोतवाल रख लिया।

इस कोतवाल को बहुत सारे घरों के बहुत सारे भेद मालूम थे। उसके नीचे बहुत तेज़ और कोई भी काम करने के लिये तुरन्त तैयार सिपाही काम करते थे।

कोतवाल को केवल आदमी की ऊँचाई और उसकी शक्ल सूरत बतानी होती थी और उसको उसे ढूँढने के लिये कहना होता था। बस सारा राज्य तब तक छान मारा जाता जब तक कि वह आदमी मिलता।

पर राजकुमारी को राजकुमार के बारे में कुछ पता न चल सका हालाँकि उसको यह पता चल गया कि जिस घर में वह और राजकुमार ठहरे थे वह घर एक जादूगरनी का था। वह उसके घर बार बार गयी। वहाँ उसने एक भेड़ इधर उधर घूमता हुआ देखा तो पर उसको यह पता न चल सका कि वह उसका अपना प्यारा राजकुमार था और उस जादूगरनी ने उसको भेड़ में बदल दिया था।

धीरे धीरे इस कोतवाल और जादूगरनी की बेटी में दोस्ती बढ़ती गयी। जादूगरनी की बेटी ने सोचा कि यह कोतवाल सचमुच में आदमी था जबकि वह तो आदमी के वेश में राजकुमारी थी।

वह कोतवाल को चाहने लगी और उसने उसको कई भेंटें दीं। इन भेंटों में एक ऐसा कपड़ा भी था जैसा पहले कभी किसी ने नहीं देखा था। राजकुमारी ने यह कपड़ा ला कर अपनी एक खिड़की में टाँग लिया। अभी हम देखेंगे कि यह कपड़ा राजकुमारी के भविष्य के लिये क्या करने वाला है।

एक सुबह महल का एक नौकर उस खिड़की के नीचे से गुजरा जिसमें कोतवाल ने अपना यह कपड़ा टाँग रखा था। वह नौकर उस कपड़े के रंग और उसकी बनावट देख कर दंग रह गया। घर आ कर वह रानी से मिलने गया और जो कुछ उसने देखा था वह सब उसको बताया।

रानी को भी उस सुन्दर कपड़े को देखने की इच्छा हो आयी सो उसने राजा से प्रार्थना की कि वह उस कोतवाल को बुलाये और उसमें से कुछ कपड़ा उसके लिये मँगवा कर दे।

राजा ने ऐसा ही किया तो कोतवाल ने उसको वह सारा का सारा कपड़ा ही भेज दिया जो उसके पास था। जब रानी ने उसको देखा तो वह उसको इतना अच्छा लगा कि उसने राजा से कहा कि वह कोतवाल से कहे कि वह उसको वैसा ही कपड़ा और ला कर दे।

जब राजा ने रानी का हुक्म कोतवाल को सुनाया तो उसने कहा कि यह काम ज़रा मुश्किल है पर वह अपनी पूरी कोशिश करेगा।

राजा के महल से वह सीधे जादूगरनी के घर गया और उससे वैसा ही कपड़ा और माँगा। जादूगरनी ने कहा कि अफसोस वह इसमें उसकी कोई सहायता नहीं कर सकती। उसका एक भाई है वह भी जादूगर है। बहुत दिनों पहले वह किसी दूर देश चला गया था वहीं से उसने उसको यह कपड़ा भेजा था।

कोतवाल ने कहा कि वह अपने भाई को लिखे कि वह वैसा ही कपड़ा और भेज दे।

जादूगरनी ने कहा कि वह यह नहीं कर सकती क्योंकि जहाँ वह गया है वहाँ के सारे आदमियों को उसने खा लिया है और अब वहाँ उसके और शेरों के अलावा और कोई नहीं रहता। इन शेरों

को भी वह एक तरह की घास खिला कर आधा भूखा रखता है। हालाँकि वे उस घास को खाना पसन्द नहीं करते।

इस तरह से जो कोई भी वहाँ जाता है कोई भी शेर या तो किसी झाड़ी में से निकल आता है या फिर किसी चट्टान के पीछे से निकल आता है और आने वाले को खा जाता है।

इस तरह से वहाँ कई लोगों की जानें जा चुकी हैं। ऐसे में मैं किसी को वहाँ कैसे भेज सकती हूँ। ऐसे खतरे वाले काम के लिये मैं वहाँ किसी को नहीं भेज सकती।

कोतवाल बोला — "अच्छा तो तुम मुझे बस यह बता दो कि तुम्हारा भाई कहाँ रहता है। मैं वहाँ जाऊँगा और उससे कपड़ा ले कर आऊँगा। क्योंकि मुझे तो उसके पास जाना ही है नहीं तो राजा मेरी जान ले लेगा।

जब तक कि मैं वह कपड़ा ले कर नहीं आता मैं तो यहाँ भी सुरक्षित नहीं हूँ। इसलिये तुम मुझे बताओ कि तुम्हारा भाई कहाँ रहता है मैं उसके पास जा कर उससे मिलूँगा और कपड़ा ले कर आऊँगा।"

जादूगरनी बोली — "ठहरो अगर तुम्हारी यह हालत है तो मैं तुम्हारी सहायता अवश्य करूँगी। मेरे पास मिट्टी का एक छोटा सा बर्तन है जिससे मेरे भाई की ज़िन्दगी बँधी है।

जब तक यह बर्तन मेरे पास सुरक्षित है तब तक मेरा भाई भी सुरक्षित है पर जैसे ही यह बर्तन टूटेगा तो मेरा भाई मर जायेगा। मैं

अपनी बेटी की खातिर इस बर्तन को तोड़ दूँगी क्योंकि मेरी बेटी तुमको बहुत प्यार करती है।”

ऐसा कह कर उसने मिट्टी का वह बर्तन जमीन पर मार कर तोड़ दिया और बोली — “जाओ अब तुम निडर हो कर जाओ अब तुम्हें कोई डर नहीं है। वहाँ के शेर अब चाहे घास खायें या कुछ और पर अब वे हर उस आदमी को नहीं खायेंगे जो वहाँ जायेगा। जाओ भगवान तुम्हें सुखी और धनवान बनाये।”

जादूगरनी ने तो यह सोचा ही नहीं था कि यह कोतवाल राजकुमारी है – उस राजकुमार की होने वाली पत्नी जिसको उसने भेड़ बना कर रखा हुआ है।

अगली सुबह राजकुमारी ने थोड़े से सिपाही लिये राजा से जाने की इजाज़त माँगी और अपने काम पर चल दी। उस देश में पहुँच कर उसने तुरन्त ही जादूगर का घर ढूँढा जो उसे जल्दी ही मिल गया। उसके घर में वैसे कपड़ों के बहुत सारे ढेर लगे हुए थे।

इनके अलावा वहाँ और भी बहुत सारा खजाना था। राजकुमारी ने उसका वह सारा कपड़ा और खजाना लिया और राजा के महल की तरफ लौट चली। राजा उसके इस काम से इतना खुश हुआ कि उसने उसको बहुत सारी भेंटें दीं और उसको अपना वारिस घोषित कर दिया।

कुछ साल गुजर गये। राजा मर गया। अब वह कोतवाल उस राज्य पर राज कर रहा था। उसको कुछ कुछ पता चल गया था कि

राजकुमार को क्या हुआ था सो उसने अपने राज्य भर के सारे भेड़ों को अपने सामने पेश होने का हुक्म दिया।

सारे भेड़ एक जगह आ कर इकट्ठे हुए। राजकुमारी ने खुद ने उन सबकी जाँच की। वह उनसे बोली पर उनमें से किसी भी भेड़ ने उसकी बात का जवाब नहीं दिया और न उसको पहचाना। फिर उसने पुलिस को हुक्म दिया कि वे लोग सब जगह जा कर देखें कि किसने उसका हुक्म नहीं माना।

पुलिस के कुछ आदमी जादूगरनी के घर भी आये तो उन्होंने देखा कि उसने अपना भैंसा राजा के पास नहीं भेजा था। उन्होंने उसके भैंसे को रस्सी से पकड़ा और राजा के पास ले गये।

जादूगरनी ने उसकी जादुई रस्सी को अपने हाथ में पकड़े रखने की बहुत कोशिश की पर सब बेकार। पुलिस ने उसको छोड़ा ही नहीं। वे उस भेड़ को रस्सी से पकड़ कर जादूगरनी से दूर ले गये।

राजा ने देखा कि उसके भेजे हुए पुलिस के लोग एक भेड़ पकड़ कर ला रहे हैं तो वह उनसे मिलने के लिये आगे तक आयी कि लो भेड़ की रस्सी तो अचानक टूट गयी और उसकी जगह एक सुन्दर राजकुमार खड़ा था।

राजकुमारी बोली — “यकीनन यह जादूगरनी तो बहुत ही नीच औरत है। इसको इस दुनियाँ में रहने का कोई हक नहीं है। कल सुबह इसको मार दिया जाये और राजकुमार को हमारे महल में ठहराया जाये।

अब आगे की कहानी तो बिल्कुल साफ है। राजा यानी राजकुमारी ने अपनी सच्चाई राजकुमार को बतायी। फिर उसने अपनी जनता को बुलाया और उससे कहा — "देखो तुम्हारा राजा एक स्त्री है। इस वेश बदलने का मेरा उद्देश्य अपने राजकुमार को ढूँढना था। मेरा उद्देश्य अब पूरा हो गया इसलिये अब तुम लोग राजकुमार को अपना राजा और मुझे अपनी रानी मान लो।"

लोगों ने उनको अपना राजा और रानी मान लिया और फिर सब खुशी खुशी रहे।

12 राजा और तोता[51]

यह बहुत पुरानी बात है जब चिड़ियें भी बात किया करती थीं और इतनी अक्लमन्द हुआ करती थीं कि वे अच्छे अच्छे अक्ल्मन्दों से बात कर सकती थीं।

एक राजा था जिसके पास ऐसी ही एक तोती थी। वह उसकी ज़िन्दगी की बहुत बड़ी ख़ुशी थी कि वह एक राजा की तोती थी। वह उसे अपने शाही घुटने पर बिठा कर सहलाता उससे बात करता और उसे अपने हाथ से बहुत प्यारी प्यारी चीज़ें खिलाता।

वह चिड़िया भी उसके प्यार का जवाब प्यार से ही देती। वह उसे अपने ढंग से प्यार करती और उससे मीठी मीठी बातें करती।

एक दिन वसन्त के मौसम में एक गरम सुबह को जब विलो के पेड़ पर हरे पत्ते आने को थे तो तोती ने अपने मालिक से कहा — "ओ राजन। बहुत दिन हो गये मुझे अपना घर छोड़े हुए मेहरबानी कर के मुझे छुट्टी दे दें ताकि मैं अपनी पसन्द की जगहें घूम कर आ सकूँ।"

पर राजा ने उसे मना कर दिया क्योंकि वह उससे अलग नहीं होना चाहता था। बहुत बार कहने के बाद कई दिनों के बाद राजा ने उसे बहुत दुख के साथ उसके घर जाने की इजाज़त दी।

---

[51] The King and the Parrot. (Tale No 18)

वह बोला — "ओ मेरी प्यारी चिड़िया। जाओ और जा कर अपने घर हो कर आओ। पर ठीक छह महीने बाद तुम मेरे पास आ जाना और जब तुम मेरे पास आओ तो मेरे लिये अपने प्यार की कोई निशानी जरूर ले कर आना जिससे मुझे पता चले कि तुम मेरे प्यार को भूली नहीं हो।"

तोती बोली — "मैं चाहे यहाँ रहूँ और चाहे यहाँ न रहूँ पर मैं आपके प्यार को कभी नहीं भूलूँगी।" सो तोती ने राजा से प्यार भरी विदाई ली और वहाँ से चली गयी। पेड़ से पेड़ जंगल से जंगल पहाड़ी से पहाड़ी होती हुई वह बहुत दूर अपने घर चली गयी।

पर राजा ने जो उसकी उड़ान की दिशा जानता था अपने कुछ दरबारियों को यह हुक्म दे दिया कि वे उसका रास्ते भर पीछा करें और वह क्या करती है इस बात का पता करें।

यह एक लम्बी और थका देने वाली यात्रा थी। कम से कम एक सौ मील चलने के बाद दरबारी लोग एक जंगल के बीच से गुजरे और आखिर वे एक बंजर मैदान में आ गये।

वहाँ कोई सब्जी आदि नहीं उगती थी और हवा भी चीखती हुई बहती थी। जहाँ वह मैदान खत्म होता था वहाँ एक बहुत ही बड़ी नदी बहती थी जिसे वे किसी भी तरह पार नहीं कर सकते थे।

सो वे वहाँ से लौटने ही वाले थे कि उन्हें नदी के किनारे कुछ पेड़ दिखायी दे गये। उन्होंने देखा कि उनमें से एक पेड़ की एक झुकी हुई डाली पर एक घोंसला बना हुआ था।

उनका तो आश्चर्य न रहा जब उन्होंने उस घोंसले में राजा की प्रिय तोती को बैठे हुए देखा। यह देख कर वे बहुत खुश हुए। तभी अचानक से हवा का एक तेज़ झोंका आया और उस झुकी हुई डाली को तोड़ कर ठंडे पानी में गिरा गया।

यह देख कर दरबारी लोग एक बार फिर महल लौटे और राजा को उन्होंने वह सब बताया जो उन्होंने देखा था। राजा ने जब यह सुना तो उसे बहुत आश्चर्य हुआ कि उसकी चिड़िया जो इतनी होशियार और अक्लमन्द थी कि उसने इतना अच्छा घर और खाना छोड़ कर ऐसी उजाड़ जगह रहना पसन्द किया।

अब क्योंकि राजा भी बहुत होशियार था तो उसने ऐसी असाधारण घटना के बारे में सोचना शुरू किया और फिर अपने दरबारियों से कहा — "यह मूल प्रवृति का एक उदाहरण है। चाहे कोई कितना भी गरीब क्यों न हो फिर भी वह अपने उसी घर में रहने की इच्छा करता है जिसमें उसको रहने की आदत होती है।

और यह सब भगवान की मरजी है कि तोती भी अपने उसी भीगे घोंसले में खुश है जो महल की बजाय विलो के पेड़ की डाली पर बना हुआ है।"

छह महीने बाद तोती अपने छोटे छोटे बच्चों को पाल पोस कर छोड़ कर राजा के पास चली आयी। पर महल पहुँचने से पहले तोती को याद रहा कि उसे राजा के लिये उसका प्यार जताने के

लिये कोई भेंट लेनी थी सो उसने परियों के बागीचे में जाने की सोची।

वहाँ बागीचे के बीच में गुलाबी सेबों का एक जादुई पेड़ लगा हुआ था जिस पर से उसने दो सेव तोड़े और फिर अपने रास्ते चल दी। जब वह राजा के दरबार में पहुँची तो उसके आने की खबर राजा को तुरन्त ही दी गयी।

दरबार में तोती का बहुत ज़ोर शोर से स्वागत हुआ। तोती ने अपने प्यार की निशानी अपने लाये दो सेब राजा को भेंट में दिये। पर राजा को उस पर शक हुआ जैसा कि किसी भी राजा को होना चाहिये।

इसलिये उसने अपने एक कुत्ते को बुलाया और उन दोनों सेबों में से एक सेब उसे खाने को दिया। कुत्ते ने बड़े लालचीपने से उसे तुरन्त ही खा लिया। पर जैसे ही उसने उसे खाया उसे दौरा सा पड़ा और वह कुछ पलों में ही मर गया।

यह देख कर राजा की आँखों में खून उतर आया। वह उठा और उसने आव देखा न ताव और झट से अपनी प्रिय तोती की गरदन ऐंठ दी। यह कर के उसने दूसरे सेब को बाहर फिंकवा दिया।

इस सेब में कुछ जादुई ताकतें थीं। जब इसे राजा के दरबार में से बाहर फेंका गया तो यह सेब राजा के बागीचे में जा कर पड़ा। जल्दी ही इसमें से एक पेड़ उगा और बढ़ता गया। हालाँकि यह पेड़

आसमान तक ऊँचा तो नहीं गया पर फिर भी यह जल्दी ही काफी बड़ा हो गया और इस पर बहुत सारे फल लगे।

अब यह तो कहना बेकार है कि इस पेड़ के पास किसी की जाने की भी हिम्मत नहीं थी इसके फल खाना तो दूर। राजा ने भी यह मुनादी पिटवा रखी थी कि कोई भी इस पेड़ के पचास गज पास तक न जाये।

क्योंकि इस पेड़ के फल में मार डालने के गुण थे इसलिये यह पेड़ दूर दूर तक "मौत के पेड़" के नाम से मशहूर था।

राजा का बागीचा बहुत बड़ा था। उसके दूर के एक कोने के पास एक झोंपड़ी थी जिसमें एक बूढ़ा सफाई करने वाला अपनी पत्नी के साथ रहता था। क्योंकि वे लोग बहुत गरीब थे बूढ़े थे और कमजोर थे सो उन दोनों की हालत बहुत खराब थी।

एक दिन दोनों ने अपनी इस बुरी हालत के बारे में सोचा तो पति ने पत्नी से कहा — "देखो हम लोग कितने अभागे हैं। यह ज़िन्दगी अब हमारे लिये अब जीने लायक नहीं रह गयी है। हम लोग बहुत दिन ज़िन्दा रह लिये अब हमें राजा के बागीचे के मौत के पेड़ का फल खा कर मर जाना चाहिये।"

यह सोच कर वे दोनों उस मौत के पेड़ के पास पहुँचे और दोनों ने इस पेड़ का एक एक फल तोड़ कर खा लिया। उन्हें लगा कि बस अब यह उनका आखिरी खाना था क्योंकि इसे खाने के बाद तो उन्हें मर ही जाना था।

पर लो यह क्या। फल तोड़ कर खाने के बाद बजाय मर कर नीचे गिरने के वे दोनों तो जवान और सुन्दर हो गये। दोनों में जवानी की ताकत आ गयी।

अगली सुबह जब घोड़े का रखवाला आया तो उसने इन दोनों को देखा। उसे ये अनजाने लगे क्योंकि उसने इन्हें इससे पहले कभी देखा नहीं था सो उसने इनसे पूछा कि ये लोग कौन हैं और इस शाही बागीचे में क्यों घुसे हैं।

वे बोले — "हम कोई घुसपैठिये नहीं हैं। हम दोनों तो गरीब बूढ़े सफाई करने वाले हैं जो यहाँ इस झोंपड़ी में बहुत दिनों से रहते चले आ रहे हैं। हम लोग अपनी जिन्दगी से थक गये थे सो इस मौत के पेड़ के फल खाने आये थे ताकि इन्हें खा कर हम अपनी इस दुखभरी ज़िन्दगी से छुटकारा पा सकें।

इसलिये हमने इस पेड़ के फल खाये। पर भगवान की माया देखो कि इन्हें खा कर भी हम मरे नहीं बल्कि और जवान और ताकतवर हो गये।"

जब घोड़े के मालिक ने यह आश्चकर्यजनक कहानी सुनी तो वह तुरन्त ही उन्हें साथ ले कर राजा के पास गया और कहा — "इन दोनों के पास आपको बताने के लिये एक नया समाचार है।"

सो पहले तो वे राजा के पैरों पर पड़े फिर उन्होंने राजा को वह सब बता दिया जो उन पर गुजरा था। उनकी कहानी सुन कर सबसे पहले तो राजा को इतना ज़्यादा आश्चर्य हुआ कि वह उनको मारने

का हुक्म देने वाला था फिर अपने घोड़े के मालिक की विनती पर इस घटना की सच्चाई जानने के लिये रुक गया।

इसके लिये उसने अपने दरबार के एक सबसे बूढ़े कुलीन आदमी को बुलाया और उसे वे जादुई फल लाने के लिये कहा जिन्होंने यह आश्चर्यजनक काम किया था। वह गया और जब वह लौटा तो उसके हाथों में गुलाब जैसे लाल रंग के छोटे छोटे सेबों की एक टोकरी थी।

वह बोला — "सरकार मैं ले आया।"

राजा बोला — "अब इसे खाओ।"

वह बूढ़ा बिना किसी ना नुकुर के उस चमकते हुए सेब को खाने लगा। जैसे ही उसने वह फल खाया तो वह कुछ पल में ही जवान और सुन्दर हो गया। तब कहीं राजा के परेशान दिमाग को शान्ति मिली।

यह उसके लिये कोई छोटा सा आश्चर्य नहीं था। राजा अपना पद भूल कर तुरन्त ही अपने सिंहासन से फल खाने के लिये उठा तो ऐसा ही उसके साथ भी हुआ।

बस अब क्या था अब तो राज्य के हर आदमी को उस पेड़ के फल खाने की इजाज़त थी। केवल एक दिन के अन्दर अन्दर ही राज्य के बहुत सारे लोग जवान और सुन्दर हो गये।

यह देख कर राजा ने यह जानने के लिये अपने ज्योतिषियों को बुला भेजा कि इस तरह का यह आश्चर्य कैसे हो रहा है। दूसरे उसी फल से उसका कुत्ता कैसे मर गया था।

सब कुछ जोड़ने घटाने और गणित करने बाद उन्होंने कहा कि पहला सेब साँप का काटा हुआ था जो परियों के बागीचे में छिपा हुआ था। उसने जहरीले थूक ने राजा के कुत्ते को मार दिया था। इसमें तोती की कोई गलती नहीं थी।

उन्हें यकीन था कि राजा को बेवजह तोती की गर्दन मरोड़ देने के दुख में पछताना ही चाहिये। उसके बाद राजा ने सारे राज्य में यह ढिंढोरा पिटवा दिया कि उस पेड़ का फल कोई भी खा सकता था। उसने वहीं तोती का एक मन्दिर भी बनवा दिया जहाँ सब उसे एक संत की तरह पूजते थे।

List of Stories of "Stories of Parrot"

1. The Story of a Hiraman
2. Birth of Ruby
3. The Clever Parrot
4. Gullala Shah
5. The Parrot
6. The Parrot: First Version
7. The Parrot: Second Version
8. The Parrot Which tells Three Stories: Third Version
9. A Lac of Rupees For One Bit of Advice
10. The Wicked Queens
11. The Prince Who Was Changed into a Ram
12. The King and the Parrot

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। उसके बाद **1976** में भारत से नाइजीरिया पहुँच कर यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस कर के एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया। उसके बाद इथियोपिया की एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो की नेशनल यूनिवर्सिटी में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला।

तत्पश्चात **1995** में यू ऐस ए से फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स कर के **4** साल एक ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन गुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में सेवा निवृत्ति के पश्चात अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना पारम्भ किया। सन **2022** तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से ये लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचायी जा सकेंगी।

विंडसर कैनेडा
2022